राजस्थान-भारती प्रकाशन नं०

विनयचन्द्र-कृति-कुसुमांजलि

सम्पादक
भँवरलाल नाहटा

प्रकाशक
सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर।

प्रथमावृत्ति १०००] वि० सं० २०१८ [मूल्य ४)

प्रकाशक—
सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर।

मुद्रक—
सुराना प्रिन्टिङ्ग वर्क्स
४०२, अपर चितपुर रोड,
कलकत्ता-७

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषत: राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख है—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानत: पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते है। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर सम्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी ।

३. आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

१. **कळायण**, ऋतु काव्य । ले० श्री नानूराम संस्कर्ता ।

२. **आभै पटकी**, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।

३. **वरस गांठ**, मौलिक कहानी संग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

४. 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सभव नही हो सका है । इसका भाग ५ अंक ३-४ **'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक'** बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अंक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है । अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचंद नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि की प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान-भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैंकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियाँ, और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१०. बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं।

१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० बासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमश: राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूंडलोद थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवनकाल में, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त करना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५०००) रु० इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तको का प्रकाशन किया जा रहा है।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पंवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचंद नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचंद नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबंध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचंद कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थानी व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५. भड्डली—	श्री अगरचंद नहाटा और म: विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अगरचंद नाहटा
२७. राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथों का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली–राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रंथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचंद नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथो का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन सभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया, जो सौभाग्य से शिक्षा मत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत: हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रंथो का संपादन सम्भव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
संवत् २०१७
दिसम्बर ३, १९६०

कविवर विनयचन्द्र और उनका साहित्य

संसार में दो तरह के प्राणी जन्म लेते हैं। कुछ जन्मजात प्रतिभासम्पन्न होते हैं और कुछ परिश्रमपूर्वक प्रतिभा का विकास करते हैं। साहित्यकारों में भी हम उभय प्रकार के व्यक्ति पाते हैं। कई कवियों की कविता में स्वाभाविक प्रवाह होता है, शब्दावली अपने आप उनकी कविता में रत्नों की भाँति आकर जटित हो जाती है जो पाठकों को मुग्ध कर लेती है। कई कवियों की रचनाएं शब्दों को कठिनता से बटोर कर संचय की हुई प्रतीत होती है। सुकवि विनयचन्द्र प्रथम श्रेणी के प्रतिभासम्पन्न कवि थे, जिनकी उपलब्ध रचनाओं का संग्रह प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित किया जा रहा है।

बत्तीस वर्ष पूर्व राजस्थान के महाकवि समयसुन्दर की रचनाओं का अनुसंधान करते हुए बीकानेर के श्री महावीर जैन मण्डल में सं० १८०४ का लिखा हुआ एक गुटका प्राप्त हुआ जिसमें समयसुन्दरजी की अनेक फुटकर रचनाओं के साथ-साथ उनकी परम्परा के कुछ कवियों की भी रचनाएँ मिलीं। सुकवि विनयचन्द्र महो० समयसुन्दरजी की परम्परा में ही थे और उस गुटके के लिखनेवाले भी उसी परम्परा के थे अतः विनयचन्द्र की भी ४ रचनाएँ इस प्रति में प्राप्त हुईं जिनमें से नेमिराजुल बारहमासा और राजिमतीरहनेमि सज्झाय नामक उत्कृष्ट रचनाओं ने हमें इस कवि के प्रति विशेष आकृष्ट किया

उनकी राजिमती रहनेमि सज्झाय को सन् १९२९ ता० १३ जून में आगरा से प्रकाशित होनेवाले श्वेताम्बर जैन वर्ष ४ अंक २५ में प्रकाशित किया गया उसके बाद खरतर गच्छ के बृहद् ज्ञान-भण्डार का अवलोकन करते हुए महिमाभक्ति भण्डार के बं० नं० ३७ में विनयचन्द्रजी की चौबीसी, बीसी, सज्झायादि की ३१ पत्रों की संग्रहप्रति प्राप्त हुई और जैन गुर्जर कविओ दूसरा भाग सन् १९३१ में प्रकाशित हुआ उसमें आपके रचित उत्तम-कुमार चरित्ररास, ध्यानामृतरास, मयणरेहा रास, ११ अंग सज्झाय, शत्रुंजय तीर्थयात्रा स्तवन का उल्लेख प्रकाशित हुआ था। हमने आपको प्राप्त समस्त रचनाओं की सूची देते हुए कविवर विनयचन्द्र नामक लेख प्रकाशित किया जिसमें नेमिराजुल बारहमासा भी दिया था। कवि की रचनाओं की संग्रह प्रति से तभी हमने प्रेस कापी तैयार कर रख दी थी जिसे प्रकाशित करने का सुयोग अब प्राप्त हुआ है।

गुरु परम्परा—

खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा में मुगल सम्राट अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध और प्रभावक आचार्य हुए हैं। उनके प्रथम शिष्य सकलचन्द्र गणि के शिष्य अष्टलक्षी कर्त्ता महोपाध्याय समयसुन्दरजी की विद्वद् परम्परा में कविवर विनयचन्द्र हुए हैं। कविवर स्वयं उत्तमकुमार चरित्र-चौपई में अपनी गुरु परम्परा का परिचय देते हुए लिखते हैं कि महोपाध्याय समयसुन्दरजी भारी प्रकाण्ड विद्वान थे जैसे—

ज्ञानपयोधि प्रबोधवा रे, अभिनव ससिहर प्राय ; सु०
कुसुदचन्द्र उपमा वहै रे, समयसुन्दर कविराय ; ८ सु०
तत्पर शास्त्र समर्थिवा रे, सार अनेक विचार ; सु०
वलि कलिंदिका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार ; ६ सु०

इनके शिष्य विद्यानिधि वाचक मेघविजय हुए। जिनके शिष्य हर्षकुशल भी अच्छे विद्वान थे जिन्होंने विहरमान बीसी का रचना करने के अतिरिक्त महोपाध्याय समयसुन्दरजो को ग्रन्थरचना में भी सहाय्य किया था। इनके शिष्य उ० हर्षनिधान हुए जिनकी चरणपादुकाएं सं० १७६७ मिति आषाढ़ सुदि ८ के दिन शिष्य वा० हर्षसागर द्वारा प्रतिष्ठित बीकानेर रेल दादाजी में विराजमान है। हर्षनिधानजी के लिए कविवर ने लिखा है कि ये अध्यात्म-योगी थे, यतः—

'परम अध्यातम धारवा रे जो योगेन्द्र समान।'

इनके तीन शिष्य थे, प्रथम वा० हर्षसागर द्वारा सं० १७२६ का० कृ० ६ को लिखित पुण्यसार चतुष्पदी (सेठिया लाइब्रेरी, बीकानेर) प्राप्त है। इनकी चरणपादुकाएँ भी सं० १७८४ वै० सु० ८ सोम के दिन प्रतिष्ठित बीकानेर के रेल दादाजी में है। इनके नयणसी व प्रतापसी नामक दो शिष्य थे। हर्षनिधानजी के द्वितीय शिष्य ज्ञानतिलक व तीसरे पुण्यतिलक थे ये तीनों साहित्यादि ग्रंथों के विद्वान थे। ज्ञानतिलक रचित ३-४ स्तोत्र व फुटकर संग्रह का गुटका विनयसागरजी के संग्रह में है। कविवर विनयचन्द्र इन्हीं ज्ञानतिलकजी के शिष्य थे। सं० १७६६ मिती

वैशाख सुदी १४ को बीकानेर में साध्वी हर्षमाला के लिए प्रतिलिपि की हुई एकादशांग स्वाध्याय की प्रशस्ति इसी ग्रन्थ के पृ० ६८ में प्रकाशित है।

हर्षनिधानजी के तृतीय शिष्य पुण्यतिलक थे जिनके शिष्य महोपाध्याय पुण्यचन्द्र हुए। इनके शिष्य पुण्यविलासजी ने अपने शिष्य पुण्यशील के आग्रह से सं० १७८० में मानतुंग मानवती रास (ढाल ५० गाथा १४४२) लूणकरणसर में निर्माण किया जिसकी दो प्रतियां लालभवन, जयपुर में है। पुण्यविलासजी के दूसरे शिष्य मानचन्द्र थे। नन्दीपत्रानुसार इनकी दीक्षा सं० १७७४ को पत्तन में हुई थी इसमें पं० माना पं० पुण्यशील लिखा है अतः पुण्यशील और माना एक ही व्यक्ति प्रतीत होते हैं। सं० १८०४ वाला उपर्युक्त गुटका इन्हीं मानचन्द्र द्वारा लिखा हुआ है जिसमें कविवर समयसुन्दरजी की कृतियाँ और विनयचन्द्रजी की चार कृतियाँ लिखी हुई है। प्रशस्ति इस प्रकार है :—'सम्वत् १८०४ वर्षे मिति माह वदि १ तिथौ जंगम युगप्रधान पूज्य भट्टारक श्रीमच्छ्री जिनचन्द्रसूरीश्वराणां शिष्य मुख्य पंडितोत्तम प्रवर सकलचन्द्रजी गणि शिष्य महोपाध्याय श्री ५। श्री समयसुन्दरजी गणि। शिष्य मेघविजयजी गणि। वाचकोत्तम वर हर्षकुशलजी गणि। पाठकोत्तम हर्षनिधानजी शिष्य दक्ष पुण्यतिलकजी गणि। महोपाध्याय श्री

१—देखो बीकानेर जैन लेख सग्रह लेखांक २०८०।
२—देखो बीकानेर जैन लेख संग्रह लेखांक २०५३।

५ श्री पुण्यचन्द्रजी गणि तत्शिष्य पंडितोत्तमप्रवर श्री पुण्य विलासजी गणि। तदंतेवासी पंडित मानचन्द्र लिखितं ।। श्री मरोट मध्ये ।। सुश्रावक पुण्यप्रभावक मुंहता दुलीचन्दजी तत्पुत्र जैतसीजी तत्पुत्र सुखानन्द पठन हेतवे। आचंद्रार्कों यावत् चिरंनन्दतु।

जन्म—

कविवर का जन्म कब और किस प्रान्त में हुआ यह जानने के लिए अभी तक कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है पर गुजरात में रह कर हिन्दी रचना व राजस्थानी शब्द-प्रयोग देखते हुए प्रतीत होता है कि इनका जन्म राजस्थान में ही हुआ होगा। आपने अपनी रचनाओं में जिन राजस्थानी लोक गीतों की देसियां प्रयुक्त की हैं, यह भी हमारी धारणा को पुष्ट करने वाली हैं। आपके हृदय के उद्‌गार, भक्ति आदि देखते यह निश्चित है कि आपने जैन कुल में जन्म लिया था। आपकी प्रथम रचना उत्तमकुमार चरित्र चौपाई सं० १७५२ में पाटण में हुई है उस समय आपका ज्ञान और योग्यता देखते कम से कम २५ वर्ष की अवस्था होनी चाहिए तो अनुमान किया जा सकता है कि आपका जन्म लगभग १७२५ से १७३० के बीच में हुआ होगा।

दीक्षा—

दीक्षाकाल जानने के लिए सब से सुगम साधन श्रीपूज्यों के दफ्तर और नंदी अनुक्रम सूची है। उसके अभाव में हमें

अनुमान के आधार पर ही चलना होगा। अतः आपने लगभग १५ वर्ष की आयु में दीक्षा ली हो तो सं० १७४०-४५ के बीच में दीक्षाकाल होना चाहिए।

विद्याध्ययन—

दीक्षा लेने के अनन्तर आपने विद्याध्ययन प्रारम्भ किया। आपकी गुरु परम्परा में साहित्य, जैनागम और भाषाशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान होते आये हैं। त्याग वैराग्यपूर्ण श्रमण संस्कृति का मुख्य आधार आचारशास्त्र और अध्यात्म था। आपने अपने गीतार्थ गुरुओं की निश्रा में रह कर पूर्ण मनोयोग पूर्वक विद्याध्ययन किया जो कि आपकी कृतियों से भली भाँति प्रमाणित है। इनकी भाषा कृतियों में संस्कृत शब्दों का प्राधान्य है इससे विदित होता है कि संस्कृत भाषा एवं काव्य ग्रन्थादि का आपने सुचारु रूप से अध्ययन किया था।

विहार और रचनाएँ-

आपका विहार कहाँ-कहाँ हुआ यह जानने के लिए हमारे पास आपकी कृतियों के सिवा कोई साधन नहीं है। आपकी संवतोल्लेख वाली प्रथम बड़ी रचना उत्तमकुमार चरित्र चौपई है जो सं० १७५२ मिती फागुन सुदि ५ गुरुवार के दिन पाटण में विरचित है। इससे ज्ञात होता है कि आप अपने गुरुजनों के साथ राजस्थान से तत्कालीन आचार्य श्री जिनचंद्रसूरिजी के आदेश से गुजरात पधार गये थे। इन श्री जिनचंद्रसूरि जी की

गहुँली इसी ग्रन्थ के पृ० ८४ में प्रकाशित है जिसमें आपने आचार्य श्री जिनधर्मसूरि के पट्ट पर श्रीजिनचंद्रसूरि के पाट विराजने का उल्लेख किया है। यह पट्ट महोत्सव बीकानेर के लूणकरणसर में हुआ था अतः इसके बाद आचार्य श्री ने आपके गुरु महाराज को गुजरात में विचरने का आदेश दिया प्रतीत होता है। इस लघु रचना में अपने को कवि ने मुनि विनयचंद्र लिखा है इसके बाद आपने लघु कृतियां अवश्य ही बनाई होगी क्योंकि उत्तमकुमार चरित्र में आपने अपने को कई जगह 'कवि' विशेषण से सम्बोधित किया है। पाटण में रहते आपने बाड़ी पार्श्व स्त० व नारंगपुर पार्श्व स्तवनादि की रचना की। इसके बाद सं० १७५५ का चातुर्मास आपने राजनगर किया और विजयादशमी के दिन विहरमान वीसी रचकर पूर्ण की। दूसरा चातुर्मास भी आपने राजनगर में ही बिताया था स्थूलिभद्र बारहमासा गा० १३ की रचना राजनगर में हुई। सं० १७५५ भा० व० १० को राजनगर (अहमदाबाद) में ११ अंग सज्झायों की रचना एवं विजयादशमी के दिन चौबीसी की रचना पूर्ण की। इस चातुर्मास के पश्चात् आपने आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी एवं अपने दादा गुरु श्री हर्षनिधान पाठक व गुरु ज्ञानतिलकादि गुरुजनों के साथ सपरिवार मिती पोषवदी १० के दिन शत्रुंजय महातीर्थ की यात्रा की जिसका उल्लेख आपने इसी ग्रन्थ के पृ० ५० में प्रकाशित शत्रुंजय यात्रा स्त० गा० २१ में किया है एक और गा० १३ का स्तवन पृ० ५५ में प्रकाशित है।

इसके अतिरिक्त संखेश्वर पार्श्वनाथ स्त० गा० ११ का पृ० ६४ में छपा है पर आपने यह यात्रा कब की इसका कोई उल्लेख नहीं। इसके पश्चात् आपने कब कहाँ चातुर्मास किये इसका कोई पता नहीं चलता अब तक जो रचनाएँ मिली हैं वे सं० १७५२ से १७५५ तक की हैं। इसके पश्चात् की कोई संवतोल्लेख वाली रचना नहीं मिलने से ठीक ठीक पता नहीं लगता कि आप कब तक विद्यमान रहे पर दीक्षानंदि पत्र में आपके शिष्य विनय-मंदिर की दीक्षा सं० १७६६ ज्येष्ठ वदि ५ को बीकानेर में हुई थी लिखा है उस समय तक आप अवश्य ही विद्यमान थे। इन वर्षों में आपने ग्रंथ रचना अवश्य ही की होगी। पर किसी ज्ञान भंडार या उनकी परम्परा के किसी विद्वान के पास रही कहीं मिल जाय तो आपकी रचनाओं व जीवनी पर विशेष प्रकाश पड़ सकता है। तीन वर्ष जैसे अल्पकाल की रचनाओं से विदित होता है कि आप उच्च कोटि के कवि थे। एवं और भी बहुतसी रचनाओं का निर्माण किया होगा। इस ग्रन्थ में प्रकाशित प्रधान रचनाएँ इस प्रकार है :—

१—उत्तमकुमार चरित्र चौपई ढाल ४२ गाथा ८४८ सं० १७५२
फा० सु० ५ गु० पाटण

२—विहरमान बीसी स्तवन स्त० २० कलश १ सं० १७५४
विजयादशमी राजनगर

३—११ अंग सज्झाय स० १२ सं० १७५५
भा० बदी १० राजनगर

४—चतुर्विंशतिका स्त० २४ कलश १ सं० १७५५ विजयादशमी, राजनगर

५—शत्रुंजय यात्रा स्त० गाथा २१ सं० १७५५ पौष बदी १० यात्रा

६—फुटकर स्तवन, सज्झाय, बारहमासा, गीत आदि २५ कृतियाँ

इनके अतिरिक्त जैन गुर्जर कविओ भाग २ पृष्ठ ५२३ में :—

१—ध्यानामृत रास। २—मयणरेहा चौपाई।

एवं जैन गूर्जर कविओ भाग ३ पृ० १३७४ में—

३—रोहा कथा चौपई का उल्लेख किया है। श्री देसाई ने प्रथम दो रचनाओंका न तो रचनाकाल व आदि अन्त दिया है और न प्राप्तिस्थान ही दिया है। विनयचन्द्र नाम के कई कवि हो गए हैं अतः वे रचना इन्हीं कविवर की हैं या और किसी विनयचन्द्र की, नहीं कहा जा सकता। फिर भी मयणरेहा चौपाई व रोहा कथा चौ० की प्रतियाँ हमारे (श्री अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर) संग्रह में है उनमें से मयणरेहा चौपाई का रचना काल सं० १८७० एवं रचनास्थान जयपुर है उसके रचयिता विनयचन्द्र स्थानकवासी अनोपचन्द के शिष्य हैं। रोहा कथा चौपाई में विनयचन्द्र के गुरु का नाम रचनाकाल नहीं पाया जाता, पर यह कृति भी स्थानकवासी विनयचन्द्र की ही लगती हैं। अतः तीन में से दो तो हमारे कविवर विनयचन्द्र से सौ, सवासौ वर्ष पश्चात् होनेवाले स्थानकवासी विनयचन्द्र की रचनाएँ सिद्ध हो जाती है केवल ध्यानामृतरास ही अनिश्चित अवस्था में रहता है सम्भव है वह हमारे कवि विनयचन्द्र

की रचना हो पर उसकी प्रति कहाँ पर है इसका निर्देश नहीं होने से हम उसे प्राप्त नहीं कर सके। उत्तमकुमार रास की भी प्रतियां अधिक नहीं मिलती। दो-तीन प्रतियों की ही सूचना मिली जिनमें से १ तिलकविजय भंडार महुआ २ चुन्नीजी भंडार, काशी का उल्लेख जैन गूर्जर कवियों में किया गया था। चुन्नी जी भंडार की कुछ प्रतियाँ आगरा व कुछ प्रतियाँ रामघाट जैन मन्दिर के भंडार बनारस में बँट गई। हमने बनारस हीराचन्द्र सूरिजी को पत्र लिखा पर वहाँ की सूची में महाराजकुमार चौ० का नाम होने से वे पता नहीं लगा सके अन्त में हमें स्वयं वहाँ जाना पड़ा और कठिनता से पता लगाकर प्रति प्राप्त की। प्रति का उपयोग करने का सुयोग श्री हीराचन्द्रसूरिजी महाराज की कृपा से ही प्राप्त हो सका इसलिए उनके हम विशेष आभारी हैं। इसकी एक प्रति देहला के उपाश्रय, अहमदाबाद स्थित रत्नविजय भंडार में होने का उल्लेख जैन गूजर कविओ के दूसरे भाग में हैं जिसे प्राप्त करने के लिए पत्र व्यवहार किया पर सफलता नहीं मिली। यह चौपाई एक ही प्रति के आधार से सम्पादन की गई अतः कई जगह पाठ त्रुटित रह गया है।

चौवीसी, बीसी, ११ अंग सज्झाय आदि रचनाओं की एक प्रति पत्र ३१ की महिमाभक्ति ज्ञानभंडार में मिली थी तदनन्तर आचार्य शाखा भण्डार से २ संग्रह प्रतियाँ व दो फुटकर पत्र प्राप्त हुए जिनमें से प्रथम प्रति २७ पत्रों की कवि के गुरु श्री ज्ञानतिलक द्वारा लिखित हैं इसमें वीसी, चौबीसी, ११ अंग

सभ्झाय व अन्य फुटकर रचनाएँ हैं जिसकी प्रशस्ति इसी पुस्तक के पृ० ६८ में दी गई है। दूसरी प्रति ७ पत्रों की है, जिसमें ११ अंग सभ्झाय, दुर्गति-निवारण सभ्झाय व पार्श्वनाथ स्तवन है जिसकी लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है :—

"संवत् १७६७ रा फागुन सुदि १० शनिवारे श्री जैसलमेर दुर्गे लिखितमस्ति श्राविका मूली बाई पठनार्थं ॥श्रीरस्तु॥"

एक फुटकर पत्र में नयविमल रचित शत्रुंजय के २ स्तवनों के बाद विनयचन्द्र रचित संभवनाथ स्तवन है। यह पत्र पुण्यचंद्र ने सुश्राविका पुण्यप्रभाविका तत्वार्थ गुण भाविका झम्मा वाचनार्थ लिखा है। अन्य फुटकर पत्र में कुगुरु स्वाध्याय गा० ३१ की है वह कवि के स्वयं लिखित पत्र विदित होता है क्योंकि इसमें ऊपर व किनारे में पाठवृद्धि व पाठान्तर भी लिखे हुए हैं, सम्भवतः यह रचना का खरड़ा या प्रथमादर्श होगा। और एक फुटकर पत्र में गौड़ीपर्श्व स्तवन और सूरप्रभ स्तवन मुनि हरिचद्र के श्राविका आसां पठनार्थ लिखित प्राप्त है। कुगुरु सभ्झाय हमारा अनुमान है कि यदि कवि के स्वयं लिखित है तो उनके हस्ताक्षर बहुत सुन्दर थे और उसकी प्रतिकृति इस ग्रंथ भी दी जा रही है।

शिष्य परिवार—

कवि विनयचद्र के कितने शिष्य थे और उनकी परम्परा कब तक चली ? साधनाभाव में यह बतलाना असम्भव है पर ज्ञानसागर कृत चौबीसी पत्र ७ की प्रशस्ति से मालूम होता है कि आपके एक शिष्य विनयमन्दिर और उनके शिष्य खुस्यालचंद्र

थे। नंदि अनुक्रम पत्र के अनुसार इन विनयमंदिर का पूर्वनाम अमीचंद था और सं० १७६६ मिती ज्येष्ठ बदि ५ को बीकानेर में दीक्षा हुई थी। इस प्रशस्ति में से विदित होता है कि कविवर के गुरु वाचनाचार्य एवं कवि स्वयं सं० १७७२ से पूर्व गणि पद विभूषित हो चुके थे। यहाँ उपर्युक्त प्रशस्ति की नकल दी जा रही है :—

"संवत् १७७२ वर्षे मिती ज्येष्ठ सुदी १ रविवारे श्री राजनगरे वा० ज्ञानतिलक गणि शिष्य विनयचन्द्रगणि शिष्य विनयमंदिर शिष्य चिरं खुस्यालचंद लिखितं ॥ साध्वी कीर्तिमाला शिष्यणी हर्षमाला पठनार्थं ॥ श्रीरस्तुः ॥ शुभं भवतुः ॥"

भक्ति व काव्य प्रतिभा–

कविवर का हृदय जिनेश्वर भगवान के भक्ति रस से ओत प्रोत था। चौबीसी, बीसी एवं स्तवनादि में आपने बड़े ही मार्मिक उद्‌गार प्रगट किये हैं। आपने अपनी कृतियों में कहीं सरल भक्ति, कहीं उत्प्रेक्षाएँ और वक्रोक्तिपूर्ण उपालंभ देते हुए विभिन्न रसों की भाव धारा प्रवाहित की है। भाषा प्रौढ और सटंक शब्दयोजना, फबती हुई उपमाएँ पाठकों के मन को सहज ही आकृष्ट करने में समर्थ है। यहाँ कुछ थोड़े से अवतरण पाठकों के रसास्वादनार्थ उद्धृत किये जाते हैं।

"नयणे नयण मिलायने रे, जिन मुख रहीयइ जोय
तउ ही तृप्ति नहीं पामियइ रे, मनसा बिवणी होय"

[ऋषभदेव स्त०]

जिम गोपी मन गोविन्द रे लाल, गौरी मन शंकर वसइ
वलि जेम कुमुदिनी चंद रे लाल [शांतिनाथ स्त०]

नेह अकृत्रिम मंइ कियउ रे, कदे न विहड़इ तेह
दिन दिन अधिकउ उलटइ रे, जिम आषाढ़ी मेह
[कुंथुनाथ स्त०]

श्री मुनिसुव्रत स्वामी के स्तवन में प्रभु को उपालम्भ देते हुए कवि कहता है कि—

हुं रागी पिण तुं अछइ जी, नीरागी निरधार।
मावै नहीं इक म्यान मइं जी, तीखी दोइ तरवार॥
जाणपणउ मइं जाणियउ जी, जिनवर ताहरउ आज।
तक ऊपर आव्यउ हतोजी, तैं नवि राखी लाज॥
जे लोभी तुझ सरिखाजी, वंछित नापइ रे अन्त।
मुझ सरिखा जे लालचीजी, लीधा विण न रहंत॥

× × × ×

नेमजी हां मुगति रमणि मोह्या तुम्हे हो राजि,
पिण तिण मां नहिं स्वाद।
नेमजी हां तेह अनंते भोगवी हो राजि, छोड़उ छोकरवाद।
[नेमिनाथ गीत पृ० ६०]

कविवर ने उपमाओं एवं लोकोक्तियों को अपनी कृतियों में खचित करके उन्हें हृदयग्राही बना दिया है। यहाँ थोड़े से अवतरण प्रस्तुत किये जाते हैं :—

"साकर मां कांकर निकसइ ते साकर नौ नहिं दोष"
[विमलनाथ स्तवन]

वाल्हा लागौ हो नहिं उपदेश, छांट घड़इ जिम चीगटइ
वाल्हा तेतउ, हो न्याय अजेस, कर्म अरि कहो किम कटइ
[धर्मनाथ स्त०]

हां रे लाल निज फल तरुवर नवि भखइ,
सरवर न पियइ जल जेम रे लाल
पर उपगारइ थाय ते, तुं पिण जिनजी हुइ तेम रे लाल
[शांतिनाथ स्त०]

"कोइल आंबा गुण लहै रे, पिण स्युं जाणै काग
मूरख पशु जाणै नहीं रे, सेलड़ी कड़व मिठास"
[कुंथुनाथ स्त०]

"जे खल नइं गुल सरिखा जाणइ, ते स्युं नवलो नेह पिछाणइ"
(मल्लिनाथ स्त०)

"देव अवर मीठा मुखे, हृदय कुटिल असमान
जाणि पयोमुख संग्रह्या, ते विषकुम्भ समान"
(नमिनाथ स्त०)

'तरू भावइ तउ छइ इकताई, पिण अंब नींब अधिकाई रे
पंखी जातइ एकज हूआ, पिण काग कोइल ते जूआ रे'
(सूरप्रभ स्तवन)

महिर बिना साहिब किसउ हो, लहिर बिना स्यउ वाय रे सनेही
सहिर बिना स्यउ राजवी हो, इम कलि मांहि कहाव रे सनेही
(संखेश्वर पार्श्व स्त० पृ० ६५)

'एक हाथइ रे ताली नवि पड़इ रे' (स्वाभाविक पार्श्व स्त० पृ०७४)

'जिम सौ तिम पचास' 'सौ बाते इक बात' (वाड़ी पार्श्व स्तवन पृ० ७१)

जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्याय (पृ० १००) में वायस दुग्ध प्रक्षालन, मुद्गशैलिक घनवर्षण, ऊषरभूमि बीजवपन बधिर प्रमाण कथन, श्वान-पुच्छ, जिम कांजीयइ दूध, नदी-किनोरवृक्ष आदि उपमाएँ दी गई हैं। स्वयं जिनेश्वर भगवान की अविद्यमानता में मुमुक्षुओं के लिए जिन प्रतिमा एक पुष्टालंबन है। कविवर जिन प्रतिमा को जिन सदृश उपकारी मानते थे और उसे आमन्य करनेवालों का प्रखरता के साथ निराकरण करने के हेतु इस ३६ गाथा की स्वाध्याय का निर्माण हुआ है। ध्यान के लिए जिन प्रतिमा की उपयोगिता बताते हुए कविवर निम्नोक्त भाव व्यक्त करते हैं :—

'जिन प्रतिमा निश्चयपणइ, सरस सुधारस रेलि
चिंतामणि सुरतरु समी, अथवा मोहनवेलि ६
नेह बिना सी प्रीतड़ी; कंठ बिना स्यउ गान
लूण बिना सो रसवती, प्रतिमा बिण स्यउ ध्यांन ७
तीर्थंकर पिण को नहीं, नहिं को अतिशयधार
जिन प्रतिमा नउ इण अरइ, एक परम आधार ६'

कविवर विनयचन्द्र जैन शास्त्रों के प्रौढ विद्वान थे। उन्होंने ग्यारह अंग सज्झायों में प्रत्येक अंग—आगम का रहस्य बड़ी ही ओजस्वी वाणी में श्रद्धा-भक्तिपूर्वक व्यक्त किया है। इन सज्झायों को गाने से जिनवाणीके प्रति आस्था प्रगाढ़ हो जाती

है और वाचक आपकी श्रुत श्रद्धा के प्रति पद-पद पर श्रद्धावनत हो जाता है। ग्यारह अंगों का परिचय प्राप्त करने के लिए तो ये सज्झायें बड़ी ही उपयोगी हैं। अन्तिम सझाय में कवि लिखता है कि—

'पसरी अंग इग्यार नी सहेली हे, मुझ मन मंडप वेलि कि।
साँचू नेह रसइ करी सहेली हे, अनुभव रस नी रेलि कि ।।२।।
हेजधरो जे सभिलइ सहेली हे, कुण बूढा कुण बाल कि।
तउ ते फल लहै फूटरा सहेली हे, स्वादइं अतिहि रसाल कि ।।३।।

कविवर ने प्रकृति-सौन्दर्य को भी जिस सरसता से वर्णन किया है वह अपने ढंग का अनूठा है—'श्रीरहनेमि राजीमति स्वाध्याय तथा श्री स्थूलिभद्र बारहमासा' में छः ऋतुओं का वर्णन प्रकृति की सौन्दर्य सुषमा तथा जन-मन में उठता हुआ उल्लास नव रसों के प्रवाह का कवि ने जिस सजीवता से वर्णन किया है उसका रसास्वादन कराने के लिए कुछ पद्य यहाँ उद्धृत करते हैं :—

रहेनमि राजिमती स्वाध्याय

वर्षा—

सजि बुंदसारी, हर्षकारी भूमि नारी हेत।
झरलाय निर्झर झरत झरझर सजल जलद असेत ।।
घन घटा गर्जित छटा तर्जित भये जर्जित गेह।
टब टबकि टबकत झबकि झबकत बिचिबिचि बीजकि रेह ।। २।।
'दृग श्याम बादर देखि दादुर रटत रस भरि रइन।
बन-मोर बोलइ पिच्छ डोलइ द्विरद खोलइ पुनि नइन ।। ३ ।।

मदन के माते रंग राते रसिक लोक अपार।
बइठि कइ गोखई मनइ' जोखइ' गावत मेघ-मल्हार ॥ ५ ॥
पंच रंग चोपें अधिक ओपइ' इन्द्र-धनुष सधीर।
बक श्रेणि सोहइ चित्त मोहइ सर सरित के तीर ॥
तहाँ करत क्रीड़ा मुखइ बीड़ा चाबती त्रिय जात।
केसरी सारी मूल भारी पहिरि कै हर्ष न मात ॥ ६ ॥

श्री स्थूलिभद्र बारहमास

शृंगार आषाढ़

आषाढइ आशा फली, कोशा करइ सिणगारो जी।
आवउ थूलिभद्र वालहा, प्रियुड़ा करू' मनोहारो जी ॥
मनोहार सार शृंगार-रसमां, अनुभवी थया तरवरा।
वेलड़ी वनिता ल्यइ आलिंगन, भूमि भामिनी जलधरा ॥

हास्य श्रावण

श्रावण हास्य रसइं करी, विलसउ प्रतिम प्रेमइ जी।
योगी! भोगीनइ घरे, आवण लागा केमइ जी ॥
तउ केम आवै मन सुहावै, वसी प्रमदा प्रीतडी।
एम हासी चित विमासी, जोअउ जगति किसी जडी ॥

करूणा वर्षा

झरहरइ पावस मेघ वरसइ, नयण तिम मुख आँसुआँ।
तिम मलिन रूपी बाह्य दीसउ, तिम मलिन अंतर हुआ ॥२॥
भादउ कादउ मचि रह्यउ, कलिण कलया बहु लोको जी।
देखी करूणा ऊपजै, चन्द्रकान्ता जिम कोको जी ॥

कोक परि विहू बोक करतो, विरह कलणइ हुँ कली ।
काढियइ तिहाँ थी बांह झाली, करूणा रसनइ अटकली।।

रौद्र

अकुलाय धरणि तरुणि तरणी, किरण थी, शोषत धरै ।
उपपति परइ घन कन्त अलगु, करी घन वेदन करं ।।
तिम तुम्हें पणि विरह तापइ, तापवउ छउ अतिघणुं ।
चांद्रणी शीतल झाल पावक, परइं कहि केतउ भणुं ।।

वीररस-कार्तिक

काती कौतुक सांभरइ, वीर करइ संग्रामो जी ।
विकट कटक चाला घणुं तिम कामी निज धामोजी।।
निज धाम कामी कामिनी वे, लड़इ वेधक वयण सुं ।
रणतूर नेउर खड्ग वेणी, धनुष-रूपी नयण सुं।।

भयानक मगसिर

भयानक रसइ भेदियउं, मगिसिर मास सनूरो जी ।
मांग सिरहि गोरी धरइ, वर अरुणि मां सिन्दूरो जी ।।
सिन्दूर पूरइ हर्ष जोरइ, मदन झाल अनल जिसी ।
तिहां पड़इ कामी नर पतगा, धरी रंगा धसमसी ।।

अद्भुत हेमन्त व माघ

माघ निदाघ परइ दहै, ए अद्भुत रस देखुं जी ।
शीतल पणि जड़ता घणुँ, प्रीतम परतिख पेखुं जी।।

फाल्गुन

सहज भाव सुगन्ध तैलइं, पिचरकी सम जल रसइं ।
गुण राग रंग गुलाल उड़इ, करुण ससबोही वसइ ।।

परभाग रंग मृदंग गूंजइं, सत्व ताल विशाल ए।
समकित तंत्री तंत झणकइ, सुमति सुमनस माल ए॥

चैत (बसन्त)

चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंबतणी वनरायोजी।
थुड़ शाखा अंकुरित थइ, सोह बसन्तइ पायो जी॥
पाई वसंतइ सोह जिणपरि, प्रियागमनइं पद्मिनी।
सिणगार बिन पिण मुदित होवइ, प्रेम पुलकित अंगिनी॥

आगे चल कर कवि ने वैशाख और ज्येष्ठ महीना का भी सुन्दर वर्णन किया है। इसी प्रकार इस ग्रन्थ के पृ० ६१ में प्रकाशित नेमि राजिमती बारहमास में भी प्रकृति और बारहमास का सुन्दर वर्णन किया है पाठकों को स्वयं पढ़कर रचनाओं का रसास्वादन करना चाहिए।

स्नेह निवारणे स्थूलिभद्र सझाय में कहा है कि :—

'नेह थी नरक निवास, नेह प्रबल छइ पास
नेह देह विनाश, नेह प्रबल दुख रास
वाल्हानइ वउलावतां रे, पीड़इ प्रेम नी झाल
हीयड़ौ फाटइ अति घणु रे, नांखइ विरह उछाल
वलतां भुँई भारणी हुवैं रे हाँ, अंग तपइ अंगार
आँखड़ियँ आंसू झरइ रे हां जिमपावस जलधार
मत किणही सु लागज्यो रे, पापी एह सनेह
धुखइ न धुंओं नीसरइ रे हां, बलइ सुरंगी देह'

कविवर विनयचन्द्र की समस्त रचनाओं में विस्तृत रचना उत्तमकुमार चरित्र है जिसमें सदाचार को पोषण करने वाला उत्तमकुमार का उद्दात चरित्र है, जिसका सार यहाँ दिया जा रहा है।

उत्तमकुमार रास सार

प्रारम्भ में एक संस्कृत श्लोक द्वारा विनायक को नमस्कार किया गया है जो प्रति लेखक द्वारा लिखा हुआ है। रास के प्रारम्भ में १३ दोहों में ॐकार, सरस्वती और दादा श्री जिन-कुशलसूरिजी को नमस्कार कर सुपात्रदान के अधिकार में उत्तमकुमार चरित्र रचना प्रस्ताव रखते हुए कवि श्रोताओं से बातचीत और कुमति क्लेश त्याग करने का निर्देश कर चरित्र का प्रारम्भ करता है।

काशी देश स्थित वाराणसी नगरी का वर्णन करते हुए कवि लिखता है कि उस अलकापुरी के समकक्ष नगरी में ऊँची अट्टालिकाएँ, चारों ओर दुर्ग, चौरासी चौहटे और दण्ड-कलश युक्त जिनालय हैं जिन पर ध्वजाएँ फहराती हैं। इस नगरी के पुरुष देव और स्त्रियाँ अप्सरा तुल्य हैं। जल से लबालब भरे हुए सरोवरों में हंस आदि पक्षी कल्लोल करते है, फल फूलों से लदे हुए वृक्ष बारहों मास हरे भरे रहते हैं, टहूका करती हुई कोयल एवं अन्य पक्षी गण निर्भीक निवास करते हैं। इस नगरी का राजा मकरध्वज शूरवीर और दयालु था। राजा का वास्तविक गुण क्षमा ही है, यह बतलाने के लिए कवि ने निम्नोक्त दोहा उद्धृत किया है :—

"उदै अटक्कै भूप नहीं, पहिरयां नांही रूप।
खूँद खमै सो राजवी, निरख सहै सो रूप॥"

राजा की राणी लक्ष्मीवती पतिव्रता और चौसठ कलाओं में प्रवीण धर्मिष्ठा सुन्दरी थी। सांसारिक सुख उपभोग करते हुए रानी के गर्भ में शुभ स्वप्न सूचित पुत्र आकर अवतीर्ण हुआ। गर्भकाल पूर्ण होने पर रानी ने सुन्दर पुत्र को जन्म देकर इस दृष्टान्त को चरितार्थ कर दिया कि दीपक से दीपक प्रकट होता है। राजा ने बड़े उत्साह से पुत्र जन्मोत्सव किया घर घर में तोरण लगाये गए, दान दिया गया। दसोटन करने के बाद उत्तम लक्षण वाले पुत्र का नाम उत्तमकुमार रखा गया। उत्तमकुमार चन्द्रकला की भांति धाय माताओं द्वारा पालित पोषित होकर क्रमशः आठ वर्ष का हुआ। राजा ने उसे पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा। थोड़े दिनों में वह सारे छात्रों से आगे बढ़ कर समस्त कला कौशल में निष्णात हो गया।

कुमार बड़ा सदाचारी था, वह सत्यवादी, नीतिवान और दयालु था। वह चोरी, परदारागमन आदि सभी दुर्व्यसनों से विरत, धीर, वीर, गम्भीर दीन दुखियों का उपकारी होने के साथ-साथ अपने इष्ट-मित्रों के साथ खेल कूद में मस्त रहता था।

एक दिन रात में सोये हुए कुमार के मन में विचार आया कि मैं अब तरुण हो गया। इस अवस्था में हाथ पर हाथ धर घर में बैठे रहना कायर का काम है। कहा भी है कि—

गुण भमतां गुणवंत नै, बैठां अवगुण जोय
वनिता नै फिरिवौ बुरौ, जो सुकुलीणी होय।

अतः मुझे पिता द्वारा उपार्जित लक्ष्मी का उपभोग न कर भ्रमण के हेतु निकल पड़ना चाहिये। वह देशाटन की उमंग में स्वजनों की चिन्ता छोड़कर हाथ में तलवार लेकर अपने भाग्य परीक्षा के हेतु प्रवास में निकल पड़ा। वह कितने ही जंगल, पहाड़ और नदियों को पार करता हुआ कौतुकवश धूप और लू की गर्मी में सुख-दुख सहन करता हुआ आगे बढ़ता ही गया। उसे कहीं तो भयानक अटवी मिलती तो कहीं हरे भरे वृक्ष और लहराते हुए सुन्दर सरोवर जहाँ कमलों की सौरभ मस्तिष्क को ताजा बना देती। अनुक्रम से अनेक ग्राम नगरों को उल्लंघन करता हुआ उत्तमकुमार मेवाड़ देश की राजधानी चित्तौड़ जा पहुँचा। यहाँ का राजा महासेन प्रबल प्रतापी और समृद्धिशाली होने के साथ साथ धर्मात्मा भी था। सब प्रकार से सुखी होने पर भी राजा सन्तान सुख से वंछित था। दैव की गति विचित्र है, कवि कहता है कि—

"सुखिया देखि सकै नहीं, दोषी दैव अकज्ज
संपति द्यै तो सुत नहीं, इण परि करै निलज्ज
इक अवनीपति सुतविना, वलि बैरयां में वास
नदी किनारै रूंखड़ा, जद तद होइ विणास"

राजा ने सन्तानोत्पत्ति के लिए पर्याप्त उपाय किये पर वह असफल रहा। एक दिन वह वन में घूमने के लिए सपरिवार मन्त्री आदि को साथ लेकर निकला। राजा नीले घोड़े पर आरूढ़ था, उसने गुण लक्षण सम्पन्न घोड़े की बार-बार गति-

भंग होते देख कर मंत्री से पूछा—इस घोड़े की किशोर वय में यह दशा क्यों ? राजा के बार बार पूछने पर भी मंत्री आदि कोइ भी जब उसकी जिज्ञासा का समुचित उत्तर न दे सका तो राजा को कष्ट होते देख उत्तमकुमार ने आकर कहा—प्रभो ! मैं परदेशी हूं, पर अपनी मति के अनुसार बतलाता हूं कि इसने भैंस का दूध बहुत पिया है, वह वायुकारक होता है इसी से इसकी गति में चंचलता नहीं है। राजा ने कहा—वत्स ! तुम बड़े ज्ञानी हो, तुमने कैसे जाना ? वस्तुतः यह अश्व बाल्यकाल में मातृविहीन हो गया तब इसका ऊपरी दूध से ही पालन पोषण हुआ था। उत्तमकुमार के अश्वपरीक्षा-ज्ञान से प्रभावित होकर राजा ने कहा—बेटा ! इतने दिन मैं निःसन्तान था अब तुम भाग्यवश आ मिले तो यह सब राज पाट सम्भालो, लक्षणों से तुम राजकुमार ही लगते हो। अतः निःसंकोच राज्य भार ग्रहण करो। मैं ज्ञानी गुरु के पास दीक्षित होकर आत्म-साधन करूँगा। उत्तमकुमार ने कहा—अभी तो मैं प्रवास में हूँ, लौटते समय आपके चरणों में उपस्थित होऊँगा।

उत्तमकुमार चित्तौड़ से अकेला चल पड़ा और कुछ दिनों में भरुच्छ (भरौंच) जा पहुँचा। दर्शनीय स्थानों का अवलोकन करते हुए वह मुनिसुव्रत भगवान के मन्दिर में पहुँचा और पूजा स्तुति द्वारा अपना जन्म सफल किया। फिर सरोवर के तट पर जाकर बैठा तो पनिहारिन लोगों से सुना कि कुबेरदत्त व्यवहारी पांचसौ प्रवहण भर के आज ही समुद्र यात्रार्थ रवाने

हो रहा है। कौतुकी उत्तमकुमार भी सांयात्रिक की अनुमति लेकर प्रवहण पर आरूढ़ हो गया। शुभ मुहूर्त में प्रवहण चल पड़े, कुछ दिनों में पीने का पानी समाप्त हो जाने से जल-संग्रह करने के लिए शून्य द्वीप में जहाज रोके गए। सब लोग जब पानी की खोज में उतरे तो भ्रमरकेतु नामक राक्षस अपने साठ हजार साथियों के साथ आकर लोगों को पकड़ कर तंग करने लगा। साहसी उत्तमकुमार तुरन्त द्वीप में उतर आया और ललकार कर अकेला ही राक्षस सेना के साथ युद्ध करने लगा। उसने जिस वीरता के साथ युद्ध किया, भ्रमरकेतु कायरतापूर्वक भग गया और उसकी सेना तितिर-बितिर हो गई। राक्षस को जीतकर उसने समुद्र तट पर जाकर देखा तो सारे जहाज रवाना हो चुके थे। कुमार ने सोचा—'लोग कितने स्वार्थी और कृतघ्न होते हैं ? दूसरे ही क्षण मन में विचार आया कि विचारे भयाकुल होकर भग गए, इसमें उनका कोई दोष नहीं, मेरे पूर्व जन्म के पापों का उदय है। इसके बाद उसने एक वृक्ष पर ध्वजा बांध दी जिससे किसी यात्री-जहाज को दूर से उसकी उपस्थिति मालूम हो जाय। वह भगवान के भजन करता हुआ फलाहार से अपना निर्वाह करने लगा।

एक दिन द्वीप की अधिष्ठातृ देवी ने कुमार के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उससे बहुत ही अनुनय पूर्वक प्रेम याचना की। कुमार ने कहा—माता तुम देवी हो ! मैं परनारी सहोदर हूँ ! मेरे से तुम्हारा किसी भी प्रकार कार्य सिद्ध नहीं होगा। अतः

नरक परिणामी अनुचित अध्यवसायों को त्याग दो! देवी ने आज्ञा न मानने पर उसे तलवार द्वारा मार डालने की धमकी दी। परन्तु कुमार को अपने निश्चय पर अटल देखकर संतुष्ट चित्त से देवी ने कुमार के शील गुण की स्तवना करते हुए बारह कोटि रत्न वृष्टि की। इसके बाद समुद्र में जाते हुए जहाज देखकर कुमार ने जहाज रोकने के लिए पुकारा। लहकती हुई ध्वजा के संकेत से समुद्रदत्त जहाजों को किनारे लगाकर कुमार से मिला और सारा वृतान्त ज्ञातकर उसे अपने जहाज में बैठा लिया। कुछ दिन में जल समाप्त हो जाने से व्याकुल होकर सभी यात्रियों ने शास्त्रज्ञ निर्यामक से जल प्राप्ति का उपाय पूछा। उसने कहा—थोड़े समय में वेल उतरने पर स्फटिक रत्नमय पर्वत प्रगट होगा जिस पर सुस्वादु जल का कुंआ है। पर वहाँ भ्रमरकेतु नामक अति क्रूर और मांसभोजी राक्षस रहता है। समुद्र-देवता के समक्ष उसने प्रतिज्ञा कर रखी है कि प्रवहण पर आरूढ़ यात्री को वह नहीं मारेगा। इस प्रकार बातें चल रही थी कि इतने में पर्वत प्रगट हो गया। सामने कुँआ दीखने पर भी भय के वशीभूत होकर कोई नीचे नहीं उतरा। कुमार ने सबको साहस बन्धाकर जल लाने के लिए प्रेरित किया और सब की सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने पर ले लिया। लोगों ने रस्सी बाँध कर जल-पात्रों को कुँए में डाला पर कुँआ जल से भरा हुआ होने पर भी किसी को एक बून्द पानी नहीं मिला। जब राक्षस के भय से कोई कुँए में उतरकर जलोद्घाटन के लिए प्रस्तुत नहीं हुआ

तो लोकोपकार के हेतु कुमार स्वयं रज्जु के सहारे कुंए में प्रविष्ट हो गया। उसने देखा कि सोने की जाली से समूचा जल आच्छादित है तो तारों को इधर-उधर करके जल निकालना सुगम कर दिया। उसने लोगों को जल भरने के लिए कहा तो सब लोग कुमार के सद्गुणों की प्रशंसा करते हुए जल भरने लगे। कुमार अपने परोपकारी कृत्य के लिए आत्म-सन्तोष अनुभव करने लगा।

कुमार ने कुंए में कंचनमय सोपान-पंक्ति देखी, वह कौतुक-वश उसी मार्ग से आगे बढ़ा और एक भव्य प्रासाद के पास जा पहुँचा जिसके आंगन में रत्न जड़े हुए थे उसकी प्रथम भूमि स्वर्ण-मण्डित थी दूसरी भूमि में मणिमाणिक और तीसरी में मोती चमक रहे थे इसी प्रकार समृद्धिपूर्ण वह सतमंजिला मकान था। जब कुमार तीसरी भूमि में पहुंचा तो उसने एक वृद्धा को बैठे देखा। वृद्धा ने कुमार को देखते ही कहा—अरे मूर्ख! तुम यहाँ भ्रमरकेतु राक्षस के घर अकाल मौत मरने के लिए क्यों आये हो? कुमार ने राक्षस को अपने से पराजित बताते हुए वृद्धा से परिचय व प्रासाद का रहस्य पूछा, तो उसने कहा—यहाँ से राक्षसद्वीप निकट ही है और वहाँ लंकापति भ्रमरकेतु राज्य करता है। उसे अपनी पुत्री 'मदालसा' अत्यन्त प्रिय है जो अद्वितीय सुन्दरी और गुणवती है। एक दिन भ्रमरकेतु ने अपनी पुत्री के विवाह के सम्बन्ध में। मित्तिक से पूछा तो उसने कहा—इसका पति वह राजकुमार होगा जो तीन खण्ड का अधिपति होगा। नैमित्तिक

की बात से भ्रमरकेतु यह ज्ञातकर चिन्तित हुआ कि देवकुमर के योग्य मेरी पुत्री को मानव क्यों ब्याहेगा ? उसने तत्काल इस सुरक्षित कूपद्वार वाले प्रासाद में कुमारी मदालसा को मेरे संरक्षण में रख दिया ताकि उससे कोई भी मनुष्य ब्याह न कर सके।

भ्रमरकेतु ने अभी फिर दूसरे ज्योतिषी से मदालसा के ब्याह के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो उसने भी उपर्युक्त बात कही। जब प्रतीति के लिए राक्षसेन्द्र ने उसे पूछा तो वह कहने लगा—सांयात्रिक जन को मारने के लिए जाने पर द्वीप में उस अकेले ने तुम्हें जीता है। यह सुनकर भ्रमरकेतु सदलबल उसे मारने की प्रतिज्ञा कर यहाँ से गया है पर आज एक महीना हो गया, कोई खबर नहीं मिली ? वृद्धा से उपर्युक्त वृतान्त सुनकर कुमार सोचने लगा—वह लाख प्रतिज्ञा करे, मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता, मैं उसे पराजित करके आया हूं, मेरे सामने उसकी क्या बिसात है। इतने ही में मदालसा वहाँ आ पहुँची। वे दोनों परस्पर एक दूसरे के सौन्दर्य को देखते ही मुग्ध हो गए। मदालसा ने ऊपर जाकर वृद्धा को अपने पास तुरन्त बुलाया और पूछा कि तुम्हारे पास शुभलक्षण वाला पुरुष कौन खड़ा था ? वृद्धा ने जब दोनों का परस्पर प्रेम जाना तो उनका गन्धर्व विवाह करा दिया और मणिरत्नादि विविध वस्तुएँ देते हुए वृद्धा ने उन्हें आशीर्वाद दिया। मदालसा के साथ उत्तमकुमार ने घूम-फिरकर बाग-बगीचे, जलाशय आदि देखे व सुखपूर्वक रहने

लगा। मदालसा भी जैन धर्मपरायण और सुशील थी। कवि ने मदालसा के अप्रतिम सौन्दर्य का वर्णन १२वीं ढाल में किया है (देखो पृ० १३५) धर्मिष्टा नारी के वर्णन में कवि ने निम्न कवित्त कहा है :—

नारी मिरगानयन, रंगरेखा, रस राती;
वदे सुकोमल वयण महा भर यौवनमाती।
सारद वचन स्वरूप, सकल सिणगारे सोहै,
अपछर जेम अनूप मुलकि मानव मन मोहै।
कलोल केलि बहु विध करै, भूरिगुणे पूरण भरी,
चन्द्र कहै जिणधरम विण कामिणी ते किण कामरी।

कवि विनयचन्द्र ने यहां प्रथम प्रकाश को १४ ढालों में पूर्ण करते लिखा है कि अपने ज्ञानवृद्धि के हेतु मैंने यह प्रथम अभ्यास किया है।

सिद्ध पद का स्मरण और आत्मतत्व के विचारपूर्वक कवि द्वितीय प्रकाश प्रारम्भ करता है। उत्तमकुमार ने बैरी के स्थान में अधिक रहना अनुचित जान कर मदालसा से विदेश गमनार्थ सीख मांगी। उसने कहा—प्रियतम! मैं तो छाया की भाँति तुम्हारे साथ रहूंगी और यहाँ मेरे रहने का कोई प्रयोजन भी तो नहीं है। कुमारी ने अपने पाँच रत्न और वृद्धा को साथ लिये और एकमत से तीनों कूप में आ गए। समुद्रदत्त के आदमी उस समय जल निकाल रहे थे तो रस्सी के सहारे तीनों व्यक्ति बाहर निकल आये। लोगों ने कुमार के मुख से सारा वृतान्त ज्ञात कर

बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की और सब लोग प्रवहणारूढ़ होकर रवाना हो गए।

कुछ दिन बाद फिर जहाजों का पानी समाप्त हो गया। जल के बिना लोगों को दुखी देखकर मदालसा ने लोगों का उपकार करने के लिए पतिसे प्रार्थना की। उत्तमकुमार ने कहा—जल विना सबके ओष्ट सूख रहे हैं, क्या उपाय किया जाय ? यदि तुम कुछ कर सको तो सबका दुःख दूर हो। मदालसा ने अपने आभूषणों का करण्डिया खोलकर उसमें से पांच रत्न निकलवाये और उनके गुण बतलाते हुए कहा—प्रियतम ! ये पांच रत्न देवाधिष्ठित हैं, इनसे स्वर्णथाल, प्याला, चरी आदि भरे हुए भोजन, मणि रत्नादि के आभूषण, शयनासन, मूँग गेहूँ आदि धान्य तथा अग्नि रत्न से मिष्टान्न सुस्वादु व्यंजन प्राप्त होते हैं। गगन-रत्न से वस्त्र, वात-रत्न से अनुकूल वायु एवं नीर-रत्न को आकाश में रखकर पूजा करने से वांछित जल वृष्टि होती है। कुमार अपनी धर्मात्मा पत्नी के गुणों से प्रसन्न हो नीर-रत्न को स्तम्भपर बाँध कर बड़े समारोहसे पूजा की जिससे मेघवृष्टि हुई और लोगों ने अपने समस्त जलपात्र भर लिए। फिर मार्ग में धनधान्य की आवश्यकता पड़ने पर कुमार ने दूसरे रत्नों के प्रभाव से विविध उपकार किये। सब लोग अपने उपकारी उत्तमकुमार का बड़ा आदर करने लगे। समुद्रदत्त ने जब से मदालसा को देखा, वह उस पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के घात सोचने लगा।

समुद्रदत्त ने उत्तमकुमार के प्रति बड़ी आत्मीयता प्रकट की और उसके साथ इतनी घनिष्ठता पैदा कर ली कि दोनों का अधिकांश समय एक साथ ही व्यतीत होता था। मदालसा ने चेतावनी देते हुए कहा—प्रियतम ! यह सेठ ऊपर से मधुर-भाषी पर अन्तर में बड़ा कलुषित और कपटी है। आप इसका तनिक भी विश्वास न करें, कहीं यह धोखा दे देगा। यतः—

मोर मधुर स्वर करि नै बोले, रंग-सुरंगो होइ।
पूंछ सहित विषधर नं खायै, इण दृष्टान्ते जोइ॥

यह मुझे हरण करने के लिए तुम्हारे से प्रेम दिखाता है है क्योंकि 'दाढ गले सहुनी गुल दीठां, तेहवो नारि शरीर' अतः आप सावधान रहें। काले मस्तक का मानव बड़ा कपटी होता है कवि ने मदालसा के मुख से एक राजकुमार का दृष्टान्त कहलाया है जो अश्वारूढ होकर वनमें गया। वनदेव ने बानर का रूप करके राजकुमार को वृक्ष पर आश्रय दिया और रात्रि-में सिंह के उपस्थित होने पर जब उससे राजकुमार को मांगा तो उसने नहीं दिया पर जब बानर राजकुमार के गोद में सो गया तो सिंह की मांग पर अपने अश्व की रक्षा के बदले बानर को वृक्ष से नीचे फेंक दिया। कवि ने इतनी कथा लिखकर आगे का चार श्लोकों आदि का कथा प्रसंग व्याख्याता को मौखिक विवेचन करने की सूचना दी है। मदालसा ने कहा प्रियतम ! सावधान रहें ताकि भविष्य में पश्चाताप न हो। सौजन्यमूर्ति उत्तमकुमार ने कहा—सेठ धर्मात्मा है ! चन्द्र से अग्नि कैसे

निकल सकती है ? कह कर पत्नी के वचनों पर ध्यान नहीं दिया।

एक दिन समुद्र में जल कान्तिमय पर्वत आदि कौतुक दिखाने के बहाने अवसर पाकर समुद्रदत्त ने कुमार को समुद्र में गिरा दिया। उसे समुद्र में गिरते ही एक बड़े मच्छ ने निगल लिया और गहरे जल में चला गया। फिर समुद्र-तरंगों के साथ कुमार के पुण्य से वह मच्छ समुद्र तट जा पहुँचा जिसे धीवर ने जाल में पकड़ लिया। जब मच्छ का उदर चीरा गया तो उत्तम-कुमार बिना किसी कष्ट से उसमें से निकल गया। धीवर लोगों ने कुमार को अपना स्वामी स्थापन कर दिया और वह उनकी वस्ती में फलाहार द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने लगा।

इधर उत्तमकुमार को समुद्र में गिराकर सेठ कपट-विलाप करने लगा। जब मदालसा ने कोलाहल में कुमार के समुद्रपतन का सुना तो वह समुद्रदत्त के इस अकृत्य को ज्ञात कर नाना विलाप करते हुए अपना धैर्य्य खो बैठी। वृद्धा ने उसे आत्मघात महा-पाप बतलाते हुए हंस हंसी का दृष्टान्त देकर शान्त किया। निर्लज्ज समुद्रदत्त मदालसा को सान्त्वना देने के बहाने आया और उसकी प्रशंसा करते हुए भावी प्रबल बता कर अन्त में उसे अपनी गृहिणी बन जाने की प्रार्थना की। मदालसा ने शील रक्षा के हेतु छल का आश्रय लेकर उसे कहा कि कुछ दिन ठहरिये, मेरे पति को दस दिन हो जाने दीजिये फिर किसी नगर में जाकर राजा के समक्ष आपका कथन स्वीकार कर

लूंगी। सेठ भी मदालसा के इन वचनों से संतुष्ट हो गया। वृद्धा ने मदालसा के चातुर्य की प्रशंसा की। सेठ के जहाज जब उल्टे मार्ग चलने लगे तो मदालसा ने पवन-रत्न की पूजा की जिससे अनुकूल वायु द्वारा जहाज मोटपल्ली वेलाकुल के तट पर आ लगे। यहाँ का राजा नरवर्म बड़ा धर्मात्मा और न्यायप्रिय था। मदालसा को लेकर सेठ राजसभा में पहुँचा और राजा को भेंट पुरस्कार से प्रसन्न करके निवेदन करने लगा—राजन्! मुझे यह महिला चन्द्रद्वीप में मिली है, इसका पति समुद्र में गिर कर मर गया यह पवित्र है और आपकी आज्ञा से मेरी गृहिणी बनेगी। मदालसा ने कहा—मूर्ख! क्यों मिथ्या अंट संट बकता है, अगर राजा न्याय करे तो तुम्हारे दाँत तोड़ दे। उसने फिर राजा को सम्बोधन कर कहा—महाराज! इस पापी ने मेरे पति को समुद्र में गिरा दिया है, मैंने अपनी शील रक्षा के हेतु इसे भुला कर आपके सामने उपस्थित किया है अब आप जैसे महा-पुरुष अन्याय नहीं करेंगे क्योंकि वैसा होने से मेरु पर्वत कम्पाय-मान हो जाय एवं पृथ्वी पाताल को चली जाय। अतः दुष्ट को यथोचित शिक्षा दें। राजा ने क्रुद्ध होकर समुद्रदत्त के पाँचसौ जहाज जब्त कर लिये और मदालसा से कहा—बेटी! तुम मेरी पुत्री त्रिलोचना के पास उसकी बहिन की तरह आराम से रहो। चिन्ता छोड़कर दान पुण्य करती रहो। यदि किसी तट पर तुम्हारा पति पहुँचेगा तो उसका अनुसंधान करवाया जायगा।

मदालसा को राजा ने धर्मपुत्री करके माना। वह पंच रत्नों

के प्रभाव से दान पुण्य करती हुई सती स्त्रियोचित नियमों का पालन करती हुई काल निर्गमन करने लगी। उसने स्नान, शृंगारादि का त्याग कर दिया और प्रतिदिन नीरस आहार का एकाशना करके भूमि शयन स्वीकार कर लिया। वह पुरुष मात्र की ओर नजर उठाकर भी नहीं देखती एवं निरन्तर नवकार मन्त्र का स्मरण किया करती थी।

एक दिन धीवर लोगों के साथ उत्तमकुमार भी मोटपल्ली आया और नगरी का अवलोकन करता हुआ जहाँ राजा नरवर्मा अपनी पुत्री के लिए प्रासाद बनवा रहा था, वहाँ आकर देखने लगा। कुमार वास्तुशास्त्र में निष्णात था, उसने स्थान-स्थान पर सूत्रधारों से वास्तु-दोष सुधारने के लिए निराभिमानता से उचित परामर्श दिये जिससे प्रसन्न होकर सूत्रधारों ने कुमार को अपने पास रख लिया। कुमार के सान्निध्य से थोड़े दिनों में वह सुन्दर प्रासाद बन कर तैयार हो गया।

एक बार राजा नरवर्मा प्रासाद निरीक्षणार्थ आये, वे उत्तमकुमार को उच्चासन पर बैठे देखकर सोचने लगे कि यह रूप और गुण से राजकुमार मालूम होता है। उन्होंने कुमार से परिचय पूछा तो उसने कहा—राजन् ! मैं परदेशी हूं और आपके नगर में निवास करता हूं। राजा महल देखकर चला गया। वसंत ऋतु थी वन-वाटिका की शोभा अवर्णनीय थी, कवि ने ढाल १३वीं में वसन्त ऋतु का अच्छा वर्णन किया है। राजकुमारी भी क्रीड़ा के हेतु बगीचे में आई, उसे साँप डस गया। सर्वत्र हाहाकार छा

गया। कुमारी के विष व्याप्त शरीर को राजमहल में लाकर विषापहार के हेतु गारुड़िक लोगों को बुलाया गया। उनके लाख उपाय करने पर भी जब कुमारी निर्विष नहीं हुई तो राजा ने राजकुमारी का विष उतारने वाले को अर्द्धराज्य व कुमारी से पाणिग्रहण कर देने की उद्घोषणा करवा दी। उत्तमकुमार ने पटह स्पर्श किया और उसने मन्त्र विद्या के बल से राजकुमारी त्रिलोचना को सचेत कर दिया। राजा ने अपने वचनानुसार शुभ मुहुर्त्त में उत्तमकुमार के साथ त्रिलोचना का पाणिग्रहण करा दिया। हस्तमिलाप छुड़ाने के समय राजा ने उसे अर्द्ध राज्य दे दिया। उत्तमकुमार अपनी प्रिया के साथ नवनिर्मित प्रासाद में रहने लगा। यहाँ दूसरा अधिकार समाप्त हो जाता है।

तीसरे अधिकार के प्रारम्भ में कवि भगवान महावीर को नमस्कार कर श्रोताओं को आगे का सम्बन्ध सुनने का निर्देश करता है। मदालसा ने दासी से कहा—प्रियतम का अबतक कोई पता नहीं लगा अतः वे समुद्र में डूब गए मालूम होते हैं। मैं अब किस आशा से जीवित रहूं ? मैंने इतने दिन आंबिल तपश्चर्या की, जिनालय एवं स्वर्ण, रत्नमय प्रतिमाएं बनवाई, त्रिकाल पूजा की। साधु व स्वधर्मियों को दान पुण्य आदि धर्माराधन करते हुए प्रतीक्षा की पर अब तो पाँचों रत्न त्रिलोचना बहिन को सम्भला कर संयम-मार्ग स्वीकार कर लेना ही मेरे लिये श्रेयस्कर है। वृद्धा ने कहा—जिस परदेशी ने त्रिलोचना से व्याह किया है, सारे नगर में उसकी प्रशंसा सुनाई देती है, मेरी आत्मा

साक्षी देती है कि वह अवश्य तुम्हारा पति ही होगा। यदि आज्ञा दो तो जाकर प्रतीति कर आऊं ? वह मदालसा की आज्ञा लेकर त्रिलोचना के घर गई और त्रिलोचना के भाग्य की प्रशंसा करते हुए उसके प्रियतम को देखने की इच्छा प्रकट की। त्रिलोचना ने कहा मेरे प्राणाधार महल में सोये हुए हैं, जाकर देख आओ। वृद्धा ने उत्तमकुमार को पलंग पर सोये हुए देखा और मदालसा से आकर कहा—मुझे तो तुम्हारे पति जैसा ही लगता है। यह सुनकर मदालसा के हृदय में प्रेम जगा और उससे मिलने को उत्सुक हुई। फिर दूसरे ही क्षण बिना प्रतीति किये परपुरुष के प्रति आकृष्ट होनेवाले पापी मन को धिक्कारा। इधर उत्तमकुमार ने वृद्धा को देख कर जाते हुए देखा तो त्रिलोचना से पूछा कि अभी महल में कौन आई थी, मुझे पता नहीं लगा। त्रिलोचना ने कहा—मेरे से भी सौन्दर्य व गुणों में उत्कृष्ट एक परदेशिन यहाँ आई है जिसे मैंने बहिन करके माना है वह एकान्त में रहकर धर्म ध्यान करती है परोपकारिणी तो वह अद्वितीय है उसके पास दिखता तो कुछ नहीं पर न जाने उसके पास क्या सिद्धि है दान पुण्य में अपार धनराशि व्यय कर रही है। पति के वियोग में उसने शरीर एकदम सुखाकर कृश कर लिया है। यह वृद्धा जो आपको देख गई उसी की सखी है।

कुमार ने जब यह वृतान्त सुना तो उसे अपनी प्रियतमा मदालसा का ख्याल आया और उससे मिलने को उत्सुक हुआ। फिर दूसरे ही क्षण सोचा—उसे न जाने पापी समुद्रदत्त ने कहाँ

लेजाकर किस विपत्ति में डाला होगा। व्यर्थ ही परस्त्री पर मोह उत्पन्न होने का पश्चाताप करता हुआ मध्यान्हकाल में जिन-पूजा के हेतु कुसुम, चन्दन आदि लेकर जिनालय में गया। बहुत विलम्ब हो जाने पर भी जब कुमार वापस नहीं लौटा तो त्रिलोचना ने चिन्तित होकर दासी को भेजा। खबर मिली कि उसे न तो किसी ने जाते देखा और न आते ही। त्रिलोचना पति-वियोग से दुखी होकर विलाप करने लगी। सर्वत्र खोज कराई गई पर कुमार का कोई पता नहीं लगा।

इसी नगरी में महेश्वरदत्त नामक वणिक रहता था जिसके ५६ कोटि स्वर्ण-मुद्राएं निधान में, ५६ कोटि उधार में, एवं ५६ कोटि मुद्राएं व्यापार में थी। उसके ५०० जहाज, ५०० गोकुल, ५०० हाथी, ५०० घोड़े, ५०० पालकी, ५०० कोठे, ५०० सुभट व पांच लाख सेवक थे। उसके कोई उत्तराधिकारी पुत्र नहीं था, सहस्रकला नामक एक मात्र गुणवती कन्या थी जिसके लिए योग्य वर प्राप्त होने पर पाणिग्रहण करवा के स्वयं दीक्षित होने की सेठ महेश्वरदत्त की चिर-कामना थी। उसने अपनी ६४ कला निधान पुत्री को तरुण वय प्राप्त हो जाने पर भी जब योग्य वर न मिला तो एक नैमित्तिक से अपने भावी जामाता के विषय में प्रश्न किया। नैमित्तिक ने कहा—जो व्यक्ति राज सभा में त्रिलोचना के पति और मदालसा का पूरा वृत्तान्त कहेगा, वही तुम्हारी पुत्री का वर होगा और आज से एक महीने बाद वह मिलेगा। वही अखण्ड प्रतापी सारे राज्य

का अधिपति होगा ! ज्योतिषी के विवाह लग्न देने पर सेठ ने स्वजन सम्बन्धियों को निमन्त्रित कर विवाहमण्डप की रचना की एवं नाना प्रकार की विवाह सामग्री का संचय बड़े जोर-सोर से करना प्रारम्भ कर दिया। नगर में वर के बिना व्याह मंडने की बडी भारी चर्चा चल रही थी। राजा ने जब यह बात सुनी तो उसने सेठ महेश्वरदत्त की वैराग्य-भावना की बड़ी प्रशंसा की और वह भी त्रिलोचना के पति की खोजकर उसे राजपाट देकर दीक्षा लेने का प्रबल मनोरथ करने लगा। राजा ने सर्वत्र उद्घोषणा करवा दी कि जो त्रिलोचना के पति व मदालसा का वृत्तान्त प्रकाशित करेगा उसे राज्याधिपति बनाने के साथ-साथ माहेश्वरदत्त की पुत्री सहस्रकला के साथ विवाह करा दिया जायगा। एक मास बीतने पर एक शुक ने आकर पटह स्पर्श किया और मानव भाषा में बोलकर कहा मुझे राज-सभा में ले जाओ मैं राजा के जमाता और मदालसा का सारा वृत्तान्त बताकर राजा का राज्य व सहस्रकला को प्राप्त करूँगा। सब लोग उसे कौतुकपूर्वक राजसभा में ले आए। शुक ने मनुष्य की भाषा में कहा—परदे के अन्दर त्रिलोचना और मदालसा को बुलाकर उपस्थित कीजिए ताकि मैं सारा आख्यान कह सुनाऊँ। राजा ने कहा—तुम ज्ञान के बिना त्रियंच किस प्रकार सारी बातें जानते हो ? शुक ने कहा—"मैं त्रिकालज्ञ हूं, भूत भविष्य की सारी बातें बतलाने में समर्थ हूं।" फिर शुक ने राजा और समस्त नागरिक लोगों के समक्ष अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया—

वाराणसी के राजा मकरध्वज का पुत्र उत्तमकुमार भाग्य परीक्षा के लिए घर से निकलकर देशाटन करता हुआ भरुअछ आया और मुग्धद्वीप देखने के लिए जहाज में बैठकर समुद्र के बीच पहुँचा। वहाँ जलकान्त पर्वत स्थित भ्रमरकेतु राक्षस कारित कुएं में साहस पूर्वक उतर कर लंकापति की पुत्री मदालसा से उसने पाणिग्रहण किया। फिर अपनी स्त्री के साथ कूप-मार्ग से बाहर आकर समुद्रदत्त के वाहन में आरूढ़ हुआ। मार्ग में जल शेष हो जाने पर पंचरत्न के प्रभाव से सबको अशन पान से सन्तुष्ट किया। कुमार की संपदा और स्त्री को देखकर पापी सेठ ने उसे समुद्र में गिरा दिया। उसे गिरते ही मकर ने निगल लिया जिसे धींवर ने जाल में पकड़कर उदर विदीर्ण कर कुमार को निकाला। वह एक दिन त्रिलोचना का प्रासाद देखने आया जिसका नव्य निर्माण हो रहा था। उसका राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण हुआ और सुखपूर्वक रहने लगा और एक दिन वह जिन पूजा के हेतु घर से निकलकर जिनालय आया पूजनान्तर पुष्प करण्डिका में वंशनलिका को खोल कर देखा तो उसमें रखे हुए जहरी साँप ने कुमार के हाथ में डंक लगा दिया जिससे वह मूर्छित हो धराशायी हो गया। हे राजन्! मैंने मदालसा और त्रिलोचना के पति का सारा वृत्तान्त बतला दिया अब कृपाकर अपनी सत्य प्रतिज्ञानुसार मेरी आशा पूर्ण करें तथा सेठ से भी सहस्रकला कन्या दिलावें। ऐसा कहकर शुक के मौन धारण करने पर राजा ने उसे आगे बोलने को कहा

तो उसने कहा—आप अपना वचन पूर्ण नहीं करते तो मैं चला जाऊँगा और जंगल में फल-फूल वृत्ति से अपना उदरपूर्ण करूँगा। मैंने यह जान लिया कि मनुष्य मायावी होते हैं और स्वार्थ सिद्ध होने पर तत्क्षण बदल जाते हैं। यह कहकर जब शुक उड़ने लगा तो राजा ने रोक कर कहा—धैर्य्यधारण करो, राज्य अवश्य दूँगा, पर यह तो बतलाओ उत्तमकुमार कहाँ है? जीवित है कि नहीं? मेरी यह शंका दूर करो! शुक ने कहा—इतनी बात बताने पर भी जब कुछ नहीं मिला तो आगे बालुका को पीलने से क्या तेल निकलेगा? जब राजा ने राज्य व कन्या देने की स्वीकृति दी तो शुक आगे का वृतान्त बतलाने लगा—

'उसी समय अनंगसेना नामक सुन्दर गणिका वहां पहुंची और उसे विषापहार मणि प्रक्षालित जल द्वारा निर्विष कर दिया और अपने घर ले जाकर चौथी मंजिल के महल में रखा। राजन्! मैंने दाक्षिण्यवश सारा वृत्तान्त बतला कर मूर्खता की अब यदि आप अपना वचन पूरा नहीं करते तो मैं जाता हूं, आपका कल्याण हो! राजा ने कहा—अर्द्ध चिकित्सा करके वैद्य नहीं जा सकता अतः अनंगसेना के घर में कुमार को शोध कर लूँ फिर तुम्हें राज दूँगा।

राजा ने अपने कर्मचारियों को अनंगसेना के घर भेजा। वेश्या से राज-जामाता का अनुसन्धान पूछा तो वह चिन्तित और नीची नजर कर मौन हो गई। जब उत्तमकुमार वेश्या के

यहाँ न मिला तो राजा ने सचिन्त होकर शुकराज से ही प्रार्थना की कि तुम्ही सब स्पष्ट अनुसंधान कहो ! उसने कहा—

अनंगसेना ने देखा राज-जामाता को यों घर में रखना मुश्किल है अतः उसे सर्वदा अपने यहां रखने के लिये उसके पैर में मंत्रित डोरा बाँधकर शुक बना दिया। उसने शुक को स्वर्ण पिंजड़े में रखा। वह रात में उसे पुरुष और दिन में शुक बना देती है एवं गीतगान आदि से उसका मनोरंजन करती है। कुमार ने मन में सोचा—कर्मगति बड़ी विचित्र है! मैंने ऐसा क्या पाप किया जिससे मनुष्य भव में त्रियंच गति भोगनी पड़ती है। शायद मदालसा और पांचरत्न उसके पिता की आज्ञा बिना ग्रहण करने का तथा वृद्धा के आने पर त्रिलोचना से उसकी सखी पर स्वस्त्री जानकर क्षणिक मानसिक पाप किया तो उसी के फलस्वरूप साँप न डस गया हो ? कवि कहता है कि उत्तम पुरुप अपने थोड़े से अपराध को भी विशेष मानते हैं।

अनंगसेना के यहाँ रहते उसे एक मास हो गया आज वह दैवयोग से पिंजड़ा खुला छोड़कर किसी काम में लग गई। शुक ने पटहोद्‌घोपणा सुनकर उसे स्पर्श किया और इस समय वह आपके समक्ष उपस्थित है। राजा ने हर्षित होकर उसके पैर का डोरा खोला तो वह तुरत उत्तमकुमार हो गया।

उत्तमकुमार को देखकर सर्वत्र आनन्द छा गया। मदालसा व त्रिलोचना के अपार हर्ष का तो कहना ही क्या ? सेठ माहेश्वरदत्त ने अपनी पुत्री सहस्त्रकला का कुमार के साथ पाणि-

ग्रहण कर दिया सारे नगर में आनन्द उत्सव मनाये गये। सुन्दरी गणिका अनंगसेना भी पातिव्रत नियम लेकर कुमार की चौथी स्त्री हो गई। राजा ने मालिन को बुलाकर धमकाया तो उसने समुद्रदत्त व्यवहारी द्वारा पाँचसौ मुद्रा प्राप्त कर लोभवश कुमार को मारने के लिए पुष्प-करंडिका में साँप रखने का दुष्कृत्य स्वीकार कर लिया। राजा ने समुद्रदत्त व मालिन को मृत्युदण्ड दिया पर उदारचेता कुमार ने अपना भाग्य-दोष बताते हुए उन्हें क्षमा करवा दिया। राजा ने समुद्रदत्त का सर्वस्व लूटकर अन्त में देश निकाला दे दिया।

राजा नरवर्मा ने उत्तमकुमार को राजपाट सौंप कर सेठ महेश्वरदत्त के साथ सद्गुरु के चरणों में जाकर संयम-मार्ग स्वीकार कर लिया और शुद्ध चारित्र पालन कर कर्मों का क्षय किया। अन्त में केवलज्ञान पाकर मोक्षगामी हुए। जब राक्षसेन्द्र भ्रमरकेतु ने नैमित्तिक से अपने वैरी का पता पूछा तो उसने कहा, वह तुम्हारी पुत्री को पंच रत्नों सहित व्याह कर ले गया और इस समय मोटपल्ली में है। जब भ्रमरकेतु ने दुर्गम वक्र कूप में पहुंचना असम्भव बतलाया तो उसने कहा कि जब वह अकेला था तब भी तुम उसका पराभव न कर सके तो अब तो वह प्रबल और जामाता भी हो गया। भ्रमरकेतु वैरभाव त्याग कर उत्तमकुमार से मिला और अपनी पुत्री तथा जामाता को आशीर्वाद देते हुए उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

एक दिन जब उत्तमकुमार राजसभा में बैठा था तो

वाराणसी से मकरध्वज का पत्र लेकर एक दूत उपस्थित हुआ, जिसमें अत्यन्त प्रेम पूर्वक लिखा था—'बेटा ! तुम्हारे जाने के बाद हमने चारों ओर बहुत खोज की पर तुम्हारा कोई पता नहीं लगा। अब तुम शीघ्र आकर हमारा हृदय शीतल करो। मैं अब वृद्ध हो गया अतः तुम राज-पाट सम्भालो ताकि मैं आत्मकल्याण करूँ।

पितृ आज्ञा पाकर उत्तमकुमार का हृदय शीघ्र उनके चरणों में उपस्थित होने को उत्सुक हो गया। उसने मन्त्री लोगों को राज्य भार सौंप कर अपनी चारों स्त्रियों को लेकर सैन्य सहित वाराणसी के प्रति प्रयाण कर दिया। मार्ग में चित्रकूट जाकर राजा महासेन से मिला जिसने पूर्व निश्चयानुसार उत्तमकुमार को राज्याभिषिक्त कर स्वयं संयममार्ग स्वीकार कर लिया। उत्तमकुमार कई देशों में अपनी आज्ञा प्रवर्तित कर सैन्य सहित गोपाचलगिरि की ओर बढ़ा। वहाँ के राजा वीरसेन को खबर मिलते ही चार अक्षौहिणी सेना के साथ सीमा पर आ डटा। परस्पर घमासान युद्ध हुआ, कवि ने १०वीं ढाल में युद्ध का अच्छा वर्णन किया है। अन्त में वीरसेन पराजित होकर जीवित पकड़ लिया गया। उसके आधीनता स्वीकार करने पर कुमार ने उसे छोड़ दिया। अपनी पराजय से वराग्यवासित होकर उसने एक हजार पुरुषों के साथ सुविहित आचार्य युगन्धरसूरि के पास चारित्र ग्रहण कर लिया। थोड़े दिन बाद मार्ग के अभिमानी राजाओं को वशवर्त्ती कर उत्तमकुमार वाराणसी पहुंचा। उसके

स्वागत में नगर को सजाकर बड़े भारी उत्सव समारोह किये गए। उत्तमकुमार अपने माता पिता की चरणवन्दना कर अत्यन्त प्रमुदित हुआ। अपने पुत्र को इतने बड़े राज्य-विस्तार व चार रानियों सहित समागत देखकर माता-पिता को अपार हर्ष हुआ। राजा मकरध्वज ने कुमार को शुभमुहूर्त में राज्याभिषिक्त कर स्वयं दीक्षा ले ली।

अब उत्तमकुमार चार राज्यों का अधीश्वर था। उसके ४० लाख हाथी, ४० लाख घोड़े ४० लाख रथ व चार करोड़ पैदल सेना थी। वह ४० कोटि गामों का अधिपति था। उसने तीर्थ-यात्रा, जिनबिंब व प्रसादों के निर्माण तथा ग्रंथ भण्डार व स्वधर्मी वात्सल्य में अगणित धनराशि व्यय की। इस प्रकार चार रानियों के साथ सुखपूर्वक राज्य करने लगा। एक दिन केवली मुनिराज के शुभागमन होने पर राजा चरणवन्दनार्थ उपस्थित हुआ। उपदेश सुनकर राजा उत्तमकुमार ने केवली भगवान से पूछा—प्रभो! मैंने ऐसे क्या पाप-पुण्य किये जिससे इतनी ऋद्धि सम्पत्ति पाने के साथ-साथ समुद्र में गिरा, मच्छ के पेट से निकलकर धीवर के यहाँ रहा एवं गणिका के यहाँ शुक पक्षी के रूप में रहना पड़ा। केवली भगवान ने फरमाया—पूर्वकृत कर्म का विपाक उदय में आने पर सुख-दुःख भोगना पड़ता है। कर्मों का प्रभाव जानने के लिए केवली भगवान ने राजा को पूर्व जन्म का सम्बन्ध कहा—हिमालय प्रदेश के सुदत्त ग्राम में धनदत्त नामक एक कौटुम्बिक रहता था जिसके चार

स्त्रियाँ थी, कर्मवश उसका सारा धन नष्ट हो गया। एक बार चोरों द्वारा वस्त्र लुटे हुए चार मुनिराज उसके गाँव में आये जो ठण्ढ के मारे कांप रहे थे। धनदत्त कृपालु था उसने उन्हें वस्त्र दान दिया चारों स्त्रियों ने भी इस दान की बड़ी अनुमोदना की उसी के प्रभाव से तुम्हें चार महाराज्य मिले। एक वार किसी भव में तुमने मुनियों के मलिन शरीर को देखकर मच्छ जैसी दुर्गन्ध बतलाई जिसके कारण तुम्हें मच्छ के पेट में तथा धीवर के घर रहना पड़ा। इस भव से हजारवें भव पूर्व तुमने शुक को पिंजड़े में बन्द किया था उसी कर्मों से तुम्हें शुक होना पड़ा। अनंगसेना ने पूर्वभव में अपनी सखी को शृंगार सजी हुई देखकर वेश्या शब्द से संबोधित किया जिसके कर्मोदय से वह वेश्या हुई।

राजा उत्तमकुमार अपना पूर्व भव सुनकर वैराग्यवासित हो गया। उसने अपने पुत्र को राजपाट सौंपकर चारों स्त्रियों के साथ संयम ले लिया। फिर निर्मल चारित्र पालन कर अनशन आराधना पूर्वक चार पल्योपम की आयुवाला देव हुआ। वहाँ से महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सिद्ध बुद्ध होंगे।

कवि विनयचन्द्र ने सं० १७५२ में पाटण में चारुचन्द्र मुनि कृत संस्कृत उत्तमकुमार चरित्र के आधार से यह रास-निर्माण किया है। हमारे अभय जैन ग्रन्थालय में इसकी चारुचन्द्र गणि द्वारा स्वयं लिखित प्रति विद्यमान है जिसके अनुसार यह चरित्र बीकानेर में ५७५ श्लोकों में प्रथमाभ्यास रूप में बनाया है कवि

विनयचन्द्र भी इस रचना को अपना प्रथमाभ्यास सूचित करते हैं। जिनरत्नकोश के अनुसार इसके अतिरिक्त तपागच्छीय जिनकीर्त्ति, सोममण्डन और शुभशील के भी संस्कृत चरित्र उपलब्ध है तथा भाषा में महीचन्द्र ने सं० १५६१ जौनपुर में विजयशील ने सं० १६४१ में, लब्धिविजय ने सं० १७०१ में, कवि जिनहर्ष ने सं० १७४५ पाटण में तथा राजरत्न ने सं० १८५२ में खेड़ा में रास चौपाई बनाये जो सभी उपलब्ध हैं।

कविवर विनयचन्द्र के व्यक्तित्व और रचनाओं का थोड़ा विहंगावलोकन पिछले पृष्ठों में कराया जा चुका है। इस ग्रन्थ में अब तक की उपलब्ध कविवर की समस्त रचनाएँ दी जा चुकी हैं। अन्त में कविवर की कृतियों में प्रयुक्त देसियों की सूची देकर इस ग्रन्थ में आये हुए राजस्थानी व गुजराती शब्दों का कोष प्रकाशित किया है। इसमें शब्दों के अर्थ की ओर नहीं, पर भावार्थ की ओर ही लक्ष्य रखा गया है, एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं पर जहाँ जिस भाव में उसे प्रयुक्त किया है उसे समझने में पाठकों को सुगमता हो, यही इसका उद्देश्य है।

कविवर की जीवनी के विषय में हम अधिक सामग्री उपलब्ध न कर सके पर जितना भी ज्ञात हुआ, दिया गया है। कविवर के हस्ताक्षर व उनकी रचनाओं की प्रति के अन्तिम पृष्ठ का ब्लाक बनवा कर इस ग्रन्थ में प्रकाशित कर रहे हैं ताकि उनकी व उनके गुरु की अक्षरदेह के दर्शन हो सके।

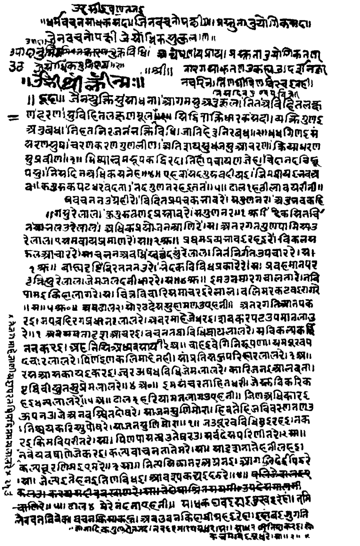
यह पुस्तक जिस रूप में प्रकाशित हो रही है उसका

वास्तविक श्रेय राजस्थानी और जैन साहित्य के यशस्वी विद्वान सादूल राजस्थान रिसर्च इन्स्टीट्यूट के डाइरेक्टर पूज्य श्री अगरचन्दजी नाहटा, जैन इतिहासरत्न को है जिनकी सतत चेष्टा और प्रेरणा से शताब्दियों से ज्ञानभंडारों में पड़े हुए ग्रन्थ प्रकाश में आ रहे हैं। मेरी समस्त साहित्य प्रवृत्तियों के तो वे ही सर्वेसर्वा हैं अतः आत्मीयजनों के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रश्न ही नहीं उठता। आशा है प्रमाद व उपयोगशून्यता-वश रही हुई भूलों को परिमार्जन करके विद्वान पाठकगण अपने सौजन्य का परिचय देंगे।

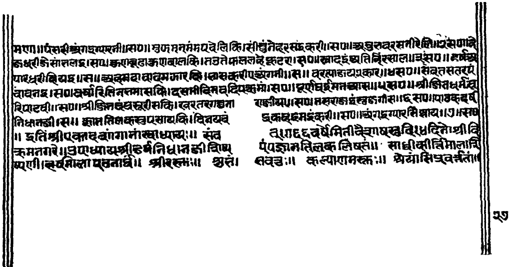
—*भंवरलाल नाहटा*

अनुक्रमणिका

विहरमान बीसी



कविवर के हस्ताक्षरों में कुगुरु स्वाध्याय का खरड़ा



कविवर के गुरु उ० ज्ञानतिलक लिखित कवि विनयचन्द्रकृति संग्रह प्रति का अन्तिम पत्र

विनयचन्द्रकृति कुसुमाञ्जलि

चतुर्विंशतिका

॥ श्रीऋषभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—महिंदी रंग लागौ

आज जनम सुकियारथउ रे, भेट्या श्रीजिनराय।
प्रभु सुं मन लागौ, खिण इक दूरि न थाय॥ प्र०॥
सुगुण सहेजा माणसां रे, जोरइ मिलियइ जाय। प्र० ॥१॥
नयणे नयण मिलायनइ रे, जिन मुख रहीयइ जोय। प्र०।
तउ ही तृप्ति न पामियइ रे, मनसा बिवणी होय। प्र० ॥२॥
मानसरोवर हंसलउ रे, जेम करइ झकझोल। प्र०।
तिम साहिब सुँ मन मिल्यउ रे, करइ सदा कल्लोल। प्र० ॥३॥
हीयड़ा मांहि जे वसइ रे, वाल्हा लागइ जेह। प्र०।
जउ बीजा रूपई रूड़ा रे, न गमइ तां सूँ नेह। प्र० ॥४॥
रसल्यै गुण मकरंद नउ रे, चतुर भमर तजि खेद। प्र०
जे जण घण सरिखा हुवइ रे, स्युँ जाणइ तस वेध। प्र० ॥५॥
एहवउ मंइ निश्चय कियउ रे, पलक न मेलूं पास। प्र०।
आखर सेवा मां रह्यां रे, फलस्यइ मन नी आस। प्र० ॥६॥

मीठा अमृत नी परइ रे, ऋषभ जिनेश्वर संग। प्र०।
'विनयचन्द्र' पामी करी रे, राखउ रस भरि रंग। प्र० ॥७॥

॥ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥

ढाल—हमीरा नी

साहिब एहवउ सेवियइ, सुगुण सरूप सतेज सजनजी।
मिलतां ही मन उलसै, दीठां बाधइ हेज सजनजी ॥१॥ सा० ॥
तेतउ आज किहाँ थकी, जिण मांहें हुवै स्वाद। स०।
स्वाद विहूणा छोड़ियइ, राखेवां मरजाद सजनजी ॥२॥ सा० ॥
समय अछइ इण रीत नों, तउ पिण बखत प्रमाण। स०।
मुझनइ प्रभु तेहवउ मिल्यौ, सहज सुरंग सुजाण। स० ॥३॥सा०॥
ज्यां सूँ मन पहिली हुँतउ, ते तउ देव कुदेव। स०।
कंचन नइ वलि कामिणी, ते जीप्या नितमेव। स० ॥४॥सा०॥
ए निर्जित इण बात मां, रिद्धि तजी भरपूर सजनजी।
दर्प हतउ कंदर्प नउ, ते पणि टल्यउ दूर सजनजी ॥ ५ ॥ सा० ॥
मुगति बधू रस रागियउ, ज्योतिर्मय वसुधार सजनजी।
यश महकइ गहकइ गुणे, अजित विजित रिपुवार।स०॥६॥सा०॥
'विनयचन्द्र' प्रभु आगले, कर्म अरी करी नीम सजनजी।
वेगि वल्या गर्भइं गल्या, जिम पोइण गळ हीम स० ॥७॥ सा० ॥

॥ श्री संभव जिन स्तवनम् ॥

ढाल—धणरा मारूजी रे लो

स्वस्तिश्री गर्जित भयवर्जित त्रिभुवनतर्जित
सकल जीव हितकामी रे लो। म्हारां वालेसर जी रे लो ॥

ते शिव बंदिर अनुभव मन्दिर सद्गुण सुन्दर
तिहां छइ संभव स्वामि रे लो ॥ मा० ॥ १ ॥
तिण दिशि लेख लिखइ प्रेमातुर चित नउ चातुर
आतुर प्रेम प्रयासइ रे लो । मा० ।
प्रभु नइ प्रीति प्रतीत दिखाली रीति रसाली,
पाली सेवक भासइ रे लो ॥ मा० ॥ २ ॥
सुगुण सनेही अरज सुणीजइ सुनिजर कीजइ,
दीजइ दरस उमाही रे लो । मा० ।
मुझ चित्त मांहें ए छइ चटकउ तुझ मुख मटकौ,
लटकौ दीसइ नांही रे लो । म० ॥ ३ ॥
तुं तउ मोसुँ रहइ निरालउ, माया गालउ,
इम टालउ किम कीजइ रे लो ॥ मा० ॥
पोतानउ सेवक जाणीनइ हित आणीनइ,
चित ताणी नइ लीजइ रे लो । म० ॥ ४ ॥
निगुण थयां तउ नेह न व्यापइ मन थिर थापइ,
तउ आपइ नवि डोलुं रे लो । मा० ।
बात कहुं वेधाले वयणे विकसित नयणे,
गुण रयणे जस बोलुं रे लो । मा० ॥ ५ ॥
कहतां कहतां सोहन बाधइ मोह न बाधइ,
साधइ कारिज तेही रे लो । मा० ।
मौन करइ जे मननी खांतइ बक दृष्टान्ते,
भ्रान्तइ रहत सनेही रे लो । मा० ॥ ६ ॥

समाचार इण भांतइ वांची दिलमइं राची,
साची कृपा करेज्यो रे लो । मा० ।
'विनयचन्द्र' साहिब तुम्ह आगे मांगै रागैं,
सुकृत भंडार भरेज्यो रे लो ॥ मा० ॥ ७ ॥

॥ श्री अभिनन्दन जिन स्तवनम् ॥

ढाल—धणरी बिंदली मन लागौ

हांरे मोरा लाल थिर कर रह्यौ सहु थानकइ,
थिर जेहनउ जस थंभ मोरा लाल।
अभिनन्दन चंदन थकी, अधिक धरइ सोरंभ मोरा लाल ॥१॥
तिण साहिब सुं मन मोह्यौ,
हांरे सुगुणा साहिब सुं मन मोह्यौ ॥ आंकणी ॥
हांरे मोरा लाल चंदण नी तौ वासना,
रहइ एक वन अवगाह ॥ मो० ॥
प्रभुनी प्रगट उपासना, सलहै त्रिभुवन मांह ॥ मोरा ॥ २ ॥ ति०॥
हांरे मोरा लाल साप संताप करइ सदा, घाल्यौ चंदन घेर ॥मो०॥
मांरा साहिब आगलइ, सुरनर हुआ जेर ॥ मो० ॥३॥ ति० ॥
चंदन विरहण नारीयां, तपति बुझावइ देह ॥ मो० ॥
पाप ताप दूरइ हरइ, श्री जिनवर ससनेह ॥ मो० ॥४॥ ति० ॥
चंदन तरुवर अवर नइ, करइ सरस शुभ गंध ॥ मो० ॥
विषय अंध मानव भणी, जिन तारइ भवि सिंधु ॥मो०॥५॥ति०॥
चंदन फल हीणौ हुवइ, नंदन वन जसु वास ॥ मो० ॥
इक कारणि प्रभु मां मिलइ, फलइ जपंता आश ॥ मो० ॥६॥ति०॥

परतखि जाणि पटंतरउ, मनथी प्रभु मत मेल्हि ।। मो० ।।
'विनयचन्द्र' पामिस सही, निरमल जस रस रेल्हि ।।मो०।।७।।ति०।।

।। श्रीसुमतिजिन स्तवन ।।

ढाल—बात म काढौ व्रत तणी

सुमति जिनेश्वर सांभलौ, माहरा मननी वातां रे ।
तुं सुपना मांहे मिलइ, खबर पड़इ नहीं जातां रे ।।१।।सु०।।
पिण हिव अवसर देखिनइ, धर्म जागरिका धरस्युं रे ।
प्राण सनेही जाणिनइ, तुझथी झगड़ौ करिस्युं रे ।।२।।सु०।।
जे हित अहित न जाणिस्यइ, पर ना अवगुण लेस्यइ रे ।
तिण सुं कुण मुंह मेलिस्यइ, कुण अंतर गति देस्यइ रे ।।३।।सु०।।
तिल भर जे जाणै नहीं, तेहनइ गुह्य कहीजै रे ।
तूं तउ जाण प्रवीण छइ, माहरी बांह ग्रहीजइ रे ।।४।।सु०।।
मइं भव भमतां दुख सह्यां, ते तउ तुं हिज जाणइ रे ।
जे लज्जालू नर हवइ, मुहंडइ केम वखाणइ रे ।।५।।सु०।।
इम जाणीनइ हित धरउ, मुझनइ दुत्तर तारउ रे ।
स्युं जायइ छइ ताहरौ, वाल्हा हृदय विचारौ रे ।।६।।सु०।।
बीजा किणही ऊपरा, भोलइ ही मति राचउ रे ।
मननी इच्छा पूरस्यइ, 'विनयचन्द्र' प्रभु साचउ रे ।।७।।सु०।।

।। श्री पद्मप्रभु स्तवनम् ।।

ढाल- योधपुरीनी

पद्मप्रभु स्वामी हो माहरी अरज सुणौ, तुमे अंतरजामी हो;
जिनवर आइ मिलौ ।।१।।

तुं तौ पदम तणी परइ हो, परिमल प्रगट करइ,
मुझ मन मधुकर धरि हो ॥जि०॥२॥
वलि तुं इम जणिसि हो, पदम हुवइ जिहां,
जायइ मधुकर अहिनिशि हो ॥जि०॥३॥
पिण पदम सयाणउ हो, सरवर माहि रह्यौ,
वेलइं बीटाणउ हो ॥जि०॥४॥
तिहां चित्त न लोभइ हो, जल अति ऊछलइ,
भमरउ इम सोचइ हो ॥जि०॥५॥
तिम तइं कमलाकरि हो, सिद्ध पद आश्रयौ,
शिव वेलि सुहंकर हो ॥जि०॥६॥
बिचि भवजल बोलइ हो 'विनयचन्द्र' किम आवइ,
हिव किणि इक ओलइ हो ॥जि०॥७॥

॥ श्रीसुपार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—वारुनइ विराजइ हो हजा मारु लोवड़ी

सहज सुरंगा हो चंगा जिनजी सांभलौ,
विनय तणा जे वयण।
हुं तुझ चरणे हो आयौ ध्यायौ हेज सुं,
साचौ जाणी सइण ॥१॥
मूरति तोरी हो दिल चोरी नइ रही,
वसियकरण कियौ कोइ।
रंग दिखालइ हो टालइ जे दुख आपणौ,
ते गुण रसिया जोइ ॥२॥मूरति॥

अंतरजामी हो सामि तैं मन वेधियउ,
प्रगट्यउ प्रेम प्रमाण।
मैं इकतारी हो कीधी थारी वालहा,
तुं हिज जीवन प्राण॥३॥मू०॥
पिण मोसुं नाणइ हो प्राणै ही तुं नेहलउ,
एक पखी थइ प्रीत।
नीर अभावइ हो जिम दुःख पावइ माछली,
नीर तणइ नहीं चीत ॥४॥मू०॥
वलि इम जाण्यौ हो ताण्यौ तूटइ साहिबा,
हृदय विचारी दीठ।
जाय निराशी हो प्रभुसुं हांसी जे करइ,
ते तूं फल प्रापति लहै नीठ। ५॥मू०॥
ओलग चाहइ हो तोरी लाहइ कारणइ,
अन्य उपरि रहै लीण।
वाचा न काचा हो जे तुझनइ कहइ,
ते मूरख मतिहीण ॥६॥मू०॥
हुं गुणरागी हो सागी सेवक ताहरउ,
साहिब सुगुण सुपास।
भेद न राखइ हो भाखइ कवियण भावसुं,
'विनयचंद' सुविलास ॥७॥मू०॥

॥ श्रीचन्द्रप्रभु जिन स्तवनम् ॥

ढाल—आघा आम पधारो पूज अमघरि विहरण वेला

चन्द्रप्रभु नइ चन्द्र सरीखी, कान्ति शरीरइ सोहइ।
जेहनउ रूप अनूप निहाली, सुरनर सगला मोहइ ॥१॥
तिणसुं मो मन मिलियउ राज, साकर दूध तणी परइ ॥आंकणी॥
पिण सकलंकित चन्द्र कहावइ, अकलंकित मुझ स्वामी।
ते तउ अमृत रस नइ धारइ, प्रभु अनुभव रस धामी ॥२॥ति०॥
तेहनइ सन्मुख चपल चकोरा, प्रसरत नयणे जोवइ।
प्रभु दरसण देखण जग तरसै, प्रापति विण नवि होवइ ॥३॥ति०॥
चन्द्रकला ते विकला जाणौ, घटत बधत नइ लेखइ।
साहिब नइ तउ सदा सुरंगी, वाधइ कला विशेषइ ॥४॥ति०॥
निशिपति नारी मोहनगारी, रोहणि नइ रंग* रातौ।
प्रभु करणी परणी तजि तरुणि, अद्भुत गुण करि मातौ ॥५॥ति०॥
राहु निसत्त करै ग्रसि तेहनइ, जाणौ रू नौ फूंभौ।
तेहज राहु जिनेसर सेवा, करइ सदाइ ऊभौ ॥६॥ति०
सीस मानता देवाधिपनी, शशिहर एहवुँ जाणी।
'विनयचन्द्र' प्रभु चरणे लागौ, लंछन नउ मिश आणी ॥७॥ति०॥

॥ श्री सुविधिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—बिंदलीनी

सुविधि जिणंद तुम्हारी, मोनइ सूरति लागै प्यारी हो ॥
जिनवर अरज सुणौ ॥

* रस।

अरज सुणौ इण वेला,
दोहिला छइ फिर फिर मेला हो ॥१॥ जि० ॥
अवसर बिन कुण किणि पासइ,
आवै मनइ उल्हासइ हो ॥ जि० ॥
जिम कोइल पवनइ प्रेरी,
आवइ तजि ठौड़ अनेरी हो ॥२॥जि०॥
वलि लोक कूकइ कण सूकइ,
जलधर जौ अवसर चूकइ हो ॥ जि० ॥
पछै घोर घटा करि आवै,
तेह केहना मन मां भावइ हो ॥जि०॥३॥
तिम अवसर साधउ स्वामी,
तमे मोहन मूरति पामी हो ॥ जि० ॥
तेहनउ फल मुझनइ दीजै,
करि महिर कृतारथ कीजै हो ॥ जि०॥४॥
आज आप स्वारथ मीठौ,
मइं साच वचन ए दीठउ हो ॥जि०॥
जिम तरुवर छोड़इ पंखि,
फल फूल न देखइ अंखि हो ॥ जि० ॥५॥
निर्जल सर सारस मूकइ,
दृष्टान्त इत्यादिक चूकइ हो ॥ जि० ॥
पिण ते मुझ मनमां नावइ,
इक तुंहिज सदा सुहावइ हो ॥ जि० ॥६॥

तुम्हथी कुण मुझनइ वाल्हूं,
हुं तउ तुमहिज ऊपरि माल्हुं हो ॥ जि० ॥
साम्हउ जोवउ बहु खांतइ,
कहइ विनयचन्द इण भांतइ हो ॥जि०॥७॥

॥ श्रीशीतलजिनस्तवन ॥

ढाल—वेगवती ते बामणी, एहनी

अरज सफल करि माहरी, शीतलनाथ सनेही रे।
थोड़ा मां समजै घणुं, साचा साजन तेही रे ॥ १ ॥ अ० ॥
तुझ बिन मननी वातड़ी, केहनइ आगल कहियइ रे।
पासइ रहि सीखावियइ, तउ प्रभु सोह न लहीयइ रे ॥ २ ॥प्र०॥
तिण मेलउ दे मुझ भणी, जिम मन मां सुख थावइ रे।
जउ चिन्ता चित्त राखीयइ, दिवस दुहेलउ जायइ रे ॥ ३ ॥अ०॥
तैं मन लीधउ हेरिनइ, जिम भावै तिम कीजइ रे।
कहतां लागइ कारिमउ, अनुमानइ जाणीजइ रे ॥ ४ ॥ अ० ॥
जनम लगइ हिव माहरइ, तुं छइ अन्तरजामी रे।
निज सेवक जाणी करी, खमिजे वाल्हा खामी रे ॥ ५ ॥ अ० ॥
बीजउ सहु दूरइ रहउ, जउ फरसूँ तुझ छाया रे ॥
तउ अगणित सुख ऊपजइ, उल्लसइ माहरी काया रे ॥ ६ ॥ अ० ॥
प्राणैं ही नवि पहुंचियइ, तेहनइ तुरत नमीजें रे।
'विनयचंद्र' कहै तेहनउ, तउ कांइक मन भीजै रे ॥ ७ ॥ प्र० ॥

।। श्रीश्रेयांस जिन स्तवनम् ।।

ढाल—राजमती तें माहरो मनड़ौ मोहियौ हो लाल, एहनी

जिनजी हो मानि वचन मुझ ऊधरउ हो लाल,
महिर करी श्रेयांस वालेसर।
खेल चतुर्गति मां कियौ हो लाल,
वादी जिण परि वांस। वा० ।।१।।
पिण तुझनइ नवि सांभर्यौ हो लाल,
मंइ तउ किण ही वार ।। वा० ।।
हिव अनुक्रमि तुझनइ मिल्यउ हो लाल,
इहां नहीं झूठ लिगार ।। वा० ।।२।।
देखि स्वरूप संसार नउ हो लाल,
भय आवे नितमेव ।। वा० ।।
पिण जाणुं छुं ताहरी हो लाल,
आडी आस्यै सेव ।। वा० ।।३।।
सेव करइ ते स्वारथइ हो लाल,
तेहनी ताहरइ चित्त ।। वा० ।।
मोह हिया थी मेल्हिनइ हो लाल,
तुं बैठो नित नित्त ।। वा० ।।४।।
कर जोड़ी तुझ आगले हो लाल,
कहियइ वारंवार ।। वा० ।।
तउ ही तुं न करइ मया हो लाल,
स्यानउ प्राण आधार ।। वा० ।।५।।

कठिन हृदय छइ ताहरउ हो लाल,
बज्र थकी पिण जोर ॥ वा० ॥
मन हटकी नइ राखिस्यउ हो लाल,
करस्यइ कवण निहोर ॥ वा० ॥६॥
आप शरम जउ चाहस्यउ हो लाल,
नवि देस्यउ मुझ छेह ॥ वा० ॥
भवसायर थी तारस्यौ हो लाल,
'विनयचन्द्र' ससनेह ॥ वा० ॥७॥

॥ श्रीवासुपूज्य स्तवनम् ॥

ढाल—वधावानी

श्री वासुपूज्य जिनेसर ताहरी,
ओलग हो २ मंइ कीधी सही जी।
हिव आशा पूरउ प्रभु माहरी,
नहिं तरि हो २ तुझ नइ मेल्हिस्यइ नहीं जी ॥ १ ॥
तुझ साथइ कोई जोर न चालइ,
तउ पिण हो २ आड़ौ मांडिस्युं जी।
इम करतां जउ तुं वञ्छित नालइ,
तउ त्यारै हो २ तुझनइ छांडस्युं जी ॥ २ ॥
हिवणां तउ हुं छुं वाल्हा तारै जी सारै,
कहिस्यौ हो २ कह्यौ नहीं पछै जी।
बांह ग्रह्यांनी जे लाज वधारै,
एहवा हो २ नर थोड़ा अछै जी ॥ ३ ॥

जेहवी प्रीति कुटिल नारी नी,
जेहवी हो २ बादल केरी छांहड़ी जी।
जेहवी मित्राई भेषधारी नी,
तेहवी हो २ कापुरुषां री बांहड़ी जी ॥ ४ ॥
पिण तुम्हे सगुण सापुरिस सवाई,
पाई हो २ बांहड़ली मंइ तुम तणी जी ॥
सफल करउ जिनवर चित लाइ,
मीनति हो २ सी करियइ घणी जी ॥ ५ ॥
शिव सुख फल तुझ पासइ चाहूं,
तुं हीज हो २ सुरतरु मोरियउ जी।
आज बधावउ जाणी मन में उमाहुं,
हुं इज हो २ प्रेम अंकूरियउ जी ॥ ६ ॥
अधिकउ तउ ओछउ सेवक भाषइ नइ भाखइ,
साहिब हो २ तेह सदा खमइ जी।
विनयचन्द्र कवि कहइ तुम्ह पाखइ,
किणसुं हो २ माहरउ मन रमइ जी ॥ ७ ॥

॥ श्री विमलनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—चतुर सुजाणा रे सीता नारी

विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप।
मनड़ौ विलूधौ रे ताहरै रूप, जेम विलूधौ रे कमल मधूप ॥आं०॥
ताहरा रूप मांहे काई मोहनी, मिलवामी थइ चूंप ॥ १ ॥ म० ॥

वसीकरण छइ स्युं तुम्ह पासइ, अथवा मोहनवेलि ।।म०।।
साच कहो ते अंतर खोली, जिम थायइ रंग रेलि ।। म० ।। २ ।।
कहिस्यउ नहीं तउ मइ पिण सुणीयउ, लोक तणइ मुख आम ॥
मोहन रूप समौ नहीं कोई, वसीकरण नउ दाम ।।३ म० ।।
एहिज कारण साचउ जाणी, लागौ तुम्ह सुँ नेह ।
ताहरी मूरति चित्त मां चहुटी, खिण न खिसइ नयणेह ।।४ म०।।
पिण फल मुझ नइं न थयउ कांइ, अमरष आवै तेह ।
फलदायक तौ तेहिज थायइ, जे गिरुआ गुण गेह ।। ५ म० ।।
वलि विस्मय मन मांहें आणी, मंइ ग्रहियउ सन्तोष ।
साकर मां कांकर निकसइ ते, साकर नौ नहीं दोष ।। ६ म० ।।
सुगुण साहिब तूँ सुखनउ दाता, निर्मल बुद्धि निधान ।
'विनयचन्द्र' कहइ मुझनइ आपौ, सुगतिपुरी नउ दान ।। ७ म०।।

।। श्री अनंतनाथ स्तवनम् ।।

ढाल—पथीड़ा नी

एक सबल मन में चिन्ता रहै रे,
न मिलयउ साहिब जीवनप्राण रे ।
श्वास तणी परि मुझनइं सांभरें रे,
जिम चकवी केरइ मन भाण रे ।।१ ए० ।।
पिण ते शिवमन्दिर मांहें वसै रे,
कागल मात्र न पहुँचे कोइ रे ।
प्राणवल्लभ दुर्लभ जिनराजनी रे,
संदेसे ओलग किम होइ रे ।। २ ए० ।।

देव अवर सूँ कीजइ प्रीतड़ी रे,
खिण इक आवइ मन मां द्वेष रे।
इण बातइं तउ स्वाद नहीं किसउ रे,
चुप करि रहियइ तिणे सुविशेष रे ॥३ ए० ॥

जेह आपणनइं चाहइ दूरथी रे,
धरियइ दिन प्रति तेहनउ ध्यान रे।
आडंबर देखी नवि राचियइ रे,
ए छइ चतुर पुरुष नउ ज्ञान रे ॥ ४ ए० ॥

मुँह मीठा धीठा हीयड़इ तणा रे,
निगुण न पालै किण सुँ नेह रे।
अवगुण ग्रहिवा थायइ आगला रे,
काम पड्यां द्यै लांबौ छेह रे ॥ ५ ए० ॥

ते टाली मिलियइ सुगुणा भणी रे,
जे जाणइ सुख दुखनी बात रे।
सुपनइ ही नवि करियइ वेगला रे,
ज्यांहनइ दीठां उल्हसै गात रे ॥ ६ ए० ॥

नाथ अनंत भवे नवि वीसरइ रे,
जे ससनेही सगुण सुरंग रे।
प्रभु सुँ 'विनयचन्द्र' कहै माहरौ रे,
लागौ चोल तणी पर रंग रे ॥ ७ ए० ॥

॥ श्री धर्मनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—सासू काठा हे गोहूँ पीसाय आपण जास्यूँ मालवइ, सोनार भणइ

वाल्हा सुणि हो मुझ अरदास, मइ अभिलाष इसउ धर्यो,
मोसुं महिर करउ।
वाल्हा काढूं हो मननी भास,
जे तुझ आगइं पतगयौं ॥ मो० ॥१॥
वाल्हा तुं तउ हो धरम धुरीण,
पर उपगारी परगड़उ ॥ मो० ॥
वाल्हा मुझनइ हो देखी दीण,
सेवक करिनइ तेवड़उ ॥ मो० ॥२॥
वाल्हा स्युं कहुं माहरइ हो मुक्ख,
मंइ पगि २ लही आपदा ॥ मो० ॥
वाल्हा टालउ हो ते सहु दुक्ख,
सुख आपौ अविचल सदा ॥ मो०॥३॥
वाल्हा पूरषइ हो परषद मांहि,
धरम देशना तूँ दियइ ॥ मो० ॥
वाल्हा सगले हो सुणि रे उमाहि,
मइं न सुणी इक पापियइ ॥ मो० ॥४॥
वाल्हा लागौ हो नहीं उपदेश,
छांट घड़इ जिम चीगटइ ॥ मो० ॥
वाल्हा तेतउ हो न्याय अजेस,
कर्म अरि कहो किम कटइ ॥ मो० ॥५॥

वाल्हा ताहरउ हो नहीं कोई दोष,
सोस किसउ कीजइ हिवइ ॥ मो० ॥
वाल्हा वलि स्यउ कीजइ हो रोष,
आतम कृत कर्म अनुभवइ ॥ मो० ॥६॥
वाल्हा पिण तुं हो सकज सदीव,
धर्मनाथ जिन पनरमउ ॥ मो० ॥
वाल्हा एहिज बात मइ जीव,
'विनयचन्द्र' ना दुख गमउ ॥ मो० ॥७॥

॥ श्री शान्तिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—बिछियानी

हांरे लाल शान्ति जिनेश्वर सांभलउ,
माहरइ मन आवइ ख्याल रे लाल।
हुँ तुझ चरणे आवियउ, तुँ न करइ केम निहाल रे लाल ॥१॥
माहरउ मन तुझ मइं वसि रह्यउ ॥ आंकणी ॥
जिम गोपी मन गोविंद रे लाल, गौरी मन शंकर वसइ।
वलि जेम कुमुदिनी चंद रे लाल ॥ २ मा० ॥
बात कहीजइ जेहनइ, जे मन नउ हुइ थिर थोभ रे लाल।
जिण तिण आगलि भाषतां, वाल्हेसर न चढइ शोभ रे लाल ॥३॥
तिण कारणि मइं माहरी, सहु बात कही तजि लाज रे लाल।
तुँ मुखथी बोलइ नहीं,
किम सरिस्यइ मन काज रे लाल ॥४ मा० ॥

हांरे लाला तूँ रसियउ बातां तणौ,
सुणिनै नवि द्यै को जबाब रे लाल।
मन मिलीयां बिन प्रीतड़ी,
कहो नइ किम चढियइ आब रे लाल॥ ५ मा० ॥
हांरे लाल निज फल तरुवर नवि भखइ,
सरवर न पियइ जल जेम रे लाल।
पर उपगारइं थाय ते, तुं पिण जिनजी हुइ तेम रे लाल॥६ मा०॥
घणुं २ कहिये किसुँ, करिज्ञ मुझ आप समान रे लाल।
रयणि दिवस ताहरउ धरइ,
कवि 'विनयचन्द्र' मन ध्यान रे लाल॥७ मा०॥

॥ श्री कुंथुनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—ईडर आंबा आंमली रे

बहु दिवसां थी पामियौ रे, रतन अमोलख आज।
जतने करि हुँ राखस्युँ रे, जगवल्लभ जिनराज॥१॥
मोरइ मन जाग्यउ राग अथाग, मइं तउ पाम्यउ वारू लाग।
माहरउ छइपिण मोटउ भाग, करस्युं भवसागर त्याग॥आंकणी॥
अणमिलियां हुँ जाणतउ रे, जिनवर केहवा होय।
मिलियां जे सुख उपनउ रे, मन जाणइ छइ सोय॥ २ मो० ॥
मइं साहिब ना गुण लह्या रे, आणो पूरण राग।
कोइल आंबा गुण लहै रे, पिण स्युं जाणै काग॥ ३ मो० ॥
जे वेधक सहु बातना रे, गुण रस जाणइ खाश।
मूरख पशु जाणइ नहीं रे, सेलड़ो कड़ब मिठास॥४ मो० ॥

प्रभुनी मुद्रा देखिनइ रे, मुझनइ थइ रे निरान्ति।
हिव सेवा करिवा तणी रे, मनड़ा मइं छइ खान्ति ॥ ५ मो० ॥
नेह अकृत्रिम मइं कियउ रे, कदे न विहड़इ तेह।
दिन २ अधिकउ उलटइ रे, जिम आषाढ़ो मेह ॥ ६ मो० ॥
एक घड़ी पिण जेहनइ रे, बीसार्यो नवि जाय।
'विनयचन्द्र' कहइ प्रणमियइ रे, कुन्थु जिनेश्वर पाय ॥७ मो०॥

॥ श्री अरनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—मोतीनी

तुझ गुण पंकति बाड़ी फूली,
मुझ मन भमर रह्यउ तिहां भूली।
साहिबा कांइ मउज करौ नइ,
साहिबा कांइ मउज करउ ॥ आंकणी ॥
मउज करउ कांई अंग सुहाता,
सुणि सुणि नै विगताली बातां ॥१॥सा०॥
तुझ पद कज केतकी मइं पाई,
तसु आवै खुशबूह सहाई ॥ सा० ॥
मोहन भाव मालती महकै,
गरुआनी संगति करि गहकइ ॥२॥सा०॥
सुख सहस्रदल कमल विकास्यौ,
समतारस मकरंदइ वास्यउ ॥ सा० ॥
चित्त उदार ते चंपक जाणौ,
दिल गंभीर गुलाब वखाणौ ॥सा०॥३॥

कुंद अनै मचकुंद विलासी,
कलि कीरति उज्ज्वल प्रतिभासी ॥सा०॥
पाडल प्रीति प्रतीत प्रबोधइ,
मरुक दमण सज्जन गुण सोधइ ॥सा०॥४॥
केवड़ानी परि तुं उपगारी,
फूल अमूल गुणे करि धारी ॥सा०॥
फल सहकार सकारइं फाबै,
द्राखते द्वेषनी रेखनइ दाबै ॥सा०॥५॥
वलि संतोष सदाफल सदली,
करुणा रूप सुकोमल कदली ॥सा०॥
नारंगी ते प्रभु निरागइं,
जंभीरी युगतें करि जागइं ॥सा०॥६॥
फूल अनइ फल इत्यादिक छै,
प्रभु ना गुण इण मांहि अधिक छइ ॥सा०॥
नहीं शिव पोइणि ते तुझ आगइ,
श्री अरनाथ विनयचंद मांगइ ॥सा०॥७॥

॥ श्री मल्लिजिन स्तवनम् ॥

ढाल—राजिमती राणी इण परि बोलइ

मल्लि जिनेसर तुं परमेसर,
तुझ नइं सुरनर चर्चित केसर ॥म०॥
तुझ सरिखा ते पुण्ये लहिय,
देखी देखी मन गह गहीयइ ॥म०॥१॥

तुं सद्भाव तणौ छइ धारक,
दुष्ट दुरासय नौ निर्वारक ॥म०॥
तिण कारण माहरौ मन लागौ,
भेद अपूरव सहजइ भागउ ॥म०॥२॥
देव अवर सुं जे रहइ राता,
तेहनइ तउ छइ परम असाता ॥ म० ॥
इम जाणी मुझ मन ऊमाहइ,
तुझ मुख कमल नरषिवा चाहइ ॥म०॥३॥
तुं छइ माहरह सगुण सनेही,
तउ करो पड़वज कीजै केही ॥ म० ॥
पिण तुँ मुगति महल मां वसियउ,
संपूरण समता गुण रसियउ ॥म०॥४॥
अवसर आयइ नवि संभारइ,
केम भवोदधि हेलइ वारइ ॥ म० ॥
हिव हुं निश्चल थइ नइ बैठउ,
अनुभव रस मन मांहे पइठउ ॥म०॥५॥
जे खल नइ गुल सरिखा जाणइ,
ते स्युं नवलौ नेह पिछाणइ ॥ म० ॥
इण हेतइ माहरउ मन फिरियउ,
जाणे पवन हिलोलयउ दरियउ ॥म०॥६॥
साची भगति कीधी मइं ताहरी,
तउ मन इच्छा पूरउ माहरी ॥ म० ॥
विनयचन्द्र कहै ते गुणवंता,
जे टालै मनड़ानी चिन्ता ॥म०॥७॥

।। श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनम् ।।

ढाल—ओलूंनी

मुनिसुव्रत मन माहरौ जी, लागौ तुम लगि थेट।
पिण तुँ मींट न मेलवै जी, ए व्रत दुक्कर नेट ॥१॥
जिनेश्वर बणस्यै नहीं इम बात ।। आंकणी ।।
मुझ स्वभाव छै तामसी जी, रहिन सकइ खिण मात ॥२॥जि०॥
हुँ रागी पिण तुँ अछइ जी, नीरागी निरधार।
मावै नहीं इक म्यान मंइ जी तीखी दोइ तरवार ॥जि०॥३॥
जाणपणउ मइ जाणीयउ जी, जिनवर ताहरौ आज।
तक उपर आव्यउ हतो जी, तैं नवि राखी लाज ॥४॥जि०॥
जे लोभी तुझ सरिखा जी, वंछित नापइ रे अन्त।
मुझ सरिखा जे लालची जी, लीधां विण न रहंत ॥५॥जि०॥
एह अणख छै आपणौजी, सदा न चलस्यै रे एम।
करि मुझ नइ राजी हिवैं जी, जिम वाधइ बहु प्रेम ॥६॥जि०॥
तुं मुझ नइ नवि लेखवइ जी, देखी सेवक वृन्द।
तारा तेज करै नहीं जी, विनयचन्द्र विण चन्द्र ॥७॥जि०॥

।। श्री नमिनाथ स्तवनम् ।।

ढाल—भाभाजी हो डुंगरिया हरिया हुवा

साहिबा जी हो तुं नमि जिनवर जगधणी,
सरणागत साधार म्हांरा साहिबा जी।
पुण्य संयोगइ ताहरउ,
मैं दीठउ दीदार म्हां सा० ॥१॥

चतुरपणानी ए छइ चातुरी,
मिलीयइ तुझ नइ धाय म्हां० ।
सा० तो तुं चित चिन्ता हरै,
बादल नइ जिम वाय ॥ म्हां० ॥२॥ च० ॥
सा० प्रीति हुवइ जिहां प्रेम नी,
उपजइ तिहां परतीत म्हां० ।
करि करि नइ सुं कीजियइ,
प्रेम विहूणी प्रीति म्हां० ॥ ३ ॥ च० ॥
देव अवर मीठा मुखे,
हृदय कुटिल असमान म्हा० ।
जांणि पयोमुख संग्रह्यां,
ते विषकुम्भ समान म्हां० ॥ ४ ॥ च० ॥
सा० इम जाणी मन ओसर्यो,
पाछौ त्यांथी नेट म्हां० ।
फेटि निगुण नी टलि गई,
थई सुगुण नी भेट म्हां० ॥ ५ ॥ च० ॥
इतला दिन मन मां हतउ,
उदासीनता भाव म्हां० ।
ताहरइ मिलिवइ ते गयउ,
तत्खिण तजि निज दाव म्हा० ॥६॥ च० ॥
मंइ तुझ सेवा आदरी,
होइ रह्यउ तुझ दास म्हां० ।

जिण सुरतरु फल चाखियउ,
कुफल गमइ नहीं तास म्हां० ॥ ७ ॥ च० ॥
स्युं कहिरावइ मो भणी,
तारि तारि करतार म्हां० ।
विनयचन्द्र नी वीनति,
हित धरी नइ अवधार । म्हां० ॥८॥ च० ॥

॥ श्री नेमिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—ऊभी राजुलदे राणी अरज करै छै

थांहरी तौ मूरति जिनवर राजै छइ नीकी,
शिवसुन्दरि सिर टीकी हो ।
राणी शिवादेवीजी रा जाया
नेमजी अरज सुणीजै ।
अरज सुणीजै कांई करुणा कीजै,
म्हांनइ मुजरौ दीजै हो ॥१॥रा०॥
ते दिन वाल्हां मुझनै कइयइ आस्यै,
तुम थी मेलौ थास्यइ हो । रा० ।
अंतर तुम्हारउ माहरउ दूरइ व्रजस्यइ,
अंगइ सुख ऊपजस्यइ हो ॥२॥रा०॥
हिवणा तउ तुमनइ हियड़ा माँहे धारूँ,
इण भांतइ दिल ठारूँ हो । रा० ।
आखर थे पिण समझणदार सनेहा,
नवि दाखविस्यौ छेहा हो ॥३॥रा०॥

जे तुम सेती प्रेम प्रयासइ जी विलगा,
ते किम टलस्यै अलगा हो। रा०।
प्रीति लगास्यइ ते तउ जिम रंग अकीकी,
पड़ै नहीं जे फीकी हो ॥४॥रा०॥
प्राणपियारा साहिब थे छउ जी म्हांरै
मुझ नइ छइ तुम्ह सारै हो। रा०।
इम जाणी नइं प्रत्युपकार करंता,
राखौ छौ सी चिन्ता हो ॥५॥रा०॥
स्युं कहुं कीरति राज तुम्हारी,
तुमे छउ बाल ब्रह्मचारी हो। रा०।
राजुल नारी ते विरहागर क्यारी,
पोतानी कर तारी हो । रा० ॥६॥
कहियउ जी म्हारौ अलवेसर अवधारउ,
हुं छूँ दास तुम्हारौ हो। रा०।
विनयचन्द्र प्रभु तुमे वरदाई,
मउज सवाई थउ काइ हो ॥रा०॥७॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—इण रिति मोनइ पासजी सांभरइ

जिनवर जलधर उलट्यौ सखि, वयणे वरसै मेह।
जेहनइं आगमनइ करी सखि, ऊपज्यौ प्रेम अछेह रे॥
नर नारी बाध्यउ नेह रे, ठाढी थइ सहुनी देह रे।
पसर्यो चित भुइ मइ त्रेह रे, उपस्यउ खल कंदल खेह रे ॥१॥

एहवा म्हांरे पास जी मन वसइ ।। आंकणी ।।
वाणी ते हिज जिण सजी सखि, गुहिर घटा घन घोर ।
ज्योति भबूके बीजली सखि, ए आडम्बर कोइ और रे ।
प्रमुदित भविजन मोर रे, पिण नहीं किहां कुमति चोर रे ।
कंदर्प तणो नहीं जोर रे, अन्धकार न किण ही कोर रे ।।२।।ए०।।

महिर करइ सहु उपरइ सखि, लहिर पवन नी तेह ।
सुर असुरादिक आवतां सखि, पीली थइ दिशि जेह रे ।।
जाणै कुटज कुसुम रज रेह रे, जिहां धर्म ध्वजा गुण गेह रे ।
ते तउ इन्द्र धनुप वणेह रे, अभिनव कोई पावस एह रे ।।
इम निरखै सहु नयणेह रे ।।३।।ए०।।

चतुर पुरुष चातक तणी सखि, मिट गई तिरस तुरन्त ।
हरिहर रूप नक्षत्र नउ सखि, नाठउ तेज नितन्त रे ।।
थयउ दुरित जवासक अन्तरे. मुनिवर मंडुक हरखंत रे ।
जिहां विजयमान भगवंत रे. विकशित त्रय भुवन वनंत रे।।४।।ए०।।

सुर मधुकर आलंबिया सखि. पदि कदिंब अरविन्द ।
विरही जेह कुदर्शनी सखि. पावइ दुख नइ दन्द रे ।।
युद्ध थी विरम्यां राजिन्द रे, हरिया थया सुगुण गिरिंद रे ।
विस्तृति मति सरति अमंद रे, पल्लवित वेलि सुख कन्द रे ।।
फेड्या सगलाई फंद रे ।।५।।ए०।।

झिर मिर झिर मिर झर करइ सखि, नावइ किम ही थाह ।
प्रतिबोधित जन जेहवा सखि, ल्यइ बगि जिण मां लाह रे ।।

हंसा सर सांभरियाह रे, ते जन धरै मुगतिनी चाह रे।
तिहां दीसइ रतन घणाहरे, जाणै नवल ममोला वाह रे ॥६॥ ए०
जीवदया जिहां जाणियइ सखि नीली हरी भरपूर।
बीज तणइ रूपइ भलौ सखि, प्रगट्यउ पुण्य अंकूर रे ॥
दुख दोहग गया सहु दूर रे, इम वर्षा भावइ भूरि रे।
प्रभुना गुण प्रबल पडूर रे, कहै 'विनयचन्द्र' ससनूरि रे ॥७॥ ए०

॥ श्री महावीर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—हाडानी

मनमोहन महावीर रे त्रिसला रा जाया,
ताहरा गुण गाया, मनड़ा में ध्याया।
तौही रे ताहरा खातर में नहीं रे,
इवड़ी सी तकसीर रे त्रि० आज्ञाकारी रे हुँ सेवक सही रे ॥१॥
तुझसुं पूरवइ जेह रे,
त्रि० रंग लागौ रे चोल मजीठ ज्युं रे।
दिन दिन वाधइ तेह रे,
त्रि० भला रे व्यवहारी केरी पीठ ज्युँ रे ॥२॥
निशिदिन मंइ कर जोड़ रे,
त्रि० ओलग कीधी स्वामी ताहरी रे।
भव संकट थी छोड़ि रे,
त्रि० अरज मानौ रे एहिज माहरी रे ॥३॥
मंह आलंबी तुझ बाँहि रे,
त्रि० कहौ रे निरासी तउ किम जाइयइ रे।

धीणउ हुवइ घर मांहि रे,
त्रि० लूखौ रे तौ स्या माटे खाइयइ रे ॥४॥
तार्यां तें सुरनर फोड़ि रे,
त्रि० पांते तरी रे शिव सुख अनुभवइ रे।
मुझमां केही खोड़ रे,
त्रि० तारै नहीं रे क्यों भुझनइ हिवइ रे ॥५॥
ओछां तणउ सनेह रे,
त्रि० जाणै रे पर्वत केरा वाहला रे।
बहतां बहै एक रेह रे,
त्रि० पछइ विछड़इ रे ज्युं तरु डाहलारे ॥६॥
तिण परि नेहनी रीति रे,
त्रि० नहीं छैरे चरम जिनेसर आपणी रे।
'विनयचन्द्र' प्रभु नीति रे,
त्रि० राखउ स्वामी नइ सेवक तणी रे ॥७॥

॥ कलश ॥

ढाल—शांति जिन भामणइ जाऊँ

इण परि मंइ चौबीसी कीधी, सद्भावै करि सीधीजी।
कुमति निकेतन आगल दीधी, सुमति सुधा बहु पीधीजी ॥१॥ इ०
इण में भेद तणी छइ दृढ़ता, गुण इक इक थी चढ़ताजी।
सज्जन पंडित थास्यइ पढ़ता, दुर्जन रहस्यइ कुढ़ताजी ॥२॥ इ०
पूरण ज्ञान दशा मन आणी, वेधक वाणी वखाणीजी।
विबुध भणी अवबोध समाणी, मूरख मति मूझाणीजी ॥३॥ इ०

बोध बीज निर्मल मुझ हुऔ, दियौ दुरति नइ दूऔजी।
स्तवना नौ मारग छइ जूअउ, जाणै ते कोई गिरुऔजी ॥४॥ इ०

संवत सत्तर पंचावन वरषइ, विजयदशमी दिन हरषइजी।
राजनगर माँ निज उतकरषइ, ए रची भक्ति अमरषइजी ॥५॥ इ०

श्रीखरतरगण सुगुण विराजइ, अंबर उपमा छाजइजी।
तिहां जिनचन्द्रसूरीश्वर गाजइ, गच्छपतिचन्द्र दिवाजइजी ॥६॥

पाठक हर्षनिधान सवाई, ज्ञानतिलक सुखदाईजी।
विनयचन्द्र तसु प्रतिभा पाई, ए चौवीसी गाईजी ॥७॥ इ०

इति चउवीसी समाप्ता।

विहरमान जिनवीसी

॥ श्री सीमन्धर जिन स्तवन ॥

ढाल—रसियानी

श्री सीमंधर सुन्दर साहिबा, मन्दरगिरि समधीर सलूणा।
श्री श्रेयांस नरेश्वर नन्दन, मुझ हीयड़ानुं रे हीर सलूणा ॥१॥
सोवन वरणइ रे दीपइ देहड़ी,
सुमनस सेवित पाय सलूणा।
भद्रशाल[1] लक्षण करि राजतउ,
भेट्यां भव दुःख जाय सलूणा ॥२॥
चन्द्र सूरज ग्रह गण सहु प्रभु तणइ,
चरण सरण करइ नित्य सलूणा।
जाणे रे जीत्या आप प्रभा भरइ,
करइ प्रदक्षिणा कृत्य सलूणा ॥३॥
मध्य विदेह विजय पुष्कलावती,
नयरी पुण्डरिकिणी सार सलूणा।
तिहां विचरइ भविजन मन मोहता,
सत्यकी मातु मल्हार सलूणा ॥४॥
मेरु महीधर परि अविचल रहइ,
मुझ मन एहिज रे देव सलूणा।
ज्ञानतिलक गुरु पदकज भमरलउ,
'विनयचन्द्र' करइ सेव सलूणा ॥५॥

॥ श्री युगमंधर जिनस्तवन ॥

ढाल—नाटकियानी

बीजा जिनवर वंदियइ, युगमंधर स्वामी लो अहो युग० ।
मइं तउ सेवा जेहनी, बहु पुण्ये पामी लो अहो बहु० ॥
अध्यातम भावइं रह्यौ, मुझ अन्तरजामी लो अहो मुझ० ।
ललि ललि लागु पाउले, युगतइ शिरनामी लो अहो युगते० ॥१॥
शान्त थई अंतर गुणे, दुसमन सहु दमिया लो अहो दु० ।
दान्त पणइ अविकार थी, विषयादिक वमिया लो अहो वि० ॥
निर्धन पणि परमेश्वरु, त्रिभुवन जन नमिया लो अहो त्रि० ।
ए अचरिज प्रभु गुण तणउ, शिव सुख मन रमिया लो अहो शि०
रूप अधिक रलियामणो सो वन वन काया लो अहो ओ० ।
शत्रु मित्र समता धरइ, सम रंक नइ राया लो अहो स० ॥

राग न रीस न जेहनइ,
मद मदन न माया लो अहो म० ।
सोहग सुन्दर ना गुणइ,
भवियां मन भाया लो अहो भ० ॥३॥
सज्जन जन मन रीझवइ,
नीराग सभावइं लो अहो नी० ।
विषय विभाव थी वेगलउ,
सहु विषय दिखावइ लो अहो स० ॥
सकल गुणाश्रय निज भज्यउ,
निर्गुणता लयावइ लो अहो नि० ॥

सकल क्रिया गुण दाखवी,
अक्रिय रुचि पावइ लो अहो अ० ॥४॥
सुदृढ़ राज कुल दिनमणी,
जसु माय सुतारा लो अहो ज० ।
गज लंछन अति गहगहइ,
सहुनइ सुखकारा लो अहो स० ॥
वप्र विजय मां विचरता,
ज्ञानतिलक उदारा लो अहो ज्ञा० ॥
विनयचन्द्र विनयइं कहइ,
जिन जगत आधारा लो अहो जि० ॥५॥

॥ श्री बाहुजिन स्तवन ॥

ढाल—योगिनानी

बाहु जिनेश्वर वीनवुं रे,
बांह दिउ मुझ स्वामि हो जिनजी बा० ।
भवसायर तरवा भणी रे,
तारक ताहरु नाम हो जिनजी बा० ॥१॥
जिणंदराय दर्शन दीजो आज,
जिणंदराय जिम सीझइ मुझ काज । आंकणी ॥
कल्पतरु कलि मां अछउ रे,
वंछित देवा काज हो जिनजी वं० ।
तुम बांहि अवलंबतां रे,
लहियइ भव जल पाज हो जिनजी ल० ॥२॥जि०॥

पंच कल्पतरु अवतर्या रे,
अंगुलि मिसि तुम्ह बाँहि हो जिनजी अ० ।
तुम्ह दानइ किंकर थका रे,
सेवइ तेह उच्छाहि हो जिनजी से० ॥३॥ जि०॥
सुक्ख अतींद्रिय द्यौ तुम्हे रे,
ते गुण नहीं ते मांहि हो जिनजी ते० ।
तिण हेतइ परगट नहीं रे,
सांप्रत मनुजन मांहि हो जिनजी सां०॥४॥
सुग्रीव कुल मलयाचलइं रे,
चन्दन विजयानन्द हो जिनजी चं० ।
विनयचन्द्र वंदइ सदा रे,
त्रीजा श्रीजिनचन्द्र हो जिनजी ॥५॥॥जि०॥

॥ श्रीसुबाहु जिन स्तवनम् ॥

देशी छौंडीनी

श्री सुबाहु जिनवर नइं नमियइं, उमाहउं बहु आणी ।
जस प्रभुता नउ पार न लहियइ, किम कहि सकियइ वाणी ॥१॥
प्राणी प्रभु लीधु चित्त ताणी, प्रभु मूरति उपशमनी खाणी,
मुझ मन ए ठकुराणी रे प्रा० ॥
ज्ञानी जाणइ पिण न कहायइ, सर्व थी जस गुण खाणी ।
परिमलता गुणनी अति निर्मल, जिम गंगा नउ पाणी रे॥२॥प्रा०॥

रंगाणी मुझ मतिए रंगइ, समकित नी सहिनाणी।
कुमति कमलिनी लवन कृपाणी, दुख तिल पीलण घाणी रे ॥३॥
शक्ति अपूर्व सहज ठहराणी, दुगति दूर हराणी।
वाणी तेहिज वेम्हुं वेधइ, कीरति तास गवाणी रे ॥४॥ प्रा० ॥
निसढ़ नरेश्वर सुत शुभनाणी, माता भू नन्दा जाणी।
विनयचन्द्र कवि ए कही वाणी, सुणतां अमी समाणी रे ॥प्रा०॥

॥ श्रीसुजात जिन स्तवनम् ॥

ढाल—भांभरिया मुनिवरनी देशी

श्री सुजात जिन पंचमा जी, पंचम गति दातार।
पंचाश्रव गज भेदिवा जी, पंचानन अनुकार ॥ १ ॥
पंचम ज्ञान प्रपंच थी जी, धर्मादिक पणि द्रव्य।
जेह त्रिकाल थकी कहै जी, सद्दहै मनि तेह भव्य ॥ २ ॥
पंच बाण नइ टालिवा जी, पंच मुखोपम जेह।
विरहित पंच शरीर थी जी, अकल अलख गुण गेह ॥ ३ ॥
पंचाचार विचार सुँ जी, दाखइ जे व्यवहार।
कल्पातीत पणइ रहइ जी, चरित अनेक प्रकार ॥ ४ ॥
देवसेन नृप नन्दनो जी, देवसेना जसु मात।
विनयचन्द्र सोहइ भलौ जी, रवि लंछन विख्यात ॥ ५ ॥

।। श्रीस्वयंप्रभ जिन स्तवनम् ।।

ढाल—लाछलदेवी मल्हार

श्री स्वयंप्रभ, अतिशय रत्न निधान,
आज हो हेजइ रे हेजालू हियड़ै हरखियइजी ।।१।।
जिम चकवा दिनकार मोरां नइ जलधार,
आज हो नेहइं रे गुण गेही नयणे निरखियइजी ।।२।।
जिहां विचरै प्रभु एह, तिहां होइ सुख अछेह,
आज हो पुण्यें रे परमेश्वर प्रेमइं परखियइजी ।।३।।
दुख महोदधि पाज, भव जल तारण जहाज,
आज हो रंगइ रे रलियालउ साहिब सेवियइ जी ।।४।।
मित्रभूति कुलचन्द, सुमंगला नौ नन्द,
आज हो वंदइ रे विनयचन्द्र हित आणी हियइ जी ।।५।।

।। श्री ऋषभानन जिन स्तवनम् ।।

ढाल—आवौ आवौ जी मेहलै आवंतइ

ऋषभानन जिनवर वंदी, हुँतौ थयौ रे अधिक आनन्दी ।
करि कर्म तणी गति मदी, आतम सुं दुर्मति निंदी ।
आवौ आवौ साहिब सुखकन्दा, मुझ नयन चकोर नइ चन्द्रा ।
आवौ आवौ जी सेवक संभारै ।।आकणी।।
संभारइ तेह सहेजा, स्युं संभारइ रे निहेजा ।।१ आ० ।।
जोड्यौ जे तुम सुं नेह, जाणे पर्वत केरी रेह ।।आ०।।
जमवारइ जायइ नहीं तेह, जिम आई धरायें मेह ।।२ आ०।।

लीणौ तुम पद अरविन्दइ, मुझ मन मधुकर आनन्दइं ।।आ०।।
न रहइ ते दूर लगार, शुक नन्द यथा सहकार ।।३ आ०।।
तुम्ह बिन हुं अवरन चाहुँ, अविचल निज भावइं आराहुं ।।आ०
निरालंबन ध्यानइ ध्याउँ, क्षीरनी परइं मिलि जाउँ ।।४ आ०।।
वीरसेना नन्द विराजइ, कीर्तिराज कुलइ निज छाजै ।।आ०।।
सिंह लंछन दुख गज भांजइ, कवि 'विनयचंद्र' नइ निवाजइ ।।५।।

।। श्री अनन्तवीर्य जिनस्तवनम् ।।

राग—चन्द्राउलानी

अनंतवीर्य जिन आठमउ रे, जीत्या कर्म कषाय ।
नाम ध्यान थी जेहनइ रे, अष्ट महा सिद्धि थाय ।।
अष्ट महा सिद्धि जेहनइ नामइ, सहज सौभाग्य सुयशता पामइ
जे इच्छित होइ सुख नइ कामइ,
तेह लहइ नित ठामो ठामइं जी ।।१।। विहरमानजी रे ।
ईति उपद्रव सवि टलइ रे, जिहां विचरइ जिनराज ।
भीति रीति पसरइ नहीं रे, जाणि गंध गजराज ।।
जाणि गंध गजराज सोहावइ, सुभग दान ना भर वरसावइ ।
कपट कोट दहवट्ट गमावइ,
नित नयवाद घंटा रणकावइजी ।।२ विह०।।
अतिशय कमला हाथिणी रे, परिवरियउ निशदीश ।
सहजानन्द नन्दन वनइ रे, केलि करइ सुजगीश ।।
केलि करइ परमारथ जाणी, समता तटिनी सजल वखाणी ।

आगम सूँडा दण्ड प्रमाणी,

परमत गज संगति नवि आणी जी ॥३ विह०॥

शुक्ल ध्यान उज्वल तनु रे, क्षायिक दर्शन ज्ञान।

कुँभस्थल जसु दीपता रे, महिमा मेरु समान॥

मेरु समान उत्तुँग ए देव, भविक कोड़ि जसु सारइ सेव।

अचिर अभंग विचित्र कलायइ,

तउ तस चरण सरोज मिलायइजी ॥४॥ विह०॥

मेघ नृपति कुल सुर पथइं रे, भासुर भानु समान।

मंगलावती माता तणउ रे, नन्दन गुणह निधान॥

गुण निधान गर्जित गज लंछन, वर्ण अनोपम अभिनव कंचन।

भविक लोक नइं नयणानन्दन,

'विनयचन्द्र' करइ नित नित वंदनजी ॥५ विह०॥

॥ श्री सूरप्रभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—मांहरी सही रे समाणी

सूरप्रभु प्रभुता तइं पामी

तोरा चरण नमुँ शिर नामी रे। मोरा अंतरजामी॥

देव अवर दीठा मंइ स्वामी,

पिण ते क्रोधी कामी रे॥१॥ मो०॥

तुझ मुद्रानइ जोड़इ नावइ,

तउ सेवक दिल किम आवइ रे। मो०।

हँस सोभ बग जाति न पावइ,
यद्यपि धवल सभावइं रे ॥२॥ मो० ॥
महिमा मोटिम तणी बड़ाई,
किम लहइ ते सुघड़ाइ रे। मो०।
तरु भावइ तउ छइ इक ताई,
पिण अंब नींब अधिकाई रे॥३॥ मो०॥
पंखी जातइं एकज हूआ, पिण काग कोइल ते जूआ रे। मो०।
देव अवर तुम्ह थी सहु नीचा, तुम्हे तउ गुणाधिक ऊँचा रे॥४॥
चन्द्र लंछन जिन नयणानन्दा, 'विनयचन्द्र' तुम्ह बन्दा रे॥५ मो०

॥ श्री विशाल जिनस्तवनम् ॥

ढाल—थारे महिला ऊपरि मेह झरोखे बीजली हो लाल झरोखइ बीजली

श्री सुविशाल जिणंद, कृपा हिव कीजिए हो लाल कृपा०।
बांह ग्रह्यां नइ छेह, कहो किम दीजियइ हो लाल कहो०॥
सहज सलूणा साहिब, नेह निवाहियइ हो लाल नेह०।
मुझ परि कूरम दृष्टि, तुम्हारी चाहियइ हो लाल तु०॥१॥
चातक नइ मन मेह, बिना को नवि गमइ हो लाल बि०
हंस सरोवर छोड़ि कि, छीलर नवि रमइ हो लाल कि छी०
गंगा जल झील्या ते, द्रह जल नादरै हो लाल कि द्रह०
मोह्या मालती फूल ते, आउल स्युं करइ हो लाल कि आ०॥२॥
भवि भवि तुं मुझ स्वामी, सेवक हुं ताहरौ हो लाल कि से०।
जन्म कृतारथ आज, सफल दिन माहरौ हो लाल स०॥

देव अवरनी सेव, कवण चित मां धरइ हो लाल क०
प्रभु तुमचउ उपगार, कदापि न वीसरइ हो लाल क० ॥३॥
ओलगड़ी अविनीत, तणी पिण आपणी हो लाल त०
जाणि करौ सुप्रमाण, बड़ाई तुम तणी हो लाल ब०
सेवक आप समान, करौ जो जग धणी हो लाल क०
तउ त्रिभुवन मां बाधइ, कीरति अति घणी हो लाल की ॥४॥
नाग नृपति शुभ वंश, गगन तर दिनमणी हो लाल ग०
भद्रा राणी नन्द, कंचन वरणइ गुणी हो लाल कं०
लंछन भासत भानु, कला सुन्दर वणी हो लाल क०
ज्ञानतिलक प्रभु भक्ति, 'विनयचन्द्रइ' भणी हो लाल वि० ॥५॥

॥ श्री वज्रधर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—हॅजा मारू हो लाल आवो गोरी रा वाल्हा

रंग रंगीला हो लाल, बज्रधर जिणचंदा,
नयन रसीला हो लाल, वंदइ बज्रधर वृन्दा।
अंग असीला हो लाल, तुझ नइ दीठां आणंदा,
मुगति वसीला हो लाल, समता सुरतरु कन्दा ॥१॥
हर्ष हठीला हो लाल, सज्जन सुखकारी,
छयल छवीला हो लाल, मूरति मोहनगारी।
जगत नगीना हो लाल, आयो हुँ तुझ शरणइ,
जिम जल मीना हो लाल, लीणउ तिम तुझ चरणइ ॥२॥

प्रेम मइं कीना हो लाल, जिम मालती भमरी,
हेजइ भीना हो लाल तारौ महिर करी।
बहु तपसीना हो लाल, ताहरइ दर्शन पाखइ,
दास अमीना हो लाल, वारइं २ स्युँ भाखइ ॥३॥
तुम्हे प्रवीणा हो लाल, समकित रतन दाता,
देखी दीणा हो लाल, पूरो सुख नइ साता।
दुर्जन हीणा हो लाल, ते तउ विमुख करउ,
तुम गुण वीणा हो लाल, सेवक हाथइं धरउ ॥४॥
पद्मरथ नृपति हो लाल, नन्दन गुण निलयो,
मात सरसती हो लाल, विजया कंत जयो।
संख लंछन सोहइ हो लाल, ज्ञानतिलक छाजै,
'विनयचन्द्र' मोहे हो लाल, महिमा महियल गाजै ॥५॥

॥ श्री चन्द्रानन स्तवनम् ॥

ढाल—फाग

चन्द्रानन जिन चंदन शीतल, दरसण नयण विशेष।
वयण सुकोमल सरस सुधारस, सयण हर्षित होइ देख ॥१॥
सोभागी जिनवर सेवियइ हो,
अहो मेरे ललना अद्भुत प्रभु रूप रेख ॥आंकणी॥
विषय कषाय दवानल केरौ, टालइं ताप सजोर।
सहज स्वभाव सुचन्द्रिका हो, उल्लसित भविक चकोर ॥२ सो०॥

मिथ्यामत रज दूर मिटावइ, प्रगटइ सुरुचि सुगंध ।
अरुचि परुषता प्रगट न होवइ, करुणा रस श्रवइ सुबंध ॥३ सो०॥
चन्द्रानन आनन उपमानइ, हीणउ खीणउ चंद्र ।
शून्य ठाम सेवइ ते अहनिसि, मानु कलंकित मंद ॥४ सो०॥
श्री वाल्मीक नृपति कुल भूषण, पद्मावती नौ नन्द ।
वृषभ लंछन कंचन तनु प्रणमइ, प्रमुदित कवि 'विनयचन्द्र' ॥५॥

॥ श्री चन्द्राबाहु जिनस्तवन ॥

ढाल—त्रिभुवन तारण तीरथ पास चिंतामणि रे कि पा०

चन्द्रबाहु जिनराज उमाह धरि घणउ रे । उमाह० ।
दास तणा दोय वयण निजर करिनइ सुणउ रे । नि० ।
जनम सम्बन्धी वैर विरोध ते उपसमइ रे । वि० ।
समवशरण तुम देख पंखी सबला भमइ रे ॥ पं० ॥१॥
छय ऋतु आवी पाय सेवइ प्रभु तुम तणा रे । से० ।
आप आपणी करइ भेट कि पुण्य प्रकर घणा रे कि ।
नीप कदम्ब नइ केतकि, जूहि मालती जू रे कि । जू० ।
बिउलसिरि वासत कि जातिलता छती रे कि ॥जा० ॥२॥
शतदल कमल विशाल कि करणी केतकी रे । कि क० ।
बन्धु जीवना थोक अशोक सुबंधु की रे । अ० ।
सप्तपर्ण प्रियंगु सरेसड़ मोगरा रे । स० ।
लाल गुलाल सरल चंपक परिमल धरा रे ॥ स० ॥३॥

तिलक केसर कोरंट बकुल पाडल वली रे। ब०।
दमणौ मरुवो कुसुम कली बहु विध मिली रे। क०।
होइ अनुकूल समीर धरइ नहीं तूलता रे। ध०।
तौ किम सहृदय लोक धरै प्रतिकूलता रे॥ ध० ॥४॥
देवानन्दन भूप कुलांबर दिनमणि रे। कु०।
रेणुका माता नन्द लीलावती नउ धणी रे। ली०।
कमल लंछन भगवान 'विनयचन्द्रइ' थुण्यौ। वि०।
तुम गुण गण नौ पार, कुंणइ ही नवि गुण्यो रे॥कुं० ॥५॥

॥ श्री भुजंग जिनस्तवन ॥

ढाल—झूंबखड़ानी

भुजंग देव भावइ नमुँ, भगति युगति मन आणि ॥सलूणेसाजना
भुजंग नाथ वंदित सदा, सुरनर नायक जाणि। स० ॥१॥
हुँ रागी पण तुँ सही, निपट निरागी लखाय। स०।
ए एकंगी प्रीतड़ी, लोकां मांहि लजाय। स० ॥२॥
आश्रित जन नइं मूकतां, प्रभु अति हांसी थाय। स०।
शंकर कठइ विष धर्यां; पिण ते नवि मूकाय। स० ॥३॥
जे नेही नेहइं मिले, तउ तेह सुं मिलियइ जाय। स०।
तेह मिल्यइ स्युं कीजियइ, जे काम पड्यां कमलाय। स०॥४॥
महाबल नृप महिमा तणौ, नन्दन गुण मणि धाम। स०।
कमल लंछन प्रभु ना करइ, विनयचन्द्र' गुण ग्राम। स० ॥५॥

॥ श्री ईश्वर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—थांरै माथे पिचरग पाग सोनारौ छोगलउ मारूजी

ईश्वर जिन नमियइ, दुःख नीगमियइ भव तणा । वाल्हाजी ।
चउगति नवि भमियइ, दुर्जन दमियइ आपणा । वा०।
संसारइ भमतां बहु दुख खमतां भव गयउ । वा० ।
भव थिति नइ भोगइ, कर्म संयोगइ सुख थयउ । वा० ॥१॥
तुं साहिब मिलियउ, सुरतरु फलियउ आंगणइ । वा० ।
मिथ्यामति टलियउ, दिन मुझ वलियउ हेजइं घणइ ।वा० ।
हुँ छुँ अपराधी, मइं सेवा लाधी तुम्ह तणी । वा० ।
करउ सहज समाधि, कीरति वाधी अति घणी । वा० ॥२॥
मन विषय न समियउ, क्रोधइं धमियउ कुभाव थी । वा० ।
आलइं भव गमियउ, हुँ नवि नमियउ भाव थी । वा० ।
हिव मिथ्यात्व वमीयउ, मन उपसमियौ अति घणुँ । वा० ।
दुर्दम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणुँ । वा० ॥३॥
तुं आगम अरूपी, अकल सरूपी मोहना । वा० ।
परमातम रूपी, ज्योति सरूपी सोहना ॥ वा०॥
तुँ आप अनायक, त्रिभुवन नायक गुण भर्यो । वा० ।
जित मनमथ सायक, क्षायक भावइं भव तर्यो ॥ वा० ४॥
गलसेन महीपति वंश विभूषण दिनमणी । वा० ।
जसु सुयशा माता, जगत विख्याता बहु गुणी ॥ वा० ॥
कंचन तनु जीपइ, लंछन दीपइ निशामणी । वा० ।
'विनयचन्द्र' आनन्दइ श्री जिन वंदइ सुरमणी ॥ वा० ५ ॥

।। श्री नेमिप्रभ स्तवनम् ।।

ढाल—हींडोलणारी, कर्म हींडोलणइ माई झूलइ चैतनराय

हर्ष हींडोलणइ झूलइ, नेमिप्रभ जिनराय।
जिहा शुद्ध आशय भूमि पटली, सोहियइ थिरवाय।
तिहां ज्ञान दर्शन थंभ अनुभव, दिव्य भाउ लसाय ।।
उपदेश शिख्या सहज संकलि, विविध दोर बनाय।
सौंदर्य्य समता भाव रूपइ, हींचितां सुख थाय ।।१।। ह०।।
जिहां चरण शोभा भाव चामर, चतुरता बींझाय।
व्रत सुमति गुपति प्रतीत आली, रहत हाजरि आय ।।
परपक्ष गुण शुभ वायु सुंधा, परिमलइ महकाय।
तिहां भगति जुगति विवेचनादिक दीपिका दीपाय ।।२।। ह०
सद्बोध तकीया तखत शुभ मति, विभवना समुदाय।
अनुपाधि भाव सुभाव चित्रित महित मन वचकाय ।।
जिहां सहज समकित गुण सुबन्धित, चंद्रूआ चितलाय।
शम शील लील विलास मंडित, मंडपइ धृति दाय ।।३।। ह०
कर कमल जोड़ी करइ सेवा, नाकि नाथ निकाय।
सुर असुर नरवर हर्ष भरि, सम्मिलित राणा राय ।।
अनुभाव जेहनइ वेर विड्डुर, दुरित दुख पुलाय।
धन धन्न प्रभु कृतपुण्य जय जय, सबद गीत गवाय ।।४।। ह०।।
वीरराय कुल अभ्र दिनमणि, सुयश तिहुअण छाय ।।
जसु सूर लंछन वरण कंचन, सुभग सेना माय ।।
भवि जीव बोहइ चित्त मोहइ, ज्ञानतिलक पसाय ।।
कवि 'विनयचन्द्र' प्रमोद धरि नइं, देव ना गुण गाय ।।५।। ह०

॥ श्री वीरसेन जिन स्तवनम् ॥

राग—कड़खानी

जयउ वीरसेना भिधो जिनवरो जग जयो,
वीरसेना थकी सुयश पायउ।
द्रव्य गुणवाद रण तूर नादइं करी,
शुद्ध उपदेश पड़हउ बजायउ ॥१॥ ज० ॥
मद मदन मान मुख अटिल जे उंबरा,
मोह महीपति तणा जे प्रसिद्धा।
अचल अप्रमत्तता शक्ति गुण गण करी,
विविध प्रहरण करी जेर कीधा ॥२॥ ज० ॥
सौर्य सन्नाह तन टोप गम्भीर्य्यता,
वीर्य गुण वेदिका ओटि लीधी।
सुमति बन्दूक तप दारु गोली गुपति,
अति कपट कोट नइं चोटि कीधी ॥३॥ज०॥
रागनइं द्वेप बे तनुज मोह भूपना,
तेह सुं सबल संग्राम मण्ड्यउ।
सहज उदासता शक्ति बल अधिक थी,
मोह मिथ्यात नउ पक्ष खण्ड्यउ ॥४॥ ज० ॥
कुमर भूमिपाल भूपाल नउ दीपतउ,
भानुमति नन्द आनन्ददाई।
वृषभ लन्छन गुणी भुवन चूड़ामणि,
कवि 'विनयचन्द्र' जस कीर्ति गाई ॥५॥ज०॥

॥ श्री महाभद्र जिन स्तवनम् ॥

ढाल—चँवर ढुलावइ हो गजसिंह रौ छावौ महुल में जी

साहिब सुणियइ हो सेवक वीनति जी,
श्री महाभद्र जिणंद।
मुझ मन मधुकर हो नित लीणउ रहे जी,
प्रभु पदकज मकरन्द ॥१॥सा०॥
एह अनादि हो अनन्त संसार मंइ जी,
तुम्ह आणा बिन स्वामि।
जे दुख पाम्या हो नाम लेई स्युँ कहुँ जी,
फरस्या सवि भवि-भवि ठामि ॥२॥सा०॥
अविरत अव्रत हो परवश नइ गुणं जी,
मोह नृपति नइ जोर।
कर्म भरम नइ हो जाल अलूझियौ जी,
चंचलता चित चोर ॥३॥सा०॥
हुँ निज बीती हो बात शी दाखवूँ जी,
जाणउ छउ जिनराय।
तारक विरुद हो वहियइ आपणौ जी,
बांह ग्रह्यांनी लाज ॥४॥सा०॥
देवराय नृप नउ हो कुँअर दीपतउ जी,
उमा देवी जसु माय।
सिंधुर वंछन हो वरणइ कंचनइ जी,
'विनयचन्द्र' सुखदाय ॥५॥सा०॥

॥ श्री देवयशा जिन स्तवनम् ॥

ढाल—काचीकली अनार की रे हां

तुम्हे तउ दूर जइ वस्या रे हां,
आवी केम मिलाय । मेरे साहिबा ।
संदेशो पहुँचइ नहीं रे हां,
कागल पिण न लिखाय ॥ मे० ॥१॥
पिण अनन्त ज्ञानी अछउ रे हां,
जाणउ मन ना भाव । मे० ॥
हेज धरी मुझ नइं मिलौ रे हां,
जिम होइ प्रीति जमाउ ॥ मे० ॥२॥
अनुकम्पा करि नइ करउ रे हां,
समकित नउ निरधार । मे० ।
तुम्ह बिन अवर न को अछइ रे हां,
जीवित प्राण आधार ॥ मे० ॥ ३ ॥
जाणी नइं नवि पूरता रे हां,
सेवक केरी आश । मे० ।
तउ साहिब शी बात ना रे हां,
हुँ पिण स्यानउ दास ॥ मे० ॥ ४ ॥
सर्वभूत नृप नन्दनौ रे हां,
गंगा मात मल्हार । मे० ।
देवयशा शशि लन्छने रे हां,
'विनयचन्द्र' सुखकार ॥ मे० ॥ ५ ॥

॥ श्री अजितवीर्य जिनस्तवन ॥

ढाल—वीरवखाणी राणी चेलणा

अजितवीरज जिन बीसमा जी,
विसरइ नहीं थांरउ नेह ।
अलख रूपी तुमे चित लिख्याजी,
आ भव पर भव जेह ॥१॥ अ०॥
प्रभु तुमे अकल कलना करी जी,
अगम्य कीधा तुमे गम्य ।
अभक्ष्य ते भक्ष्य प्रभु आचर्या जी,
आदर्या रम्य अरम्य ॥२॥ अ०॥
अपेय जे पामर लोकनइ जी,
तेह कीधुँ तुम्हे पेय ।
अंतरगति इम भावतां जी,
तुम्हे अनुपम उपमेय ॥३॥ अ०
अकल षट द्रव्य निज रूप थी,
अगम्य जे सिद्ध नुँ ठाम ।
अभक्ष्य जे काळ अपेय नइ जी,
सहज अनुभव सुधा नाम ॥४॥ अ०॥
नरपति राजपाल सुंदरु जी
मात कनीनिका जास ।
स्वस्तिक लंछनइ वंदियइ जी,
कवि विनयचन्द्र' सुविलास ॥५॥ अ०॥

॥ कलश ॥

ढाल—शांति जिन भामणइ जाऊँ

संप्रति वीस जिनेश्वर वंदउ,
विहरमान जिणराया जी ।
विचरंता भविजन मन मोहैं,
सुरनर प्रणमइ पाया जी ॥१॥ सं०॥
जंबूद्वीपइं च्यार सोहावइ,
धातकी पुष्कर अर्द्धइ जी ।
आठ आठ विचरइ जयवंता,
अढी द्वीप नइ संघे जी ॥२॥ सं०॥
मात पिता लंछन नइ नामइ,
भगति धरी नइ थुणिया जी ।
ए प्रभु ना अनुभाव थकी मंइ,
दुरित उपद्रव हणिया जी ॥३॥ सं०॥
संवत सत्तर चउपन्नइ वरषइ,
राजनगर में रंगइ जी ।
बीसे गीत विजयदशमी दिन,
कर्या उलट धरि अंगइजी ॥४॥ सं०॥
गच्छपति श्रीजिनचन्द्रसूरिन्दा,
हर्षनिधान उवझाया जी ।
ज्ञानतिलक गुरु नइ सुपसायइ,
'विनयचन्द्र' गुण गाया जी ॥५॥ सं०॥

॥ इति विंशतिका समाप्ता ॥

इति श्री विनयचन्द्र कवि विर्निर्मिता विंशतीर्थंकराणां विंशतिका संपूर्णम्

।। श्रीशत्रुंजय यात्रा स्तवनम् ।।

ढाल—कंत तंबाकू परिहरो, एहनी ।

हांरे मोरालाल सिद्धाचल सोहामणो,
ऊँचो अतिहि उत्तंग मोरालाल ।
सिद्धि वधू वरवा भणी,
मानु उन्नत करि चग मोरा लाल ।।१।।
सेत्रुँजा शिखरे मन लागो,
साहिबनी सूरति चित लागो ।। आं० ।।
हांरे मोरा लाल पालीताणो तलहटी,
जिहां ललितसरोवर पालि ।। मो० ।।
पगला प्रथम जिणंदना,
प्रणमीजे सुविशाल मोरा लाल ।।२।।से०।।
हांरे मोरा लाल प्रणमी नै पाजे चढ़ो,
समवसर्या जिहां नेम ।। मो० ।।
जिहां प्रभु पगला वंदिये,
पूरण धरि नै प्रेम मोरा लाल ।।३।।से०।।
हांरे मोरा लाल आगल चढ़तां, अतिभली,
नीली धवली पर्व ।। मो० ।।
कुंडे कुंडे पादुका,
वंदे भवियण सर्व मोरा लाल ।।४।।से०।।
हांरे मोरा लाल अनुक्रमि पहिला कोट में,
पेसी कीध प्रणाम ।। मो० ।।

बाघणि पोले पैसतां,
नाग मोरनो ठाम मोरा लाल ॥५॥से०॥
हांरे मोरा लाल गोमुख ने चक्केसरी,
प्रणमो वामे हाथ मोरा लाल ॥ मो० ॥
चौरी नेम जिणंदनी,
सरगबारी ने साथ मोरा लाल ॥६॥से०॥
हांरे मोरा लाल चौमुख जयमलजी तणो,
नमतां होइ आह्लाद ॥ मो० ॥
अवर चैत्य नमि पेसीयै,
आदि जिणंद प्रासाद मोरा लाल ।७।से०।
हांरे मोरा लाल दीजे मध्य प्रदक्षिणा,
खरतरवसही वांदि ॥ मो० ॥
पुँडरीक गणधर तणी,
प्रतिमा अति आनंदि मोरा लाल ।८।से०।
हांरे मोरा लाल सहसकूट अष्टापदे,
प्रमुख बहु जिन वांदि ॥ मो० ॥
राइणि तलि पगला नमो,
गणधर पगला सार मोरा लाल ॥९॥से०॥
हांरे मोरा लाल मूल गंभारे ऋषभजी,
पासै होइ जिणंद ॥ मो० ॥
मरुदेवी माता गज चढ़ी
आगल भरत नरिंद मोरा लाल ॥१०॥से०॥

हांरे मोरा लाल चवदैसय बावन अछै,
गणधर पगला सार ॥ मो० ॥
इणिपरि देइ प्रदिक्षणा,
नमिये नाभि मल्हार मोरा लाल ॥११॥से०॥
हांरे मोरा लाल चैत्यवंदन प्रभु आगले,
करियै आणी भाव ॥ मो० ॥
हिव बाहिर देहरा थकी,
जे छै ते कहुँ भाव मोरा लाल ॥१२॥से०॥
हांरे मोरा लाल सूर्यकुंड भीमकुंड ने,
पासे पगला जान ॥ मो० ॥
ओलखाभूल आवियो,
फरसीजे जिन न्हाण मोरा लाल ॥१३॥से०॥
हांरे मोरा लाल जाइये चेलणतलावड़ी,
सिद्ध सगला तिणि ठौड़ ॥ मो० ॥
सिद्धवड़ै प्रभु पादुका,
नमियै बे कर जोड़ मोरा लाल ॥१४॥से०॥
हांरे मोरा लाल आदिपुरें आवि चढ़ो,
फिरि नै ए गिरिराज ॥ मो० ॥
हथणी पोले आविनै,
वलि वंदो जिनराज मोरा लाल ॥१५॥से०॥
हांरे मोरा लाल बीजी जात्र करिये तिहां,
बाहिर खमणा चैत्य ॥ मो० ॥

निरखी अद्भुत भेटियै,
अति प्रसन्न हुवे चित्त मोरा लाल ॥१६॥से०॥
हांरे मोरा लाल पांडव पांचे प्रणमियै,
अजित शांति जिनराय ॥ मो० ॥
टुंक शिवा सोमजी तणो,
तिहां चोमुख भेटो आय मोरा लाल ॥१७॥से०॥
हांरे मोरा लाल गिरि तल सेत्रुंजी नदी,
जोवो आणि विवेक ॥ मो० ॥
इणि परि विमलाचल तणी,
तीरथ भूमि अनेक मोरा लाल ॥१८॥ से०॥
हांरे मोरा लाल पाजे पाजे ऊतरी,
तलहटी जिन परसाद ॥ मो० ॥
स्नात्र महोच्छव कीजीए,
टाली पंच प्रमाद मोरा लाल ॥१६॥से०॥
हांरे मोरा लाल एगिरिनी गुण वर्णना,
करतां नावै पार ॥ मो० ॥
सीमंधर सामी सेंमुखै,
महिमा कही अपार मोरा लाल ॥२०॥से०॥
इम भक्तिपूर्वक युक्ति सेती, थुण्यो सेत्रुंजा तीर्थ नइ ।
संवत सतर पंचावनइ वर, पोष वदी दसमी दिनइ ॥
श्रीपूज्य जिनचन्द्रसूरि पाठक, हरषनिधान हरषइ घनइ ।
परिवार सों जिन यात्र कीधी, 'विनयचन्द्र' इसुं भणइ ॥२१॥

॥ श्री ऋषभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल – फूली ना गीतनी देसी

वीनति सुणो रे म्हांरा वाल्हा, राजि मरूदेवा राणी ना लाला
राजि थारां चरण नमुं शिरनामी।
थेतो भूलां नो भावठ भंजउ,
राजि निज सेवक तणा मन रंजउ राजि० ॥१॥
म्हारां मननी आशा पूरो,
राजि म्हांरा कठिन करम दल चूरउ। राजि०।
थांरा गुण सुं मो मन लागो,
राजि हियइ राखुं रे बांभण जिम तागउ ॥ २ ।
थांरी सूरत अधिक सुहावै,
राजि म्हांरा नयण देखि सुख पावइ राज०
थांरी कंचनवरणी काया,
राजि थांरउ रूप सकल सुख दाया। राज० ।३।
सोहइ नयन कमल अणियाला,
राजि समतामृत रस वरसाला । राजि०।
थे तो नाभि नरिंद कुल चन्दा,
राजि थांनइ सेवे सुर नर इन्दा। राजि० ॥ ४ ॥
थांरो ध्यान हिया विच धारूं,
राजि थानइ निशिदिन कहीन विसारूं ।राजि०

त्रिभुवन नउ मोहनगारउ,
राजि तिणि लागइ मुझ नइ प्यारौ ।राजि० ॥५॥
तुझ नइ देखी दिल फूली,
राजि तुझ पास सदा रहइ भूली। राजि०।
मुझ नइ निज सेवक जाणी,
राजि मुझ तारउ करुणा आणी। राजि० ॥६॥
मइं तउ पूरब पुण्यइ पाया,
राजि प्रभु चरणे चित्त लगाया। राजि०।
श्री ऋषभ जिणंद जगराया,
विनयचन्द्र हरख सुं गाया राजि० ॥ ७॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडन ऋषभदेव स्तवनम् ॥

ढाल—माखीनी

वात किसी तुझनइ कहुं, मुझ नइ आवइ लाज ऋषभजी।
विगर कह्यां मन नवि रहइ, हिव सांभलि जिनराज ।ऋ०॥१॥
हुं माया सुँ मोहीयउ, मइ कीधा पर द्रोह । ऋ०।
अधम तणी संगति ग्रही, न रही संयम सोह। ऋ० ॥२॥
मूंकि रहयउ संसार में, न धर्‌यो ताहरउ ध्यान। ऋ०।
परमारथ पायउ नहीं, भरियउ घट मां मान। ऋ० ॥३॥

तृष्णा सुं लागी रह्यउ, पिण न भज्यउ संतोष। मृ०।
ठावा मुझ मांहे मिलइ, सगलाई जे दोष। मृ० ॥४॥

कुमति घणी मुझ मन वसइ, सुमति थकी नहीं नेह। मृ०।
माठी करणी मां पड्यउ, हुं अवगुण नउ गेह। मृ० ॥५॥

वलि झूठी सांची करूँ, वातां तणउ विचार। मृ०।
हुं लंपट नइ लालची, कपट तणउ नहीं पार। मृ० ॥६॥

ढाकुं अवगुण आपणा, केहनी न करूं काण। मृ०।
पर दूषण लेवा भणी, हुँ छूँ आगेवाण। मृ० ॥७॥

मिथ्यादृष्टि देव एं, धरियउ पूरउ राग। मृ०।
अर्थ तणउ अनरथ कियउ, देखी नइ निज लाग। मृ० ॥८॥

थिरकि रह्यउ निज घाट में, चंचल माहरउ चित्त। मृ०।
संसारी सुख ऊपरइ, हीयड़उ हींसइ नित्त। मृ० ॥९॥

जीव संताप्या मइं घणा, पर आशायें वींध। मृ०।
वलि रात्रि भोजन कर्या, काज अकारज कीध। मृ० ॥१०॥

हिव हुं किम करि छूटिसुँ, कीधा करम कठोर। मृ०।
भव दुख मां हुं भीड़ीयउ, कोई न चालइ जोर। मृ० ॥११॥

पिण इक शरणउ ताहरउ, लीधउ छइ जग तात। मृ०।
देख्युं ताहरी सानिधइ, दुर्जन नइ सिर लात। मृ० ॥१२॥

'विनयचन्द्र' प्रभु तूं अछइ, सेत्रुंजय सिणगार। मृ०।
चरण ग्रह्या मैं ताहरा, मुझ कुमति नइ तार। मृ० ॥१३॥

॥ श्री अभिनन्दन जिन गीतम् ॥

ढाल—प्रोहितियानी

पंथीड़ा अंदेसउ मिटस्यै जे दिनइ रे,
ते तउ मुझ नइ आज बताइ रे।
प्रभु अभिनन्दन नइ मिलवा तणउ रे,
अलजो ए मनड़े न खमाइ रे ॥१॥ पं० ॥

ते शिवपुर वासउ वसे रे,
हुं तउ मानव गण मइं जोय रे।
प्राणवल्लभ दुर्लभ जिनराज नी रे,
कहि नै सेवा किण विधि होय रे ॥२॥पं०॥

पांख हुवै तउ ऊडि नै रे,
जाइ मिलीजै तेह सुं नेट रे।
ओलग कीजइ बेकर जोड़ि नै रे,
स्युं वलि काइ भलेरी भेट रे ॥३॥ पं० ॥

इण कलि संमुख नवि मिलइ रे,
वलि पहुँचइ नहीं कागल मात रे।
दूर थकी जे रंग इसी परि रे,
राखिस ए पटोलै भाति रे ॥४॥ पं० ॥

परम पुरुष पांहर पखै रे,
चाढै वंछित कवण प्रमाण रे।
गुण आगलि साची जाणै सही रे,
जगगुरू 'विनयचन्द्र' नी वाणि रे ॥४॥पं०॥

।। श्री चन्द्रप्रभ जिन गीतम् ।।

देशी—जिनजी हो हसत वदन मन मोहतउ हो लाल

साहिबा हो पूरण ससिहर सारिखौ,
हो लाला सोहै मुख अरविंद जिणेसर
तें चित चोर्यो माहरौ हो लाल,
जिम अलि मन मकरन्द जि० ।।१।।ते०।।
गयण निसाकर दीपतौ हो लाल,
जस वड़ जिम विस्तार जि० ।।२।। ते० ।।
तूं तेहिज सुपनइ मिलइ हो लाल,
सांप्रति दरसण दाखि जि० ।
मूढ पतीजै जे हियइ हो लाल,
लाज मोरी तुं राखि जि० ।।३।। ते० ।।
अन्तरजामी तुं अछै हो लाल,
वाल्हेसर सुविदीत जि० ।
साहिब वस्त तिका करो हो लाल,
जिण करि आवै चीत जि० ।।४।। ते० ।।
ते हिज बात सही करी हो लाल,
कहीये न विसरइ हेव जि० ।
'विनयचन्द्र' साचउ सही हो लाल,
श्रीचन्द्रप्रभु देव जि० ।।५।। ते० ।।

॥ श्री शान्तिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—जे हड़मानै मोंजरी ए देशी

सांभलि निसनेही हो लाल कहूं बात ते केही हो।
सगुण म्हांरा वालहा।
कहुं वीनति केही हो लाल पिण तूं छइ तेही हो। स० ॥१॥
शरणागत पालौ हो लाल, अंतर दुख टालौ हो। स०।
तुं तउ माया गालौ हो लाल, रहै मोसुं निरालौ हो।स०॥२॥
बाते परचावै हो लाल, ते मन नइ नावै हो। स० ॥
साची पतियावै हो लाल, तउ संशय जावै हो। स० ॥३॥
राख्यौ पारेवौ हो लाल, तिण परि सारेवौ हो। स०।
सेवक तारेवौ हो लाल, नाकार वारेवौ हो। स० ॥४॥
शांतिनाथ सोभागी हो लाल, सोलम जिन सागी हो।स०।
'विनयचन्द्र' रागी हो लाल, जयौ तुं वड़ भागी हो।स०॥५॥

॥ श्री नेमिनाथ गीतम् ॥

ढाल—अब कउ चौमासौ थे घर आवौ जावइ कहउ राजि ए देशी

नेमजी हो अरज सुणो रे वाल्हा माहरी हो राज,
राजुल कहइ धरि नेह, घरि रहउ नै राज।
साहिबा एकरस्यउ थे फिरी आवउ,
घरि रहउ नै राज।
केसरिया घरि० अलबेला घ० अभिमानी घ०,
साहिबा एकरिस्यउ ॥ आं० ॥

नेमजी हो नवभव नेह निवारनइ हो राज,
इम किम दीजइजी छेह ॥१॥ घ०॥
नेमजी हो विन अवगुण मुझ नइ तजी हो राज,
ते स्यउ मुझ मां दोष ॥घ०॥
नेमजी हो करिवउ न घटइ तुम नइ हो राजि,
अबला ऊपरि रोष ॥घ०॥सा० २॥
नेमजी हो सउ मीनति करतां थकां हो राजि,
मत जावउ मुझ मेलि ॥घ०॥
नेमजी हो तुम बिन मुझ काया दहइ हो राजि,
जिम जल विहूणी वेलि ॥घ०॥सा० ३॥
नेमजी हो मुगति रमणि मोह्या तुमे हो राजि,
पिण तिण मां नहिं स्वाद ॥घ०॥
नेमजी हो तेह अनंते भोगीवी हो राजि,
छोड़उ छोकरवाद ॥घ०॥सा० ४॥
नेमजी हो अधिका लोभ न कीजइ हो राजि,
आणउ हियइ रे विवेक ॥घ०॥
नेमजी हो सुललित शील सुहामणी हो राजि,
हुँ तुम नारी एक ॥घ०॥सा० ५॥
नेमजी हो योवन लाहउ लीजियइ हो राज,
जोइ विषय सुख जोर ॥घ०॥
नेमजी हो चारित पिण लेज्यो पछइ हो राज,
न हुवउ कठिन कठोर ॥घ०॥सा० ६॥

नेमजी हो भलौ रे कियौ तुम वालहा हो राज,
आवी तोरण बार ॥घ०॥
नेमजी हो रथ फेरी पाछा वल्या हो राज,
एह नहीं जग व्यवहार ॥घ०॥सा० ७॥
नेमजी हो जउ नाव्या मन मन्दिरइ हो राज,
हूँ आविस तुम पास ॥घ०॥
नेमजी हो इम कहि पिउ पासइ गइ हो राज,
राजुल धरती आश ॥घ०॥सा० ८॥
नेमजी हो प्रणमी नेम जिणंदनइ हो राज,
संयम ग्रह्यो धरि प्रेम ॥घ०॥
नेमजी हो प्रिउ पहिली मुगते गई हो राज,
वंदइ 'विनयचन्द्र' एम ॥घ०॥६॥

॥ श्री नेमिनाथ राजिमती बारहमासा ॥

राग—हिंडोल

आवउ हो इस रिति हित सइं यदुकुलचन्द,
हुयउ मोहि परम आनन्द।
रस रीति राजुल वदत प्रमुदित, सुनो यादव राय।
छोरि कै प्रीति प्रतीति प्रियु तुम्ह, क्यूँ चले रीसाय॥
चिहुँ ओर घोर घटा विराजत, गुहिर गाजत गइन।
धरि अधिक गाढ़ अषाढ़ उलट्यउ, घट्यउ चित से चइन॥१ आ०॥

उत्तंग गिरिवर प्रवर फरसत, मेघ वरषत जोर।
दमकती दामिनि बहुर भामिनी, चमकती तिहिं ठोर॥
प्रियु प्रियु पपीयन रटत प्रगटत, पवन के झकझोर।
इस मास सावन दिल दिढावन, सजन मानि निहोर॥२ आ०॥
दिहुँ दिसइ जलधर धार दीसत, हार के आकार।
ता वीचि पहुवै नहीं कवही, सूई कौ सचार॥
सा लगत है झरराट करती, मध्यवरती बान।
भर मास भाद्रव द्रवत अंबर, सरस रस की खान॥३ आ०॥
सरसा सरोवर विमल जल से, भरे हैं भरपूर।
लख लोल करत हिलोल हर्षित, हंस पक्षि पडूर॥
चन्द्र की शीतल चन्द्रिका से, विकासइं निशि नूर।
आसोज मास उदास अवला, रहत तो बिनु झूरि॥४ आ०॥
संयोगिनी कौ वेष देख्यउ, तव उवेख्यउ कंत।
शृंगार शोभत सहल अंगइ, महल दीप दीपंत॥
उनमत पीवर अति घन स्तन, मध्य मुकुलित माल।
सखी मास काती दहत छाती, माल तौ भई झाल॥५॥आ०॥
मिव रमनि संगति सइं उमाहे जात काहे दउरि।
निज नारी प्यारी आसकारी, दीजियत क्यूँ छोरि॥
वनवास कीयइ भेष लीयइ, भला न कहु तोहि।
इन मार्गसिर भई मार्ग सिर परि, देखि दुखिनी मोहि॥६॥आ०॥
अति दिवस दुबेल सबल दोषाक्रान्त निशिपति ज्योति।
संकुचित हिम हिम कठिनता सइं, कमल लटपट होत॥

चंबेल चोआ करु मरदन, दरद होइ असमान।
प्रियु पोष मास शरीर शोषत, हूं भई हइरान ।।७।।आ०।।
चल चीत प्रीतम सीत कीनी, सोउ सालत साल।
इक तनक मोरी भनक सुनिकै, छिनक करौ निहाल ।।
विरह सौं फाटत हृदय मेरौ, दुख घनेरो होहि।
यह माह मास उलास धरि कै, सेफ को सुख जोहि ।।८।।आ०।।
सारिखी जोरी रमत होरी, लेत गोरी संग।
रंभित भमाल धमाल गावत, सब बनावत रंग ।।
डफ ताल चग मृदंग वावत, उडावतहिं गुलाल।
इह मास फागुन सगुन खेलउ, निरखि मोहि बेहाल ।।६।।आ०।।
जहाँ गत विपल्लव अति सपल्लव, भये भंखरभार।
अरविंद निर्मल विपुल विकसित, हसत वन श्रीकार ।।
तहाँ बहुल परिमल लीन अलिकुल मिलि करत गुँजार।
यह मास चैत सचेत भई, देत मनमथ मार।१०।आ०।
लुलि लुंब झुंब कदंब होवत, अंब के चिहुँ फेर।
तरु डार धूजत मधुर कूजत, कोकिला तिहिं बेर ।।
अभिलाष द्राखन कउ समानत, मउज मानत लोग।
वैशाख मइं वयशाख वउलत, कहा पीछइं भोग ।।११।।आ०।।
रति केलि कंदल दवानल सउ, प्रबल ताप प्रसंग।
अति अरुन किरन कठोर लागत, नांहि तागत अंग ।।
चन्दन प्रमुख भखि भखि लगाउं, धख जगावुं साय।
मन लाय ज्येठ मइ ज्येठ मेरे, ल्याउ नेमि मनाय ।।१२।।आ०।।

इन भांति मन की खांति बारह, मास विरह विलास।
करि कइ प्रिया प्रिय पासि चरित्र, म्रह्यउ आनि उल्लास ॥
दोउ मिले सुन्दर मुगति मंदिर, भइ जहाँ अति भंद्र
मृदु वचन ताकउ रचन भाषत, विनयचन्द्र कवीन्द्र ॥१३॥आ०॥

॥ इति श्री नेमिनाथ राजीमत्योर्द्वादश मास ॥

॥ श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ वृहत्स्तवनम् ॥

ढाल—कोइलो परवत धूँधलउ, एहनी

श्री संखेश्वर पास जी रे लो,
सुणि वारू दोइ वइण रे सनेही।
दरसण ताहरउ देखिवा रे लो,
तरसं माहरा नइण रे सनेही ॥१ श्री०॥
चोल मजीठ तणी परइ रे लो,
लागउ तुझ सुँ प्रेम रे सनेही।
हियड़उ हेजइ ऊलसइ रे लो,
जलहर चातक जेम रे सनेही ॥२ श्री०॥
हूँ जाणूँ जइ नइ मिलूँ रे लो,
साहिब नइ इकवार रे सनेही।
सयणा रइ मेलइ करी रे लो,
सफल हुवइ अवतार रे सनेही ॥३ श्री०॥
वाल्हा किम आवुँ तिहां रे लो,
वेला विषमी जाय रे सनेही।

सुख चाहंता जीव नइ रे लो,
मत कोई लागू थाय रे सनेही ।।४ श्री०।।
केलवि कल काइ हिवै रे लो,
जिम आवुं तुझ पास रे सनेही।
आवी नइ तुझ रंझिस्युँ रे लो,
खिजमति करस्युँ खास रे सनेही ।।५ श्री०।।
मत जाणौ मोनइ लालची रे लो,
दिल माहरउ दरियाव रे सनेही।
बीजउ कंइ माहरइ नहीं रे लो,
चाहइ आदर भाव रे सनेही ।।६ श्री०।।
महिर बिना साहिब किसउ रे लो,
लहिर बिना स्यउ वाय रे सनेही।
सहिर बिना स्यउ राजवी रे लो,
इम कलि मांहि कहाइ रे सनेही ।।७ श्री०।।
कां न करउ मुझ ऊपरइ रे लो,
कूरम दृष्टि सुदृष्टि रे सनेही।
जेथी ततखिण संपजइ रे लो,
शान्त सुधारस वृष्टि रे सनेही ।।८।।श्री०।।
वृक्ष्यादिक नइं सेवतां रे लो,
पूगइ मननी आस रे सनेही।
तउ साहिब तुझ सारिखउ रे लो,
किम राखइ नीरास रे सनेही ।।९।।श्री०।।

वयणे नेह वधइ नहीं रे लो,
नयणे वाधइ नेह रे सनेही।
नेह तेह स्या काम नो रे लो,
अणमिलियां रहै तेह रे सनेही ॥१०॥श्री०॥
जिम तिम मुझ नइ तेड़नइ रे लो,
करि माहरउ निरवाह रे सनेही।
'विनयचन्द्र' प्रभु सानिधइ रे लो,
नहीं खलनी परवाह रे सनेही ॥११॥श्री०॥

॥ श्री पार्श्वनाथ वृहत्स्तवनम् ॥

ढाल—देहु देहु नणद हठीली, एहनी

श्री पास जिनेसर स्वामी, तुं वाहलो अन्तरजामी रे।
जिनदेव तुं जयकारी, तुझ सुरति लागै प्यारी रे॥
साहिब सुन वीनति मोरी, बलिहारी जाउं तोरी रे॥१॥
तुं गुण अनन्त करि गाजइ, तुझ रूप अनोपम राजइ रे।
सुन्दर तुझ मुख नउ मटकौ, वारू लोयण नउ लटकउ रे॥२॥
तुं धर्म तणउ छइ धोरी, माहरउ मन लीधउ चोरी रे।
तुझ दीठां विण न सुहावइ, मुझ जीव असाता पावइ रे॥३॥
भरि निजर जोऊँ जब तुझनइ, तब आनंद उपजइ मुझनइ रे।
चित्त मांहि हुवइ रंग रोल, जाणै स्वयंभूरमण कल्लोल रे॥४॥
मइं देव घणा ही दीठा, मुख मीठा हीयड़इ धीठा रे।
मिलियउ नहीं हितुयउ कोई, त्यारइ मूँक्या सहु जोई रे॥५॥

हुं भव भव भमतौ हार्यो, बहु दिवसे तुझ सम्भार्यो रे।
तुझ सेवा करिवी मांडी, ते किम जायइ कहौ छांडी रे ॥६॥
पूरवली प्रीति जगाई, हिवइ करौ निवाज सकाई रे।
जे मांहि दत्त गुण लहियइ, मोटा तउ तेहिज कहीयइ रे ॥७॥
तूं अध्यातम मत वेदी, तइं कर्मप्रकृति सहु छेदी रे।
संसार तरी तुं बइठउ, शिवमन्दिर मां जइ पइठउ रे ॥८॥
आजन्म तुं बालउ योगी, तुं अनुभव रस नउ भोगी रे।
तुं तउ छइ निपट निरागी, हुं रागी तुझ रह्यउ लागी रे ॥६॥
रागी रागइ जे व्यापइ, तेहनइ जउ वंछित नापइ रे।
तउ भगतवच्छल बहु प्रीतइ, तेहनइ कहियइ सी रीतइ रे ॥१०॥
अविचल सुख मुझ दीजइ, परमातम रूपी कीजइ रे।
प्रभु साथइं बाते आया, कवि 'विनयचन्द्र' गुण गाया रे ॥११॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—संबर दे ना गीतनी

सुन्दर रूप अनूप, मूरति सोहइ हो,
सगुणा साहिब ताहरी रे।
चित मांहे रहै चूंप, देखण तुझ नइ हो,
सगुणा साहिब माहरी रे ॥१॥
मुझ मन चंचल एह, राखुं तुझ नइ हो,
सगुणा साहिब नवि रहइ रे।
मुझसुं धरिय सुनेह, राखउ चरणे हो,
सगुणा साहिब सुख लहइ रे ॥२॥

तुं उपगारी एक, त्रिभुवन मांहइ हो,
सगुणा साहिब मइं लह्यउ रे।
आव्यौ धरिय विवेक, हिवइ तुझ सरणउ हो,
सगुणा साहिब संग्रह्यउ रे ॥३॥

सरणागत साधारि, विरुद सम्भारी हो,
सगुणा साहिब आपणौ रे।
भवसायर थी तारि, तुझ नइ कहियइ हो,
सगुणा साहिब स्युं घणउ रे ॥४॥

साहिब नइ छइ लाज, निज सेवक नी हो,
सगुणा साहिब जाणिज्यो रे।
मेलउ दे महाराज, वचन हीयामइं हो,
सगुणा साहिब आणिज्यो रे ॥५॥

लाड कोड मावीत, जो नवि पूरइ हो,
सगुणा साहिब प्रेम सुं रे।
तो कुण राखइ प्रीति, तउ कुण पालइ हो,
सगुणा साहिब खेम सुं रे ॥६॥

पास जिणेसर राजि, पदवी आपउ हो,
सगुणा साहिब ताहरी रे।
कहै 'विनयचन्द्र' निवाजि, अरज मानेज्यो हो,
सगुणा साहिब माहरी रे ॥७॥

।। श्रीगौड़ी पार्श्वनाथ वृहत्स्तवनम् ।।

राग—मल्हार

नाम तुम्हारौ सांभली रे, जाग्यउ धरम सनेह ।
ते तउ दिन दिन ऊलटइ रे, मानुं पावस ऋतु नउ मेह ।।१।।
गोड़ी पासजी हो, ज्ञानी पासजी हो, अरज सुणउ इण वार ।।
तुम पासे आव्या तणौ रे, अधिक ऊमाहउ थाय ।
पिण स्युं कीजइ साहिबा, आव्या नै छै अन्तराय ।।२।।गो०।।
ते माटइ करिनइ मया रे, आणी मन उपगार ।
आवी नइ मुझ थी मिलउ, दरसण द्यौ इकवार ।।३।।गो०।।
तुझ जेहवउ वलि कुण छइरे, अवसर केरौ जाण ।
निज अवसर नवि चूकियइ, करौ सेवक वचन प्रमाण ।।४।।गो०।।
तीन भवन मां ताहरौ रे, झलकइ निरमल तेज ।
सूरति देखी ताहरी वाल्हा, हसता आवै हेज ।।५।। गो०।।
तुझ मुख मटकउ अति भलौरे, जाणइ पूनिमचन्द ।
आंखड़ी कमलनी पांखड़ी, शीतल नइ सुखकन्द ।।६।। गो०।।
दीपशिखा सम नासिका रे, अधर प्रवाली रंग ।
दंत पंकति दाडिम कुली, दीपइ अंग अनंग ।।७।। गो०।।
मुकुट विराजइ मस्तकइं रे, कांने कुण्डल सार ।
बांह बाजूबन्द बहिरखा, हीयडइ मोती नउ हार ।।८।। गो०।।
नील वरण शोभा वणी रे, अहि लंछन अभिराम ।
तुझ सारीखो जगत मां, वाल्हा रूप नहीं किण ठाम ।।९।। गो०।।

तीन छत्र सिर शोभता रे, चामर ढालइ इन्द्र।
तुझ प्रभुता देखी करी, मोह्या सुर नर नइ नागेन्द्र ॥१०॥गो०॥
अपछर ल्यइ तुझ भामणा रे, करती नाटक जोर।
तारौ तारौ पास जी रे, ऊभी करइ निहोर ॥११॥गो०॥
चाकर केरी चाकरी रे, प्रभु आणौ मन मांहि।
वाल्हेसर सुप्रसन्न थयी, धरि हेत ग्रहउ मोरी बांहि ॥१२॥गो०॥
तुझ सूं लागी मोहणी रे, बीजां सूँ नहिं काम।
सांम्हौ जोवौ साहिबा, आवौ आवौ आतम राम ॥१३॥गो०॥
योगी भोगी तुझ भणी रे, ध्यावै नित एकान्त।
मुगति रमणि रस रागीयौ, तुं नीरागी भगवन्त ॥१४॥गो०॥
अश्वसेन नृप कुल तिलौ रे, वामादेवी कौ नन्द।
ते साहिब नइ वीनती, इम वीनवइ 'विनयचन्द' ॥१५॥गो०॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

राग—सारंग

माई मेरे सांवरी सूरति सुं प्यार ॥मा०॥
जाके नयन सुधारस भीने, देख्यां होत करार ॥मा०॥१॥

जासौं प्रीति लगी है ऐसी, ज्यों चातक जल धार।
दिल में नाम वसै तसु निसदिन, ज्युं हियरा मइंहार ॥मा०॥३॥

पास जिनेसर साहिब मेरे, ए कीनी इक तार।
विनयचंद्र कहै वेग लहुं अब, भव जल निधि कौ पार ॥मा०॥३॥

।। श्री वाड़ी पार्श्वनाथ लघुस्तवनम् ।।

लांघ्या गिरवर डुँगरा जी, लांघ्या विषम निवास।
ते दुख तुझ भेट्यां गयां जी, सांभलि वाड़ी पास ।।१।।

परमगुरु माहरै तुम्हसुं प्रीति।
पामि सगुण तो सारिखा जी, निगुण न आवै चीत ।।२।।प०।।

नयणे निरख्यां चाहसुँ जी, भलो थयो परभात।
मन मेलू जो तुं मिल्यौ जी, उल्हस्यौ माहरौ गात ।।३।।प०।।

तइं तो कल का फेरवी जी, तन मन ताहरइ हाथ।
खरी कमाई माहरी जी, हिव हुँ थयौ सनाथ ।।४।।प०।।

अलवि करै अराधतां जी, वार्यै बादल दूर।
एह विरुद सम्भारि नै चित चिंता चकचूर ।।५।।प०।।

सकज अछै तूं पूरिवा जी, घणा हरख नै लाड।
जाइ अनेरा आगलै जी, किसौ चढ़ावुं पाड ।।६।।पा०।।

वचने लागइ कारिमौ जो, लाख गुणे ही नेह।
दिल भर दिल तेवै छतो जी, जिम बावईयै मेह ।।७।।प०।।

प्रस्तावै ऊपर करै जी, वलती ए अरदास।
दरसण दे संतोषजे जी, जिम सौ तिम पंचास ।।८।।प०।।

मत बीसारेज्यो हिवै जी, सौ वाते इक वात।
अवगुण गुण करि लेखज्यो जी, विनयचंद्र जगतात ।।९।।पा०।।

॥ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ॥

ढाल—आज माता जोगणी ने चालो जोवा जइये रे एहनी

भलौ वण्यो मुखड़ा नउ मटकौ, आंखड़ली अणियाली।
लटकालौ साहिब देखी नइ, तो सुँ लागी ताली रे ॥१॥
राजि म्हांरा बीजा नइ किम मन री बातां कहियइ ॥आंकणी॥
ते पासिइ ऊभा नवि रहियइ, जे होवइ बहु मीता।
थे म्हारा छउ अन्तरजामी, मनड़ा रा मानीता रे ॥२ रा०॥
आज मिल्यउ थांनइ ऊमाही, दूधे जलधर बूठा।
प्रभु थांरउ दर्शन देखन्तां, पाप दियइ पग पूठा रे ॥३ रा०॥
हियड़उ छइ मांहरउ हेजाल, सांझ सवार न देखइ।
थांसूं प्रीत करण नइ आवइ, गिणइ दिवस निज लेखइ रे ॥४॥
कर जोड़ी नइ थासूं इतरी, अरज करूँ सिरनामी।
सनमुख थइ शिवसुख कां नापउ, सी कीधी छइ खामी रे ॥५॥
थांरउ जस मैं पहिला सुणियउ, ए प्रभु आश्या पूरइ।
तउ पोतानउ सेवक जाणी, चिन्ता किम नवि चूरइ रे ॥६ रा०॥
जग मांहे तुं श्री चिन्तामणि, पारसनाथ कहावइ।
'विनयचन्द्र' नइ मुगति सूंपतां, थारउ कासुं जावइ रे ॥७ रा०॥

॥ श्री चिन्तामणि पाश्वनाथ लघु स्तवनम् ॥

ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणा जी, एहनी

अरज अरिहंत अवधारियै जी, चतुर चिन्तामणि पास।
आतुर दरसण निरखिवा जो, मुँकीये केम निरास ॥१॥

दूषण ने पड्यउ पांतरै जी, तेह बगसौ महाराज।
बांह जउ दीजीयै मो भणी जी, आज तोहिज रहै लाज ॥२॥
एक पखउ मइं तो जाणीयो जी, स्वामि सेवक व्यवहार।
धवलड़ौ दूध जिम देखिनैजी, हुं रच्यो सरल अनुहार ॥३॥
नेह कीजे निज स्वारथे जी, ते इहां को नहीं लाह।
तुं निरंजण सही माहरी जी, तिल भर काँ नहिं चाह ॥४॥
पग भरि कवण ऊभौ रहे जी, जिहाँ नहिं लाव नै साव।
कहै 'विनयचन्द्र' गिरुवाहुज्योजी, हरख द्यौ देखिने दाव ॥५॥

॥ श्री पार्श्वनाथ गीतम् ॥

ढाल—सरवर खारो हे नीर स० नयणां रो पाणी लागणौ हेलो एहनी देशी•

तूठा हे पास जिणद।तू०। बूठा हे अमृत मेहड़ा हे लो।बू०।
रूठा हे पातक वृन्द।रू०। पूठा हे पग दे बापड़ा हे लो।पू०॥१॥
साचउ हे धरम सनेह।सा०। लागउ हे प्रभु सुँ माहरइ हे लो।
मुझ इकतारी हे एह।मु०। नेह कियाँ बिन किम सरइ हे लो ॥२॥
समकित जाग्यउ हे जोर।स०। अशुभ करम दूरइ गया हे लो।
कुमति न चांपइ हे कोर।कु०। संयम जोग वशिथया हे लो ॥३॥
प्रगट्यो हे ध्यान थी ज्ञान।प्र०। उदय थयउ अनुभव तणो हे लो।
आतम भाव प्रधान।आ०। सहज संतोष वध्यउ घणो हे लो ॥४॥
सहुमाँ प्रभुनो हे अंश।स०। जेम घृतादिक खीर माँ हे लो।
झीलइ हे मुझ मन हँस।झी०। प्रभु गुण निर्मल नीर माँ हे लो॥५॥
जगव्यापी जिनराज।ज०। तित्थंकर तेवीसमउ हे लो।
हित सुख केरइ हे काज।हि०। चरणकमल प्रभुना नमउ हे लो॥६॥

परमपुरुष श्री पास ।प०। प्रणम्यां तन मन उल्लसइ हे लो।
पूरइ हे सेवक आस ।पू०। 'विनयचन्द्र' हियड़े वस्या हे लो ।।७।।

।। श्री स्वाभाविक पार्श्वनाथ स्तवनम् ।।

ढाल—हाडानी

सुणि माहरी अरदास रे मन मोहनगारा, म्हारा प्राण पियारा।
आस पूरो रे वाल्हा पास, निपट न करि नीरास ।म०।
सास तणी परि तुँ मुंझ सांभरे रे ।।१।।

माहरइ तुँ हिज सइण रे ।म०।
ताहरी मूरति मननी मोहनी रे।
निरखि ठरइ मुझ नयण रे ।म०।
हियड़ौ हेजालू विकसै माहरो रे ।।२।।
तुझ थी लागौ रंग रे ।म०।
लइणा दइणा नो कारण एह छेरे।
खिण न पड़ै मन भंग रे ।म०।
संग न छोडुं जिनजी ताहरउ रे ।।३।।
ताहरौ मन नीराग रे ।म०।
राग घणौ रे मन में मोहरै रे।
ते किम पहुँचइ लाग रे ।म०।
एक हाथइ रे ताली नवि पड़इ रे ।।४।।
वलि एहवउ नहिं कोइ रे ।म०।
जेहनइ कहियइ रे मननी वातड़ी रे।

अलवि कह्यां स्युं होइ रे ।म०।
मन ना चिंत्या रे कारज नवि सरइ रे ।।५।।
मोह मिथ्यामति भाव रे ।म०।
रचि मचि नइ घट मांहि रहइ रे।
स्युँ ताहरउ परभाव रे ।म०।
विमुख न थायइ अरियण एहवा रे ।।६।।
अधिक करइ आवाज रे ।म०।
राता माता रे हस्ती घूमता रे।
ते मृगपति नइ लाज रे ।ते०।
एह औखाणउ जिनजी जाणियइ रे ।।७।।
कलिमां तूँ कहिवाय रे ।म०।
दरियउ रे भरियउ गुण रयणे करी रे।
दुख सहु दूरि गमाय रे ।म०।
लहिर धरउ महिर तणी हिवइ रे ।।८।।
भव जल निधि थी तारि रे ।म०।
विरुद थायइ रे साचउ तउ सही रे।
'विनयचन्द्र' जलधार रे ।म०।
वरसइ रे सगलइ पिण जोवइ नहीं रे ।।९।।

।।इति श्री स्वाभाविक पार्श्वनाथ स्तवनम् ।।

॥ श्री नारिंगपुर पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—आठ टकइ कंकण लीयउ री नणदी थिरकि रहयउ मोरी बांह,
ककणउ मोल लीयउ एहनी देशी

सुनिजर ताहरी देखिनइ रे जिनजी सफल थई मुझ आस।
मोरउ मन मोहि रह्यउ, हांरे जैसे मृग मधुर ध्वनि गीत ॥मो०॥
तुं माहरइ मन मइं वस्यो रे, जि० श्री नारंगपुर पास ॥१॥
तुझ मुख कमल निहालिवा रे, जि० रहती सबल उमेद ॥मो०॥
ते तुझ नइं मिलियाँ पछी रे जि० भागउ मन रउ भेद ॥मो०॥२॥
हुँ सेवक छुं ताहरउ रे जि० तुं साहिब सुप्रमाण ॥मो०॥
तें मन हेस्यो माहरउ रे जि० भावइ तउ जाण म जाण ॥मो॥३॥
खिण इक जउ तुझ नइ तजुं रे जि० तउ उपजै अंदोह ॥मो०॥
धरती पिण फाटइ हियो रे जि० पाणी तणय विछोह ॥मो०॥४॥
ताहरी सूरति नउ सदा रे जि० धरिस्युं निशि दिन ध्यान ।मो०।
जिण तिण मां मन घालतां रे जि० न रहै माहरउ मान ।मो०।५।
चरण न मेल्हुँ ताहरा रे जि० रहिस्युं केड़इ लागि ॥मो०॥
फल प्रापति पिण पामस्युं रे जि० जेह लिखी छइ भागि ।मो०।६।
मइं तउ कीधउ मो दिसा रे जि० ताहरइ ऊपरि मोह ॥मो०॥
विनयचन्द्र कहै माहरी रे जि० सगली तुझ ने सोह ॥मो०॥७॥

रहनेमि राजीमति स्वाध्याय

राग—हींडोल

शिवादेवी नंदन चरण वंदन चली राजुल नारि ।
प्रियु संगि रागी सती सागी चलत लागी वार ॥

निज प्राणपति कौ नाम जपती होत तृपती बाल ।
तहाँ मास पावस कइ उदै सें अइसइं जगत कृपाल ॥१॥
इण भांति सइं सखि आयउ वरषाकाल,
सउ तउ वरनत कवि सुविसाल ॥आंकणी॥
सजि बुंद सारी हर्षकारी भूमि नारी हेत।
झरलाय निर्झर झरत झरझर सजल जलद असेत॥
घन घटा गर्जित छटा तर्जित भये जर्जित गेह।
टब टबकि टवकत झबकि झबकत बिचि बिचि बीज कि रेह ॥२॥
अतहिं अवाजइं गगन गाजइ वायु वाजइ त्युंहि।
दिग चक्र झलकइ खाल खलकइ नीर ढलकइ भुंहि॥
दृग श्याम बादर देखि दादुर रटत रस भरि रइन।
वन मोर बोलइ पिच्छ डोलइ द्विरद खोलइ पुनि नइन ॥३॥इ०॥
उल्लसित हीयरौ करि पपीयरौ करत प्रियु प्रियु सोर।
विरह सइं पीरी अति अधीरी डरत विरहनि जोर
अंधकार पसरइ वैर विसरइ परस्पर भूपाल
सर्वरी शंका दैत डंका दिवसन मइ घरीयाल ॥४॥इ०॥
जहाँ परत धारा अति उदारा जानि गृह जल यन्त्र
स्वाधीन वनिता सौख्य जनिता करत कंत निमंत्र
मदन के माते रंग राते रसिक लोक अपार
बइठि कइ गोखइं मनइं जोखइं गावत मेघ मल्हार ॥५॥इ०॥
पंचरंग चोपें अधिक ओपइं इन्द्र धनुष सधीर।
बक श्रेणि सोहइ चित्त मोहइ सर सरित के तीर॥

तहाँ करत क्रीड़ा मुखइ बीड़ा चाबती त्रिय जात।
केसरी सारी मूल भारी पहिरि कै हर्ष न मात ॥६॥इ०॥
ससि सूर ढांकइ जहाँ तहाँ के पंथ पूरे नीर।
बकुल के वन में छिनकि छिन मइं झकोरतहि समीर ॥
बहु सलिल पाए वेलि छाए सघन वृक्ष सुहात।
झंकार भमरे करत गुणरे चुंवत पल्लव पात ॥७॥इ०॥
अद्रिसइं उतरी भरी जलसइं नदी आवत पूर।
करणी के दरखत निकट निरखत छिन करत चकचूर ॥
सूकत जवासौ तरु निवासौ करत पंखी वृन्द।
घन विप्रतारे सर संभारे हंस मिथुन निरदंद ॥८॥इ०॥
रंगइ रसीली निपट नीली हरी प्रगटत ज्यांहि।
डोलत अमोला मृदु ममोला लाल से तिन माँहि ॥
उच्छाह सेती करत खती करसनी सुविचार।
सब लोक कुं आनंद उपज्यौ ब्रज्यौ है दुरित प्रचार ॥६॥इ०॥
वरसात इन परि झरी मंडइ छिन न खंडइ धार।
राजीमती के वस्त्र भीने सबल झीने सार ॥
एकन गुफा में जाहि तामइं सुकाए सब चीर।
भई नगन रूपइं अति सरूपइं निरखी नेमि के वीर ॥१०॥इ०॥
निरखि कें नागी तुरत जागी मदन नृप की छाक।
घट भ्रमत ताकौ लगि झराकौ ज्यूं कुलाल की चाक ॥
चिहुँ ओर घेरी अग हेरी नृप सुता सुख काज।
कहै वचन ऐसे अटपटे से सुनत ही आवै लाज ॥११॥इ०॥

हुं गुफावासी नित उदासी रहत हुँ इन ठोर।
स्याबास तोकुं मिली मोकुं चित लीयउ तें चोर॥
भोगकउ हुं तउ अति भिख्यारी करौ प्यारी प्यार।
अब विरह टारौ हृदय ठारौ मिलौ मिलौ प्रान आधार॥१२॥इ
तब चीर पहिरइ सबद गुहिरइ अंग करिकइ गूढ़।
राजुल सयांनी वदत वानी सुनि अग्यानी मूढ॥
मुनि मागं मूंकइ चित्त चूकइ वृथा तु इन वैर।
क्युं व्रत विगोवइ लाज खोवइ रहि रहि जियकुं फेरि॥१३॥ इ० ॥
निद्रान्ध सिधुर बहुत बन्धुर उर्द्ध कन्धर होय।
जब धरत अंकुश सिर महावत ठौर आवत सोय॥
त्युं सदुपदेश विशेष देकइ विमल एकइ वइन।
वूझव्यौ सो रहनेमि विषयी गई जहाँ यदुपति सइन॥१४॥इ० ॥
यूं सुलभ बोधी आत्म सोधी गये मुगति मझार।
कलियुगइं उमगइं नाम जाकउ लेत है संसार॥
धरि ज्ञान अन्तर दशा सुदसा मनह मच्छर छोड़ि।
कवि विनयचन्द्र जिनेन्द्र भावै जपत है कर जोरि॥ १५ ॥इ० ॥

इति श्री रहनेमि राजीमत्योः स्वाध्यायः

॥ श्री स्नेह निवारणे स्थूलिभद्रमुनि सज्झाय ॥

राग—केदारो, ढाल—मेरे नन्दना, एहनी

सांभलि भोली भामिनी रे हां, परदेशी नै साथ। नेह न कीजियै।
भमर तणी परि जे भमै रे हां, ते नहीं केहनै हाथ॥ नेह० ॥१॥

नेह थी नरक निवास, नेह प्रबल छइ पास।
नेहे देह विनाश, नेह सबल दुख रास ।। नेह० ।। आ० ।।
परदेशी तउ प्राहुणा रे हां, मेल्ही जाय निराश । नेह० ।
तिण थी केहउ नेहलउ रे हां, न रहै जे थिर वास । ने० ।।२।।
पहिलि मिलीयइ तेह सुं रे हां, करियइ हास विलास ।ने०।
मिलि नइ वीछड़िवौ पड़े रे हां, तब मन होइ उदास । ने० ।। ३ ।।
वाल्हां नइ वउलावतां रे हां, पीड़इ प्रेमनी झाल । ने० ।
हीयड़ौ फाटइ अति घणुं रे हां, नांखइ विरह उछालि । ने०।।४।।
वलतां भुंइ भारणि हुवै रे हां, अंग तपइ अंगार । ने० ।
आंखड़ियइ आंसू पड़इ रे हां, जिम पावस जल धार । ने० ।।५।।
मत किणही सुं लगिज्यो रे हां, पापी एह सनेह । ने० ।
धुखइ न धुंओं नीसरइ रे हां, बलइ सुरंगी देह । ने० ।। ६ ।।
कोशा नइ स्थूलिभद्र कहइ रे हां, नेह नी बात न भाखि ।ने०।
तिण कीधइ ही सारियइ रे हां, विनयचन्द्र ए साखि ।ने०।।७।।

श्री स्थूलिभद्र बारहमासा

ढाल—चउमासियानी

आषाढ़इ आशा फली, कोशा करइ सिणगारो जी ।
आवउ थूलिभद्र वालहा, प्रियुड़ा करूं मनोहारो जी ।।
मनोहार सार शृङ्गार रसमां, अनुभवी थया तरवरा ।
वेलड़ी वनिता ल्यइ आलिंगन, भूमि भामिनी जलधरा।।
जलराशि कंठइ नदी विलगी, एम बहु शृंगार मां ।
सम्मिलित थइ नइ रहै अहनिशि, पणि तुम्हें व्रत भार मां ।। १ ।।

श्रावण हास्य रसइं करी, विलसउ प्रीतम प्रेमइ जी।
योगी भोगी नइ घरे, आवण लागा केमइ जी॥
तउ केम आवै मन सुहावै, वसी प्रमदा प्रीतड़ी
एह हासी चित विमासी, जोअउ जगति किसी जड़ी।
झरहरइ पावस मेघ वरसइ, नयण तिम मुख आंसुआं।
तिम मलिन रूपी बाह्य दीसउ, तिम मलिन अंतर हुआं॥२॥
भादउ कादउ मचि रह्यउ, कलिण कल्या बहु लोकोजी।
देखी करुणा ऊपजै, चन्द्रकान्ता जिम कोको जी॥
कोक परि विहू वोक करती, विरह कलणइ हुं कली।
काढियइ तिहां थी बांह झाली, करुणा रस नइ अटकली॥
मयमत्त तटिनी अनइ नारी, मेह प्रीतम नेह थी।
अवसरइ जउ ते काम नावइ, स्युं करीजै तेह थी॥ ३॥
आसू आसिक दिहाड़ला, एकलडां किम जायो जी।
रौद्र रसइ मुझ मन घणु, नित प्रति अति अकुलायोजी॥
अकुलाय धरणि तरुणी तरणो, किरण थी शोषत धरै।
उपपति परइ घन कंत अलगुं, करी घन वेदन करै।
तिम तुम्हे पणि विरह तापइ, तापवउ छउ अति घणुं।
चांद्रणी शीतल झाल पावक, परइं कहि केतउ भणुं॥४॥
काती कौतुक सांभरइ, वीर करइ संग्रामो जी।
विकट कटक चाला घणु, तिम कामी निज धामोजी।
निज धाम कामी कामिनी बे, लड़इ वेधक वयण सु।
रणतूर नेउर खड़ग वेणी, धनुष रूपी नयण सुँ।

ते वीर रस मां थया कायर, जेह योगी बापड़ा।
थरथरइ फिरता तेह दीसइ, उदासीन पणइ खड़ा ॥५॥
भयानक रसइ भेदियउं, मगिसिर मास सनूरो जी।
मांग सिरइ गोरी धरइ, वर अरुणी मां सिन्दूरो जी ॥
सिन्दूर पूरइ हर्ष जोरइ, मदन झाल अनल जिसी।
तिहां पड़इ कामी नर पतंगा, धरी रंगा धसमसी।
वलि अधर सधर सुधारसइं करि सींचि नव पल्लव करइ।
तिण प्रीति रीतइं भीति न हुवइ एम कोशा उच्चरइ ॥६॥
रस वीभत्से वासियउ, पोष महीनउ जोयौ जी।
दोषी पोषइ दिन दूबलुं, हिम संकोचित होयो जी ॥
संकोच होवइ प्रौढ रमणी, संगथी लघु कंत ज्युं।
तिम कंत तुमचउ वेष देखी, मइं वीभत्स पणुं भजुं ॥
ए प्रौढ रयणी सयण सेजइं एकलां किम जावए।
हेमंत ऋतु मइं प्रिउ उछंगइ, खेलवुं मन भाव ए ॥७॥
माघ निदाघ परइं दहै, ए अदभुत रस देखुं जी।
शीतल पणि जड़ता घणुं, प्रीतम परतिख पेखुं जी ॥
पेखुँ तुम्हा सित साधु दृग पणि रह्या मुझ हृदयस्थलइ।
ए मृषा संप्रति तुझ बिना मुझ प्राण क्षण क्षण टलवलइ ॥
इण परइं व्रत ना भंग दीसइ परिग्रह भणी आविया।
तउ एह अचरिज रस विशेषइं शुद्ध चारित्र भाविया ॥८॥
फागुन शान्त रसइ रमइं, आणी नव नव भावो जी।
अनुभव अतुल वसंत मां, परिमल सहज सभावो जी ॥

सहज भाव सुगंध तेलइं, पिचरकी सम जल रसइं।
गुण राग रंग गुलाल उडइ, करुण ससबोही वसइ॥
परभाग रंग मृदंग गूँजइ, सत्व ताल विशाल ए।
समकित तंत्री तंत भणकइ, सुमति सुमनस माल ए॥९॥
चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंब तणी वनरायो जी।
थुड़ शाखा अंकुरित थइ, सोह वसंतइ पायो जी॥
पाई वसंतइ सोह जिण परि, प्रियागमनइं पदमिनी।
सिणगार विन पिण मुदित होवइ, प्रेम पुलकित अंगिनी॥
रति हास्य मुख अड़ स्थायि भावइ, शोभती कोशा कहइ।
हुं कामिनी गजगामिनी मुझ, तो विना मन किम रहइ॥१०॥
वैशाखइ वन फूलीया, द्राख रसाल सुसाखइ जी।
अंब सु कलरव कोकिला, पंचम रागइं भाखइ जी॥
भाखइ तिहाँ वलि भाव आठे, सरस सात्विक सुखकरा।
पुलक स्वेद अव्यक्त स्वर नइं स्थंभ आँसू निर्भरा॥
इहाँ काम केरी दस अवस्था, धरइ देहइ दंपती।
प्रिउ देखि मुझ नइ तेह प्रगटे, कोशा मुख इम जंपती॥११॥
जेठ दीहाड़ा जेठ ना, लागइ ताप अथाहो जी।
विरहानल तपइं दियउ, प्रियु तुम चंदन बाँहो जी॥
बाँह चंदन सुगम सेव्यइ, भाव संचारिक वधइ।
तेत्रीस धृति मति स्मरण लज्जा शोक निद्रादिक सधइ॥
उन्मत्तता आनंद भय मद मोह उत्सुक दीनता।
वालंभ वाधइ ए विशेषइ, रहइ केम निरीहता॥१२॥

श्री स्थूलिभद्र मुणिंदना, भणीया बारहमासो जी।
नवरस सरस सुधा थकी, सुणतां अधिक उल्लासो जी ।।
उल्लास धरि ऋषिराज गायो, जिण रखायउ जगतमां।
निज नाम अति अभिराम चुलसी, चउवीसी शीलवंतमां ।।
गुरुराज हर्षनिधान पाठक, ज्ञानतिलक प्रसाद सुं।
गुर्जरा मंडन राजनगरइं, 'विनयचंद्र' कहइ इसुं ।।१३।।

।। श्री जिनचंद्रसूरि गीतम् ।।

बड़ बखती गुरु नित गाजै, वलि दिन दिन अधिक दिवाजै।
सहु गच्छपति सिर छाजै ।।१।। राजेश्वर पाटियइ पाउधारउ।
इक वीनतड़ी अवधारो ।पाटोधर०। श्रीसंघना वंछित सारउ ।।रा०
श्रीजिनधर्मसूरीसर पाटइं, पूज्य थाप्या घणै गहगाटइं।
नर नारी आगै जुड़ै थाटइं ।। रा० ।। २ ।।
वंशे बहुरा सिरदार, तात सांवलदास मल्हार।
माता साहिबदे उरि हार ।। रा० ।। ३ ।।
हंस परि माधुरी सी चाल, अति अद्भुत रूप रसाल।
मारग मिथ्यात उदाल ।। रा० ।। ४ ।।
तेजे करि जाणै सूर, शशिधर परि शीतल पूर।
जसु निलवट अधिकउ नूर ।। रा० ।। ५ ।।
नित नित चढती कला राजइ, युगवर जिनचंद विराजइ।
जसु भेट्यां भव दुख भाजइ ।। रा० ।। ६ ।।
छतीस गुणे करि सोहइ, गुरु भविक तणा मन मोहइ।
जगि इण समवड़ नहिं कोई ।। रा० ।। ७ ।।

नित पालै पंचाचार, षटकाय रक्षा करै सार।
उज्ज्वल उत्तम व्रत धार ॥ रा० ॥ ८ ॥
धन नगरी नइ धन देश, जहाँ सद्‌गुरु करै निवेश।
कीरति जग में सलहेस ॥ रा० ॥ ९ ॥
वंदो भवियण हित आणी, पूजजी नी मीठी वाणी।
साँभलतां अमिय समाणी ॥रा०॥१०॥
मानइ जेहनइ राण राया, प्रणमीजै प्रह्‌सम पाया।
मुनि 'विनयचन्द्र' गुण गाया ॥रा०॥११॥

ग्यारह अंग सज्झाय

(१) श्री आचारांग सूत्रसज्झाय

देशी—हठीला वयरी नी

पहिलौ अंग सुहामणो रे, अनुपम आचारांग रे सगुणनर
वीर जिणंदइ भाखीयउ रे लाल, उवाई जास उपांग रे सगुणनर।
बलिहारी ए अंगनी रे लाल, हूं जाउं वार वार रे स०
विनय गोचरी आदि दे रे लाल,
जिहां साधु तणउ आचार रे स० ।ब०। आंकणी।।
सुयक्खंध दोइ जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचीस रे स०
उद्देशादिक जाणियइ रे लाल, पंच्यासी सुजगीस रे स० ।ब०। २।।
हेत जुगति करी सोभता रे, पद अढार हजार रे स०
अक्षर पदनइ छेहड़इ रे लाल, संख्याता श्रीकार रे स० ।ब०। ३।।
गमा अनंता जेहमां रे, वलि अनन्त पर्याय रे स०
त्रस परित्त तउ छ इहां रे लाल, थावर अनन्त कहाय रे स० ।।४।।
निबद्ध निकाचित शासता रे, जिन प्रणीत ए भाव रे स०
सुणतां आतम उल्लसइ रे लाल, प्रगटइ सहज सभाव रे स० ।।५।।
श्रावक वारू श्रावका रे, अंग धरी उल्लास रे स०
विधिपूर्वक तुम्हें सांभलउ रे, लाल गीतारथ गुरू पास रे स० ।।६
ए सिद्धान्त महिमा निलौरे, ऊतारइ भव पार रे स०
'विनयचन्द्र' कहइ माहरइ रे लाल एहिज अंग आधार रे स० ।।७।।

।।इति श्री आचारांगसूत्र स्वाध्यायः ।।

(२) श्री सूयगडांग सूत्र सज्झाय

देशी—रसियानी

बीजउ रे अंग हिवइ सहु सांभलौ,
मनोहर श्री सूगडांग। मोरा साजन।
त्रिण्हिसइ त्रेसठि पाखंडी तणउ,
मत खंड्यउ धरि रंग। मोरा साजन।
मीठी रे लागइ वाणी जिन तणी, जागइ जेह थी रे ज्ञान।मो०।
ए वाणी मन भाणी माहरइ, मानु सुधा रे समान।मो० मी०।
रायपसेणी उपांग छइ जेहनु, एतउ सूत्र गंभीर।मो०।
जाणइ रे अर्थ बहुश्रुत एहना, एतउ क्षीर नीरधि नुं रे नीर मो०।२।
एहना रे सुयक्खंध दोइ छइ सही, वलि अध्ययन त्रेवीस।मो०।
उद्देशा समुद्देशा जिहां भला, संख्यायइं रे तेत्रीस मो० ॥३॥
नय निक्षेप प्रमाणइ पूरिया, पद छत्रीस हजार।मो०।
संख्याता अक्षर पद छेहड़इ, कुण लहइ एहनुं रे पार मो० ॥४॥
गमा अनंता वलि पर्याय ना, भेद अनंत जेह माँहि।मो०।
गुण अनंत त्रस परित कह्या वली, थावर अनंता रे ज्याँहि ॥५॥
निबद्ध निकाचित जे सासय कड़ा, जिन पन्नता रे भाव।मो०।
भाखी रे सुन्दर एह परूवणा, चरण करण नी रे जाव ॥मो० ६॥
करियइ भगति युगति ए सूत्रनी, निश्चय लहियइ मुक्ति।मो०।
विनयचन्द्र कहइ प्रगटइ एह थी, आतम गुण नी रे शक्ति ॥७॥

॥ इति श्री सूयगडांग सूत्र सज्झाय ॥

(३) श्री स्थानांग सूत्र सज्झाय

ढाल—आठ टके कंकणो लीयो री नणदी थिरकि रही मोरी वाँह एदेशी

त्रीजउ अंग भलउ कह्यउ रे जिनजी, नामइ श्री ठाणांग।
मोरौं मन मगन थयउ। हां रे देखि देखि भाव,
हां रे जिहां जीवाजीव स्वभाव।मो०। आंकणी ॥
सबल युगति करि छाजतउ रे जिनजी, जीवाभिगम उपांग ॥१॥

एह अंग मुझ मन वस्यउ रे जिनजी, जिम कोकिल दिल अंब।
गुहिर भाव करि गाजतउ रे जिनजी, आज तउ एह आलंब ॥२॥

कूट शैल शिखरी शिला रे जिनजी, कानन नइ वलि कुण्ड।मो०।
गह्वर आगर द्रह नदी रे जिनजी, जेहमां अछइ उद्दण्ड मो० ॥३॥

दश ठाणा अति दीपता रे जिनजी, गुण पर्याय प्रयोग।मो०।
परित्त जेहनी वाचना रे जिनजी, संख्याता अनुयोग ॥४॥

वेष्ट सिलोक निजुत्तिते रे जिनजी, संगहणी पड़िवत्ति।मो०।
ए सहु संख्याता इहां रे जिनजी, सुणतां उल्लसइ चित्त।मो० ५॥

सुयक्खंध एक राजतउ रे जिनजी, दश अध्ययन उदार।मो०।
उद्देशा एकवीस छइ रे जिनजी, पद बहोत्तर हजार।मो० ६॥
रागी जिन शासन तणा रे जिनजी, सुणइ सिद्धांत वखाण।मो०।
विनयचन्द्र कहइ ते हुवइ रे जिनजी, परमारथ ना जाण।मो०७॥

॥ इति श्री स्थानांग सूत्र स्वाध्यायः ॥

(४) श्री समवायांग सूत्र सज्झाय

चाल—थांहरइ महलां ऊपरि मोर झरोखे कोइली हो लाल झरो०

चउथउ समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल ।सु०।
पन्नवणा उवंग करी सोभा वणी हो लाल ।क०।
अर्द्ध मागधी भाषा साखा सुरतरु तणी हो लाल ।सा०।
समकित भाव कुसुम परिमल व्यापी घणी हो लाल ।प०॥१॥
जीव अजीव नइ जीवाजीव समास थी हो लाल कि जी०
लहीयइ एह मां भाव विरोध कोई नथी हो लाल वि०
भांगा तीन स्वसमयादिकना जाणीयइ हो लाल आदि०
लोक अलोक नइ लोकालोक वखाणीयइ हो लाल कि लो० ॥२॥
एक थकी छइ सत समवाय परूवणा हो लाल स०
कोड़ाकोड़ि प्रमाण कि जाव निरूवणा हो लाल कि जा०
बारस विह गणिपिटक तणी संख्या कही हो लाल त०
शासता अर्थ अनन्त कि छइ एहना सही हो लाल कि० ॥३॥
सुयक्खंध अध्ययन उद्देशादिक भला हो लाल उ०
संख्यायइं एक एक प्रत्येकइं गुणनिला हो लाल प्र०
पद एक लाख चउमाल सहस ते उत्तरा हो लाल स०
पद नइ अग्र उदग्र संख्याता अक्खरा हो लाल सं० ॥४॥
भाष्य चूर्णि निर्युक्ति करी सोहइ सदा हो लाल क०
सुणतां भेद गंभीर त्रिपति न हुवइ कदा हो लाल त्रि०
हेज न मावइ अंग कि अंतरगति हसी हो लाल कि अं०
जल वरसंतइ जोर कि कुण न हुवइ खुसी हो लाल किकु० ॥५॥

जाण्यउ धरम सनेह जिणंद सुँ माहरउ हो लाल जि०
तज्या शास्त्र मिथ्यात सूत्र जाण्यउ खरउ हो लाल सू०
जिम मालती लही भृंग करीरइं नवि रहइ हो लाल क०
ईश्वर सिर सुरगंग तजी पर नवि वहइ हो लाल त० ॥६॥
ए प्रवचन निर्ग्रंथ तणउ जुगतइं बड़उ हो लाल त०
साकर सेलड़ी द्राख थकी पिण मीठड़उ हो लाल थ०
सी कहीयइ बहु बात 'विनयचन्द्र' इम कहइ हो लाल वि०
एहना सुणिनइ भाव श्रोता अति गहगहइ हो लाल श्रो० ॥७॥

॥ इतिश्री समवायांग सूत्र स्वाध्यायः ॥

(५) श्री भगवतीसूत्र सज्झाय

देशी—पंथीड़ानी

पंचम अंग भगवती जाणियइ रे, जिहां जिनवर ना वचन अथाह रे
हिमवंत पर्वत सेती नीकल्या रे, मानु गंगा सिन्धु प्रवाह रे ।१।पं०
सूरपन्नती नामइ परगड़उ रे. जेहनउ छइ उद्दाम उवंग रे ।
सूत्र तणी रचना दरीया जिसी रे, मांहिला अर्थ ते सजल तरंग रे
इहां तउ सुयक्खंध एक अति भलउ रे,
एक सउ एक अध्ययन उदार रे ।
दस हजार उद्देशा जेहना रे,
जिहां कणि प्रश्न छतीस हजार रे ॥३॥पं०॥
पदतउ दोइ लाख अरथइं भर्‌या रे,
ऊपरि सहस अठ्यासी जाणि रे ।

लोकालोक स्वरूप नी वर्णना रे,
विवाहपन्नती अधिक प्रमाण रे ॥४॥पं०॥
करियइ पूजा अनइ प्रभावना रे,
धरियइ सुद्गुरु ऊपरि राग रे।
सुणियइ सूत्र भगवती रंग सुं रे,
तउ होइ भवसायर नुं ताग रे ॥५॥पं०॥
गौतम नामइ नाणुँ मुकीयइ रे,
सम्यग् ज्ञान उदय होइ जेम रे।
कीजइ साधु तथा साहमी तणी रे,
भगति जुगति मन आणी प्रेम रे ॥६॥पं०॥
इण परि एह सूत्र आराधतां रे,
इण भवि सीझइ वंछित काज रे।
परभवि विनयचन्द्र कहइ ते लहइ रे,
मोहन मुगतिपुरी नउ राज रे ॥७॥पं०॥
इतिश्री भगवती सूत्र स्वाध्यायः।

(६) श्री ज्ञातासूत्र सज्झाय

ढाल—कित लाख लागा राजाजी रे मालीयइ जी एहनी।

छट्ठउ अंग ते ज्ञातासूत्र बखाणियइजी,
जेहना छइ अर्थ अधिक उद्दण्ड हो।
म्हांरी सुणिज्यौ धरि नेह सिद्धान्त नी बातड़ी जी।
श्रवणे सुणतां गाढउ रस ऊपजइ जी,
मधुरता तर्जित जिण मधुखंड हो ।१।म्हां०॥

जम्बूदीव पन्नती उपांग छइ एहनुं जी,
इण माहे जिनपूजा नी विधि जोर हो ।म्हां०।
अर्चक मुणि परम शातरस अनुभवइ जी,
चर्चक मुणि करइ सभा मां सोर हो ।म्हां०।२।
नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणा जी,
समोशरण राजा ना मात नइं तात हो ।म्हां०।
धर्माचारिज धर्मकथा तिहाँ दाखवी जी,
इहलोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो ।म्हा०।३।
भोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी,
सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ।म्हां०।
संलेहण पचखाण पादपोपगमनता जी,
स्वर्गगमन शुभकुल उतपत्ति प्रधान हो ।म्हां०।४।
बोधिलाभ वलि तंत ते अंत क्रिया कही जी,
धर्मकथा ना दोइ अछइ श्रुतखंध हो ।म्हां०।
पहिला ना उगणीस अध्ययन ते आज छइ जी,
बीजा ना दस वर्ग महा अनुबंध हो ।म्हा०।५।
उंठ कोड़ि तिहां सबल कथानक भाखीयाजी,
भाख्या वलि उगणतीस उद्देस हो ।।मां०।।
संख्याता हजार भला पद एहना जी,
एह थकी जायइ कुमति किलेस हो ।।६ मां०।।
विनय करै जे गुरु नो बहु परइजी,
तेहनइ श्रुत सुणतां बहु फल होइ हो ।।मां०।।

ते रसीया मन वसीया विनयचंद्र नइ जी,
सउ मांहि मिलइ जोया एक कइ दोय हो ।७ मां०।।
।। इति श्री ज्ञाता धर्मकथांग स्वाध्याय ।।

(७) श्री उपासकदसांग सूत्र सज्झाय

हिवइ सातमउ अंग ते सांभलउ, उपासक दशा नामइ चंग रे।
श्रमणोपासकनी वर्णना, जस चन्दपन्नति उवंग रे।।१।।
मन लागउ रे मोरउ सूत्र थी, एतउ भव वइराग तरंग रे।
रस राता गुण ज्ञाता लहइ, परमारथ सुविहित संग रे।।२।।
इण अग सुयक्खध एक छइ, अध्ययन उद्देश विचार रे।
दस दस सख्यायइं दाखव्या, पद पिण संख्यात हज्जार रे।।३।।
आणंदादिक श्रावक तणउ, सुणतां अधिकार रसाल रे।
रस लागइ जागइ मोहनी, श्रोताजन नइ ततकाल रे।।४।।
श्रोता आगलि तउ वाचतां, गीतारथ पामइ रीझ रे।
जे अद्धदग्ध समझइ नहीं, तेह सुँ तो करिवी धीज रे।।५।।
दश श्रावक तउ इहां भाखिया, पिण सूत्र भण्यउ नहिं कोई रे।
ते माटइं शुद्ध श्रावक भणी, एक अर्थनी धारणा होइ रे।।६।।
साचो होअइ तेह प्ररूपियइ, निस्संक पणइ सुजगीस रे।
कवि विनयचन्द्र कहइ स्युं थयउ, जउ कुमती करिस्यइ रीस रे।।७।।

।। इति श्री उपासक दसांग सूत्र स्वाध्याय ।।

(८) श्री अंतगड़दशांग सूत्र सज्झाय

ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणाजी, एहनी

आठमो अंग अंतगड़दशाजी, सुणि करउ कान पवित्र।
अंतगड़ केवली जे थया जी, तेहना इहाँ रे चरित्र ॥१॥ आ०
कर्म कठिन दल चूरता जी, पूरता जगतनी आस।
जिनवर देव इहां भासता जी, शासता अर्थ सुविलास ॥२ आ०॥
सकल निक्षेप नय भंग थी जी, अंगना भाव अभंग।
सहज सुख रंगनी तल्पिका जी, कल्पिका जास उवंग ॥३ आ०॥
एक सुयखंध इणि अंग नउजी, वर्ग छइ आठ अभिराम।
आठ उद्देशा छइ वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥४ आ०॥
आठमा अंग ना पाठमइं जी, एहवउ छइ रे मीठास।
सरस अनुभव रस ऊपजइजी, संपजइ पुण्य नी राशि ॥५ आ०॥
विषय लपट नर जे हुवइ जी, निरविषयी सुण्यां थाइ।
जिम महाविष विषधर तणउ जी, नाग मंत्रइ सुण्यां जाइ ॥६॥
अमृत वचन मुख वरसती जी, सरसती करउ रे पसाय।
जिम विनयचन्द्र इण सूत्रना जी, तुरत लहइ अभिप्राय ॥७ आ०॥

॥ इति श्री अंतगड़ दशांग स्वाध्याय ॥

(९) श्री अणुत्तरोववाई सूत्र सज्झाय

देशी—नणदल बीदली दे, एहनी

नवमो अंग अणुत्तरोववाई, एहनी रुचि मुझ नइ आई हो।
श्रावक सूत्र सुणउ॥
सूत्र सुणउ हित आणी, एतो वीतराग नी वाणी हो ॥१ श्रा०॥

जस कल्पावतंशिका नामइ, सोहइ उवंग प्रकामइ हो ।।श्रा०।।
एतो आगम नइ अनुकूला, मानु मेरुशिखर नी चूला हो ।।२।।
ए सूत्र नुं नाम सुणीजइ, तिम तिम अंतरगति भीजइ हो ।।श्रा०।।
प्रगटइ कोई नवल सनेहा, एह थी उलसइ मोरी देहा हो ।श्रा० ३।।
अणुत्तर सुरपद जे पाया, तेहना गुण इण मां गाया हो ।।श्रा०।।
नगरादिक भाव वखाण्या, ते तउ छट्ठइ अंगइ आण्या हो ।।४।।
इहां एक सुयक्खंध वारू, त्रिण्ह वग वली मनोहारू हो ।।श्रा०।।
उद्देशा त्रिण्ह सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ।।श्रा० ५।।
अम्हे सूत्र सुणावुं तेहनइ, सारी श्रद्धा होवइ जेहनइ हो ।।श्रा०।।
श्रोता थी प्रीति जगावुं, निंदक नइ मुँह न लगावुं हो ।।श्रा० ६।।
जे सुणतां करइ बकोर, ते तउ माणस नहीं पिण ढोर हो ।।श्रा०।।
कवि विनयचन्द्र कहइ साचउ, श्रुत रंगइ सहु को राचउ हो ।।७।।

।। इति श्री अणुत्तरोववाई सूत्र स्वाध्याय ।।

(१०) श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र सज्झाय

ढाल—आघा आम पधारो पूजि

दशमउ अंग सुरंग सोहावइ, प्रश्नव्याकरण नामइं ।
सूत्र कल्पतरू सेवइ तेतउ, चिदानन्द फल पामइ ।।१।।
आवउ आवउ गुण ना जाण, तुम्ह नइ सूत्र सुणावुं ।।आ०।।
पुष्पकली जिम परिमल महकइ, गुण पराग नइ रागइ ।
तिम उवंग पुष्पिका एहनउ, जोर जुगति करि जागइ ।।१ आ०।।
अंगुष्टादिक जिहाँ प्रकाश्या, प्रश्नादिक अति रूडा ।
ते छइ अठोतर सत एतउं, सूत्र मध्य मणि चूडा ।।३ ।।आ०।।

आश्रव द्वार पाँच इहाँ आण्यां, पांचे संवर द्वारा।
महामंत्र वाणी मां लहीयइ, लबधि भेद सुखकारा ॥४॥आ०॥
सुयक्खंध एक दशमइ अंगइ, पणयालीस अज्झयणा।
पणयालीस उद्देश वलीपद, सहस संख्यात नी रयणा ॥५॥आ०॥
जे नर सूत्र सुणइ नहि काने, केवल पोषइ काया।
माया मांहि रहइ लपटाणा, ते नर इम ही जाया ॥६॥आ०॥
सूत्र मांहि तउ मार्ग दोइ छइ, निश्चय नइ व्यवहारा।
'विनयचन्द्र' कहइ ते आदरीयइ, तजि मद मदन विकारा ॥७॥आ०

॥ इतिश्री प्रश्न व्याकरण स्वाध्यायः ॥

(११) श्रीविपाकसूत्र सज्झाय

ढाल—तारि करतार संसार सागर थकी, एहनी

सुणउ रे विपाक श्रुत अंग इग्यारमउ,
तजउ विकथा वृथा जे अनेरी।
ललित उवंग जस प्रवर पुप्फचूलिका,
मूलिका पाप आतंक केरी ॥ १॥सु० ॥
अशुभ किंपाक सम दुकृत फल भोगवी,
नरक मां गरक जे थयां प्राणी।
सुकृत फल भोगवी स्वर्ग मां जे गया,
तास वक्तव्यता इहां आणी ॥२॥सु०॥
दोइ श्रुतखंध नइ वीस अध्ययन वलि,
वीस उद्देस इहाँ जिन प्रयुंजइ।

सहस संख्यात पद कुन्द मचकुन्द जिम,
बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजइ ॥३॥सु०।

सरस चंपकलता सुरभि सहु नइ रुचइ,
अन्य उपगार नी बुद्धि माटइ।
सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियइ,
जेहथी पुरुष सुख अचल खाटइ ॥४॥सु०॥

बंध नइ मोक्ष ना बेउं कारण अछइ,
दुकृत नइ सुकृत जोअउ विचारी।
दुकृत नइ परिहरी सुकृत नइ आदरी,
जिन वचन धारियइ गुण संभारी ॥५॥सु०

म करि रे म करि निंदा निगुण पारकी,
नारकी तणी गति कांइ बंधइ।
मारकी प्रकृति तजि सहज संतोष भजि,
लागि श्रुत सांभली धर्म धंधइ ॥६॥सु०॥

सुख अनइ दुक्ख विपाक फल दाखव्या,
अंग इग्यारमइ वीतरागइ।
चिर जयउ वीर शासन जिहां सूत्र थी,
कवि 'विनयचंद्र' गुण ज्योति जागइ ॥७॥सु०

॥ इतिश्री विपाक श्रुताङ्ग स्वाध्यायः ॥

॥ एकादशांग स्वाध्यायः ॥

ढाल—अयोध्या हे राम पधारीया, एहनी

अंग इग्यारे मइं सुण्या सहेली हे आज थया रङ्ग रोल कि।
नन्दी सूत्र मइ एहनउ सहेली हे भाख्यउ सर्व निचोल ॥१॥
सहेली हे आज वधामणा ॥
पसरी अंग इग्यार नी सहेली हे मुझ मन मडप वेलि कि।
सींचूँ नेह रसइ करी सहेली हे अनुभव रसनी रेलि। २॥
हेज धरी जे सांभलइ सहेली हे कुण बूढा कुण बाल कि।
तउ ते फल लहै फूटरा सहेली हे स्वादइं अतिहि रसाल ॥३॥
हर्ष अपार धरी हियइ सहेली हे अहमदाबाद मझार कि।
भास करी ए अगनी महेली हे वरत्या जय जयकार ॥४॥
संवर सतर पंचावनइ सहेली हे वर्षा रिति नभ मास कि।
दसमी दिन वदि पक्ष मां सहेली हे पूर्ण थई मन आस ॥५॥
श्री जिनधर्मसूरि पाटवी सहेली हे श्रीजिणचन्दसूरीस कि।
खरतर गच्छ ना राजीया महेली हे तस राजइ सुजगीस ॥६॥
पाठक हर्षनिधानजी सहेली हे ज्ञानतिलक सुपसाय कि।
'विनयचन्द्र' कहइ मइं करी सहेली हे अंग इग्यार सिज्झाय ॥७॥
इति श्री एकादशांगानां स्वाध्यायः ॥१२॥

संवत् १७६६ वर्षे मिति वैशाख सुदि १४ दिने श्री विक्रमनगरे उपाध्याय श्री हर्षनिधानजी शिष्य प० ज्ञानतिलक लिखतं ॥ साध्वी कीर्त्तिमाला शिष्यणी हर्षमाला पठनार्थं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमवतु ॥ कल्याण मस्तुः ॥ श्रेयांसि प्रवर्त्तनां ॥

श्री दुर्गति निवारण सज्झाय

ढाल—बीबी दूर खड़ी रहि लोकां भरम धरेगा

सुगुन सहेजा मेरा आतम, तेरी शुभ मति जागी।
सहज संतोष मन्दिर में मोह्या, मुगति वधू रस लागी ॥१॥
दुर्गति दूर खड़ी रहि, तेरा काम नहीं है ॥ आंकणी ॥
शम दम दोऊ अजब झरोखे, तेज प्रदीप बनाया।
धर्म ध्यान का लाल दुलीचा, नीचइं खूब बिछाया ॥२॥ दु०॥
समकित तख्त क्षमा का तकिया, मंडप शील सुहाया।
ज्ञान छत्र चामर चारित गुन, परम महोदय पाया ॥३॥ दु०॥
शुचि सुगंधता परिमल महकं, सुरुचि सखी मन भाया।
उपशम पुत्र सुलच्छन सुन्दर, आतम नृप घरि आया ॥४॥ दु०॥
ए विलास सब मुगति रमनि के, छिन छिन में सुखकारी।
सोहागिन से रंग लग्यो तब, तुझ सें दृष्टि उतारी ॥५॥ दु०॥
तूं तो दुर्गति दुष्ट दुहागिन, लोकन से लपटानी।
पर प्रपंच सुत अरुचि सखी के संगइ तोहि पिछानी ॥६॥ दु०॥
अति दुर्गन्ध अशुचिता प्रगटे, निरगुनता से लीनी।
तेरो संग करै सो मूरख, तूं तो बहुत दुखीनी ॥७॥ दु०॥
समता सायर मेरो आतम, ज्योतिवंत अविनाशी।
परमानन्द बिलासो साहिब, सज्जनता प्रतिभासी ॥८॥ दु०॥
मुगति प्रिया रस भीनो अहनिश, दुर्गति दूर निवारी।
विनयचन्द्र कवि आतम गुन से, होइ रहे अधिकारी ॥९॥ दु०॥

श्री जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्याय

॥ दूहा ॥

विपुल विमल अविचल अतुल, निस्तल केवलज्ञान।
तास प्रकाशक चरम जिन, मन धरि तेहनउ ध्यान ॥१॥
जिन प्रतिमा वंदन तणउ, हिव कहिस्युं अधिकार।
जे निर्गुण मानइ नहीं, तेहनइ पड़उ धिकार ॥२॥
अभव छेदक भाव थी[1], लख्यउ न जायइ दंभ।
संमूर्छिम कपटी तणउ, क्षण ऊतरस्यइ अंभ ॥३॥
शास्त्र तणी युगति करी, सद्गुरु भाषइ तास।
कुमति वास नें तुं पड्यउ, किमी मुगति नी आस ॥४॥
अरे दुष्ट बुद्धि विकल[2], किम निंदइ जिन बिंब।
अंब सपल्लव छोड़ि नइ, किम भजइ तुं निंब ॥५॥
जिन प्रतिमा निश्चय पणइ, सरस सुधारस रेलि।
चिन्तामणि सुरतरु समी, अथवा मोहनवेल ॥६॥
नेह विना सी प्रीतड़ी, कण्ठ बिना स्यउ गान।
लूण बिना सी रसवती[3], प्रतिमा विण स्यउ ध्यान ॥७॥
हेज[4] दिदृक्षायें धरइ, जिन मूरति नउ संग।
ते नर जस सांप्रति लहैं, जेहवा गंग तरंग ॥८॥
तीर्थंकर पिण को नहीं, नहीं को अतिशय धार।
जिन प्रतिमा नउ इण अरइ, एक परम आधार ॥९॥

१—व्यक्ति युक्ति नै निरखता २—निठुर
३—दीपक विण मन्दिर विस्यउ ४—हष्टुँ इत्यादि दृष्टान्तया

ढाल—१ ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं एहनी

तें तउ रे निज मत संग्रह्यउ, सहु नी तजि लाज रे।
तिण कारण तुझ नइ कहुं, सुविदित हित काज रे ॥१॥
जिनवर प्रतिमा वंदियइ, मन मां धरि रंग।
समकित संकित कारणे, थायइ बहु भंग रे ॥२॥ जि०॥
तुझ नइ रे कहता स्युं हवइ, वायस नइ श्रावइ[1] रे।
जउ दुग्धइ प्रक्षालियइ, पिण धवलता नावइ रे ॥३॥ जि०॥
उपल मुद्गशैलिक तणइ, ऊपरि घन बरसै रे।
आर्द्र तदपि न हुवइ कदा, तुझ ते गुण फरसै रे ॥४॥ जि०॥
वलि ऊखर धर ऊपरइ, जउ बीज कउ वाहै रे।
अंकुर मात्र न नीपजइ, नहु एम सराहैं रे ॥५॥ जि०
बधिर भणी जउ को कहइ, अनुगामि प्रमाण रे।
पिण तसु मन अहि कांतनी, व्यापकता जाण रे ॥६॥ जि०
श्वान तणी वलि पूंछनउ, दृष्टान्त दृढ़ायौ रे।
पिण कुमति तुझ चित्त मां, आखर ते नायउ रे ॥७॥ जि०॥

ढाल—२ माखी नी देशी

शुद्ध परंपरा मानियइ, प्रतिमा नो प्रतिरूप। अज्ञानी।
जिन सादृशतायें सही, इम व्यवहार प्ररूप अज्ञानी ॥१॥
एहिज तत्व विचारियइ, जउ क्युं जाणै साच अज्ञानी।
आनहितउ ते ताहरइ दिसा, पाच तजी ग्रह्यउ काच अ० ॥२॥

---

[1] १—श्रवण-श्रावस्तेन

समकित विण प्रतियोग थी, शक्ति न ताहरइ बांहि अज्ञानी ।
आ गुण सद्भाविक देखतां, न मिलइ तुझ घट मांहि अ० ॥३॥
वंदन अंग उपासकें, वलि ठाणांग मझार अज्ञानी ।
रायपसेणी मइ कह्यउ, सूरीयाभ सविचार[1] अज्ञानी ॥४॥ए०॥
न्याता अंगइ जाणियइ, द्रूपदि नइ अधिकार अज्ञानी ।
तिम अंबड़ अधिकार थी, निरखि उवाई सार अज्ञानी ॥५॥ए०॥
चारण श्रमण नमइ सदा, जिन प्रतिमा सस्नेह अज्ञानी ।
ते छइ भगवई अंगमाँ, किम मन आणइ रेह अज्ञानी ॥६॥ए०॥
एक सदय गुण तूँ करइ, सूत्र बहुल नउ लोप ॥ अज्ञानी ॥
तउ तुझ नइ दीठां विना, मन नइं आवइ कोप अज्ञानी ॥७॥ए०॥

ढाल (३)

चाल—जोमीडानी

दृश्य पणइ आवश्यकै रे, भावित कायोत्सर्ग ।
प्रतिमा विण निःफल कह्यउ रे, तौ स्युं वाक्यिक वर्ग ॥१॥
अधर्मी प्रतिमाये स्यउ बंध ।
जड़मति नइ अनुभाव थी, जाति तणउ तूं अंध ॥२॥अ०॥
विजयदेव अति भक्ति सुं रे, पूज्या श्री जिनराय ।
इम छइ जीवाभिगम मां रे, ते तुझ नावइ दाय ॥३॥अ०॥
वलि जिन पूज्या शुभ मनइ रे, श्री सिद्धारथ राय ।
कल्पसूत्र संपेखि नइ रे, तसु अवगम चित लाय ॥४॥अ०॥
दानादिक सम भाखियउ रे, अरचा नउ फल सूध ।
महानिशीथे ते लहइ रे, तो स्यूं तेह असूध ॥५॥अ०॥

१—विचारेण सहित

धर्म विशेष विरुद्धता रे, ते प्रारंभी मूध।
ते हिव शोभा किम रहइ रे, जिम कांजीयइ दूध ॥६॥अ०॥
साधन फल तं आदरयउ रे, करण बिना परतक्ष।
पिण कितलाइक दिन रहै रे, नदी कनारै वृक्ष ॥७॥अ०॥

ढाल (४)

चाल—मोहन सुन्दरी ले गयउ, एहनी

चिदानंद फल जउ ग्रहइं, जिन पूजा मन धार।
आधाकर्मिक भांति नउ हो, दूषण नहीय लिगार ॥१॥
मूरख रे मानि कथन तूं माहरउ ॥आंकणी॥
ताहरउ मन भ्रामिक थयउ, अर्चिन हिंसा हेत।
नाग भूत यक्षादि नउ हो, विवरण सगलउ चेत ॥२॥मू०॥
पिण जिन हेति नवि कह्यउ, सूयगडांग मइ देखि।
भाष्य चूर्णि निर्युक्तियइ हो, एहिज अर्थ विशेष ॥३॥मू०॥
मानइ सूत्र सहु वली, पिण प्रतिमा सुं द्वेष।
तउ ताहरइ मुखि दीजियइ हो, मषीय कूर्चिका रेख ॥४॥मू०॥
जिनवर जैन समाचरइ, शैव ब्रह्म हरि राम।
तूं तउ एकण मां नहीं हो, निर्गन भेष प्रकाम[1] ॥५॥मू०॥

कलश

इम सुगम कहतां जउ न समझै, सूत्र नउ बोधक पणउ।
भव में अनंतानंत कालइ, दुख देखिस तूं घणउ॥
आणा विना जे मत उपाजइ, नरक तासु निदान ए।
कवि विनयचन्द्र जिनेश प्रतिमा, तणउ धरिये ध्यान ए ॥१॥

इतिश्री जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्यायः सर्व गाथा ३६

[पत्र १ आचार्य ख० गच्छ भण्डार]

१ प्रकाम—अतिशयेन

कुगुरु स्वाध्याय

॥ दूहा* ॥

जैन युक्ति सुं साधना, आगम सुं अनुकूल ।
नित अविहित लक्षण हरण, सुविहित लक्षण मूल ॥१॥
सिद्धि शक्ति धारक सदा, व्यक्ति गुणइ अनुबन्ध ।
निहत निरंजण भक्ति विधि, जानि हेतु निरबंध ॥२॥
धंध गिणइ संसरण सुख, चरण करण गुण लीण ।
अतिशय सुध जसु आचरण, क्रिया धरण सुप्रवीण ॥३॥
मिथ्या भ्रम रूपक द्विरद, तिहा पंचायण जेह ।
चिदानंद चिद्रूप सुँ, निस दिन अधिक सनेह ॥४॥
एहवा सदगुरु वंदियइ, जिम थायइ भव अंत ।
कुगुरु कपटधर वंदतां, तद्गुण न रहइ तंत ॥५॥

ढाल (१)

चाल—हठीला वयरीनी

[सार सु] प्रवचन नउ ग्रही रे,
विदित प्रपंचक भाव रे ॥सगुण नर॥
अनुभव कहि [सुं'र] गमु' रे लाल,
कुगुरु तणइ प्रस्ताव रे ॥सगुण नर ॥१॥

---

* प्रारम्भ करनेके पूर्व आलिये पर लिखे दोहे :—
धर्म वचन साधक सदा, जिन वचनां पक्षीण ।
प्रस्तुतानुयोगिक सदा, जे सोधिक सुकुलीण ॥१॥
उपादान मित भुक्तविधि, अन्वेषणीय प्राय ।
प्रस्तुतानुयोगिक तणा, जे सोधिक मुनिराय ॥२॥
मारग साधु तणउ कह्यउ, दर्शन ज्ञान चरित्र ।
तिणथी खिण विरचइ नहीं, निशिदिन पुण्य पवित्र ॥३॥

श्रुति विकसित चित सांभलउ रे लाल,
अधिक प्रयोजन आणि रे ।।स०।।
अंतरगत गुण पामिस्यउ रे लाल,
ए समवाय प्रमाण रे ।।स०।।२।।श्रु०।।
प्रथम द्रव्य भावइं रहइ रे लाल,
विकल सकल आचार रे ।।स०।।
चलन अवधि स्वच्छन्द सुँ रे लाल,
नित निर्गत उपचार रे ।।स०।।३।।श्रु०।।
बाह्य दृष्टि विरतंतनउ रे,
भेदक विविध प्रकार रे ।।स०।।
प्रवहमान पर वृत्ति सुँ रे लाल,
जेम जलदनी धार रे ।।स०।।४।।श्रु०।।
इन उन्मारग चालतां रे,
नवि पामइं तिहां लाग रे ।।स०।।
चित्त विचारि समाचरइ रे लाल,
वलि मरकट वइराग रे ।।स०।।५।।श्रु०।।

ढाल २ सोरठ देश सुहामणउ, एहनी

अंतरगति आतप करइ, जप बहिरंग प्रधान लाल रे।
अबर मांहे जे धरइ, शबकर पट उपमान लाल रे ।।१।।
अवयव तादृश आचरइ, बचन तथा विध थाय लाल रे।
सविकल्प चिन्तन करइ, अहनिशि अध्यवसाय लाल रे ।।२।।
चाहइ वेगि निरूपणा, सम पूरब पद चार लाल रे।
पिण इण कलि मांहे नहीं, सांप्रति सहु परिवार लाल रे ।।३।।

रस आसंकायइं करइं, ज्वर औषध विधि जेम लाल रे।
कारिज नइ आलंबतां, पृथिवी सुत सुं प्रेम लाल रे।।४।।
इम संचरता हित धरी, ते स्तुति करि कहइ धन्य लाल रे।
ते जग मांहे जाणियइ, परतखि पण्डित मन्य लाल रे।।५।।

ढाल ३ हरिया मन लागउ, एहनी

जिण अधिकारइ ऊपनउ, जे अनवस्थित दोष रे।
साजन सुणि मोरा।
हिव तेहिज विवरणा तणउ, निश्चय करिस्युं पोष रे।सा०।।१।।
जउ पूरब विधि मइं रहइ, न करउ किम विपरीत रे।सा०।
पिण पासत्थउ ते खरउ, सर्व देश परिणीत रे। सा०।।२।।
ज्ञानादिक गुण जे तजइ, न वदइ मारग सूध रे। सा०।
साध तणी निंदा करइ, लोक भ्रमावइ मूध रे। सा०। ३।।
नवेय वखाणे जे करइ, कल्प वाचनता तेम रे। सा०।
साद्दशता तेहनी लहइ, कल्पचूरणि मइ एम रे। सा०।।४।।
नित्य सिझातर अन्नइ, आगलि देइ पिंड रे। सा०।
जे ल्यइ तिणनइ तिण विधइ, आवश्यक द्यइ दंड रे।सा०।।५।।

ढाल ४ मेरे नन्दना, एहनी

साधु कहावइ सइं मुखइ रे हां, न मिले वचन विवेक।
वचन किसा कहुँ।
अवलंबन किहां थी ग्रहइ रे हां, इहां छइ जुगति अनेक। व०।।१।।
जे नव कल्पी नवि करै रे हां, उद्यत मुदित विहार। व०।
मास दिवस ऊपरि रहइ रे हां, सेषइ काळ अपार। व०।।२।।
तिण सरिखउ ते दाखव्यउ रे हां, आचारांग मझार। व०।
आधाकर्मिक आश्रहइ रे हां, ते ठाणांग विचार। व०।।३।।

शास्त्र लिखावइ जे वली रे हां, पिण न रहइ व्यवहार। व०।
इम अधिकतायइ कहइ रे हां, प्रवचन सारोद्धार। व० ॥४॥
(बात करइ जे मारगै रे हां, उत्तराध्ययनइ तेह ।व०।)
व्याख्यानादिक नित करइ रे हां. उपदेशमाल में तेह। व०।
इत्यादिक आगम तणी रे हां, साख कही निसंदेह। व० ॥ ५ ॥

ढाल ५ यतिनी

हिव तास प्रसगइ जेह, ते पिण कहीयइ ससनेह।
उसन्नउ दुविध प्रकार, तसु अन्त पणइ व्यभचार ॥१॥
वलि भाख्यउ त्रिविध कुशील, नाण दंसण चरण निमील।
बिहुँ भेद कह्यउ संसत्तउ, शुभ अशुभ प्रकृति संपत्तउ ॥२॥
जह छंद लगइ ए पंच, सद्भाविक सगलउ संच।
चिहुँ नउ निर्णय नवि कीधउ, स्वाभाविक फल गुण लीधउ ॥३॥
परमातम ग्रहण विशेष, ते संग्रहिज्यो अवशेष।
भाषित त्रिहुँ नइ अनुयाय, व्याकृति समयादिक न्याय ॥४॥
निज कल्पित दोइ प्रकार, शास्त्रादिक पंच उदार।
पासत्थादिक सूं दूर, तसु वन्दन ऊगत सूर ॥५॥

॥ कलश ॥

इम युक्ति साधन धरी चितमइ कीध सबल सरूपता।
जाणिस्यइ तौ पणि तेह लहिस्यै प्रबल अनवच्छिन्न लता ॥
उच्छेदि असमर्थक तणउ मत विनयचन्द विख्यात ए।
उपदिसइ सहु नी प्रार्थना वशि इण परइ आख्यात ए ॥१॥

॥ इति श्री कुगुरु स्वाध्यायः ॥ सर्वगाथा ३१

कविवर विनयचन्द्र विरचित

श्री उत्तमकुमार चरित्र चौपाई

॥ दूहा ॥

एकदन्तो महावीर्य्यो, नमोस्तु सरस पाणिने।
सिद्धन्ति सर्व कार्याणि, त्वं प्रसाद विनायकः ॥१॥
ॐ अक्षर अतुल बल, चिदानन्द चिद्रूप।
सकल तत्व सपेखतां, अविचल अलख अनूप ॥२॥
अजर अमर अविकार निति, ज्योति तणौ जे ठाम।
सत्य रूप साराहियै, पूरण वंछित काम ॥३॥
जेहनै नाम स्मरण थी, फीटै सगला फंद।
मंदमती पंडित हुवै, दूरि टलै दुख दंद ॥४॥
योगी ध्यावै युक्ति सुं, भक्ति करी भरपूर।
सर्व तेहनै व्यक्ति गुण, शक्ति सहित ससनूर ॥५॥
मंत्र मुख्य बीजक कह्यो, सार सहित सुविलास।
अरिहंतादिक पंच नौ, अन्तर जास निवास ॥६॥
अभ्र मांहि जिम ध्रू अडिग, शेषनाग पाताल।
मृत्युलोक मा मेरु जिम, तिम ए वरण विसाल ॥७॥
ते अक्षर तो छै वलू, मन पिण आगेवाण।
सरसति माता आपजे, मुझ नै अमृत वाणि ॥८॥
श्रीजिनकुसलसुरिंद गुरु, पूरौ मुझ मन आस।
अंतरजामी जाणि नै, करीयै निज अरुदास ॥९॥

जोड़ि तणी का सुद्धि नहीं, हूं अति मूढ़ अयाण ।
तुम सुपसाये जे कहुं, चाढो तेह प्रमाण ॥१०॥
दान सुपात्र समो न को, मुक्ति तणो दातार ।
उलट धरि द्यै ते तजै, सलिल निधि संसार ॥११॥
सालिभद्र आदिक उपरि, दान तणे अधिकार ।
जिनशासन मां जोवतां, चरते नावै पार ॥१२॥
तो पणि उत्तमकुमर नौ, चरित सुणो मन रंग ।
साधु प्रशंसित दान जिण, दीधो आणि उमंग ॥१३॥
बात चित कौ मत करौ, छोडो कुमति किलेस ।
वांचंतां कविता तणो, मन जिम थाय विशेष ॥१४॥

ढाल—(१) गौतम स्वामि समोसर्या एहनी

वचन रचन सुणज्यो हिवै, आणी भाव प्रधानो रे ।
देज्यो दान इसी परै, जेम लहो तुमे मानो रे ॥१॥व०
इणहिज जंबूद्वीप मां, दक्षिण भरत उदारो रे ।
काशी देश जिहां भलौ, पृथिवी नो सिणगारो रे ॥२॥व०
नयरी तिहां वणारसी, अलिकापुरि सम तेहो रे ।
जहां सुर सरिखा मानवी, निशदिन चढते नेहो रे ॥३॥ व०
वलि तेहनै चौ पाखती, विकट दुरंग विराजै रे ।
घण वाजित्र सदा घुरै, घन गरजारव लाजै रे ॥४॥ व०
ऊँचा मंदिर अति घणा, दीठां आवै दायौ रे ।
तिम चित चोरै कोरणी, जोतां दिन वहि जायो रे ॥५॥ व०

गोखै बैठी गौरड़ी, अपछर नै अनुहारी रे।
केलि करै मन मेलि नै, सहियर सुं सुखकारो रे ॥६॥ व०
जिनमन्दिर रलियामणा, दंड कलश करि सोहै रे।
अति ऊँची धज लहलहै, सुरनर ना मन मोहै रे ॥७॥ व०
चौरासी वलि चौहटा, मिलिया बहु जन वृन्दो रे।
देश अने परदेश ना, पावै परमाणंदो रे ॥८॥ व०
सरस सरोवर चिहुं गमा, भरीया जल करि पूरो रे।
हंस प्रमुख कल्लोल सुं, निवसै दुख करि दूरो रे ॥९॥ व०
वली विशेषे तरुवर करी, सोहै वन सश्रीको रे।
कोकिल करै टहूकड़ा, रहै पंखी निरभीको रे ॥१०॥ व०
बारै मास लगें सदा, नील हरी जिहाँ दीसै रे।
फल फूले छाइ घणुं, हीयड़ो देखी हीसै रे ॥११॥ व०
राज करै नगरी तणी, मकरध्वज भूपालो रे।
सूरवीर अति साहसी, न्याय नीत सुदयालो रे ॥१२॥ व०
दुर्जन जे वांका हता, तार कीया ते जेरो रे।
जिम मृगपति नै आगलै, न सकै गयवर फेरो रे ॥१३॥ व०
इन्द्र समोवर जाणीयै, रिद्धि करी राजानो रे।
गुनह खमैं निज प्रजा तणौ, दिन दिन वधतै वानो रे ॥१४॥ व०
यत :—उठै अडूक्कै भूप नहि, पहिस्यां नांही भूप।
खुंद खमै सो राजवी, निरख सहै सो रूप ॥१५॥
तेहनै राणी रूवड़ी, पतिभगती गुण खाणो रे।
नामै श्री लखमोवती, इन्द्राणी सम जाणो रे ॥१६॥ व०

जाणै ते चौसठि कला, निरूपम वचन विलासो रे।
चन्द्रवदन मृगलोयणी, गय गजराज उल्हासो रे ॥१७॥व०
पालै सील भली परै, धरम करी सुविकासै रे।
एम विनयचन्द्र हेज सुं, ढाल प्रथम परकासै रे ॥१८॥व०

॥ दूहा ॥

ते सुख विलसै दंपती, विविध परै ससनेह।
मास घड़ी सम लेखवै, जिम दोगंधक देह ॥१॥
शुभ स्वप्नै सुत ऊपनौ· राणी उयर मझार।
सुख ऊपरि सुख तौ लहै, जौ तूसै करतार ॥२॥
ललित लच्छि पुण सुत निपुण, गौरी गजगति गेलि।
पुण्य प्रमाण पामीयै, विनयचन्द्र गुण वेलि ॥३॥
दिन-दिन डोहला पूरतां, बोल्या पूरा मास।
सुत जायौ रलियामणौ, सहुनी पूगी आस ॥४॥
ए अद्‌भुत प्रगटीयौ, प्रथम हतो जे भूप।
दीप थकी दीपक हुवै, ए दृष्टान्त अनूप ॥५॥
राजा अति उच्छवक थकै, जनम महोच्छव कीध।
घरि-घरि तोरण बांधीया, दान वली तिहां दीध ॥६॥
दशऊठण कीधां पछी, उत्तम लक्षण देखि।
नाम दीधो सहु साख ले, उत्तमकुमर विशेष ॥७॥

ढाल—(२) वींछियानी

हां रे लाल तेह कुमर दिन-दिन वधै,
जिम चन्द्रकला सुविसाल रे लाल।

धाइ माइ पालीजतौ,
थयो आठ बरस नो बाल रे ॥१॥
वाल्हो लागें रंगीलो रे कुंमरजी,
ते खेलै राज दुवार रे लाल।
मोह्या मुख मुलकै सहु,
तिम निजर तणै मटकार रे ॥२॥ वा०
हां रे लाल मात पिता बहु प्रेम सुं,
तजिवा बालापण लाज रे लाल।
आडम्बर करि कुमर नै,
मुंक्यौ भणवा नै काज रे। ३॥ वा०
हां रे लाल लेखक शाला मांहि जे,
जुड़ि बंठा छात्र अनेक रे लाल।
ते सहु पाछलि तेह नै, अध्ययन करै सुविवेक रे ॥४॥ वा०
कितले दिन जाते थयौ, ते सकल कला नो जांण रे।
लघु वय सकज सकल वधै, ए पुण्य तणा परमाण रे ॥५॥ वा०
सत्य वचन बोलै सदा, वाम्ह वलि राखै नीति रे।
तो हिज वाधइ लोक मां, तेहनी पूरी प्रतीति रे ॥६॥ वा०
कांटो वाजै पगतलै, ते खटकै वारो वार रे।
जीव कहौ किम मारीयै, इम जाणीदया करै सार रे। ७॥ वा०
अणदीधो लीजै तृणो, तो ही अदत्तादान रे।
एम विचारी परिहरै, सुकलीणो कुमर सुजाण रे ॥८॥ वा०

नरक महल चढिवा भणी, नीसरणी सम परदार रे।
अकलंकित तनु जेहनो, वलि कनकाचल सम धीर रे॥६॥वा०
सहज सलूणो कुमर जी, सायर री परि गंभीर रे।
गमन निवारै जाणि नै, देखी अति गहन विचार रे॥१०॥वा०
कला बहुत्तर आगलो, दाता ज्ञाता जिम सूर रे।
प्रसिद्धि भलेरी जगत मां,जस अधिको प्रबल पडूर रे॥११॥वा०
खेल करै निशि वासरै, मन मेलू लेई संग रे।
विषमा अरियण अवहटै, ए राजवीयां रो अंग रे॥१२॥वा०
दीन हीन नं ऊधरै, दुखीयां केरो प्रतिपाल रे।
विनयचन्द्र कहै एतलै, पूरी थई बीजी ढाल रे॥१३॥ वा०

दूहा सोरठा

सुख विलसतां तेम, निशि भर कुमर इसी परैं।
एक दिन चिंतै एम, तरुण थयौ हिव हुं सही॥१॥
तौ स्युं बैठो आम, परवशि थई मुधा परै।
ए कायर नुं काम, घर सूरा किम थईयइं॥२॥
यत :—गुण भमतां गुणवंत नै, बैठां अवगुण जोय।
वनिता नै फिरिवौ बुरौ, जो सुकलीणी होय॥३॥
खाटी लखमी जेह, बाप तणी किम विलसीयै।
तौ नहीं ए मुझ देह, जउ मन चिंत नवि करूं॥४॥
इम मन मां आलोचि, हाथ खड्ग ले उठीयौ।
कीयौ न काइ सोच, स्वजन तणौ तिण अवसरै॥५॥
चाल्यौ होइ निचंत, ते परदेशैं पाधरौ।
खरी आणी मन खंत, कुमर परीक्षा कारणै॥६॥

ढाल—(३) धण री सोरठी

लांघै विषमी चालतां होजी, वाट अनड़ वर वीर, प्रबल पराक्रमी।
धरम धुरंधर धीर प्र० महीयल शोभा आक्रमी होजी,
गुण निधि गुण गंभीर ; १ प्र०

सूर तपै सिर ऊपरै होजी, लू पिण भेदै अंग, खलहल खलकती।
तिहां पणि उतरै ढलकती होजी, नदियां परवत शृङ्ग ; २ ख०
सुख दुख पामै ते सहै हो जी, कौतकियां नो राव।
मलपइं मन नी रली, तो पणि सुविशेषं वली होजी,
देखी खेलै दाव ; ३ म०

तिहां किण आवै पंथ मां हो जी, अटवी एक अपार।
सरस सुहामणी, घणी तिहां सरवर तणी होजी,
लहिर सदा सुखकार ; ४ स०

अवलोकै रन वन घणा हो जी, तरुवर नौ नहिं ग्यान।
नयणां निरखती, जाण कि अमृत वरषती होजी,
कुमर तणी तिण ठाम ; ५ न०

किहां किण कमल तणी भली हो जी, कलियां अति सोरंभ;
विहसै विकसती, नानी मोटी निकसती होजी,
करती वडो रे अचंभ ; ६ वि०

अनुक्रमि नियत प्रमाण मां हो जी, लांघै ग्राम अनेक ;
दीपै दिनमणी, मन मांहे धीरप घणी हो जी,
संगि न कोई एक ; ७ दी०

भमतो भमर तणी परै हो जी, आयौ गढ चीत्रोड़ ;
हेजे हरखती, हेलै जिण जीता अरी होजी,
सुहड़ां सिरहर मौड़ ; ८ हे०

राजा तिण नगरी तणो होजी, मछरालौ महसेन ;
मानी महिपति, अछै सभा दो शुभमती होजी ;
दायक जिम सुरधेन ; ६ मा०

देशां मांहे दीपतो होजी, देश वडो मेवाड़ ;
रावै तसु रली, जेहनै को न सकै छली होजी,
वैरी तणो रे विभाड़ ; १० रा०

गुणीयण जस जेहनो कहै होजी, चावो चारे खंड ;
कमणा का नहीं, सरिखा छै तेहने सही होजी,
हय गय प्रबल प्रचण्ड, ११ क०

अवर सहु कौ राजवी होजी, सीस नमावै जास,
अधिक वयण अमी, ए पणि मोटा राजवी होजी,
राखै महिर उल्लास ; १२ अ०

विरुओ दुर्मुख ऊपरै होजी, पिण जिन धर्म करंत ;
रयण दिवस रही, समकित सुद्ध सुमति मही होजी,
भजै सदा भगवंत ; १३ र०

भामणि सेती भोगवै होजी, जे सुख संसारीक ;
अवसर आपणी, सुत कारण सहु अवगिणी होजी,
माणै लाछि अलीक ; १४ अ०

देसी धणरी सोरठी होजी, तिण में तीजी ढाल ;
रसीया मन रमी, कहतां हीज मन मां गमी होजी,
विनयचन्द्र सुविशाल ; १५ र०

॥ दूहा ॥

राज करंता राजवी, गेह गिणै मृग पास ;
पुत्र तणी यौवन पणै, काय न पूगी आस ; १
सुखिया देखि सकै नहीं, दोषी दैव अकज्ज ;
संपति द्यै तो सुत नहीं, इण परि करै निर्लज्ज ; २
वइ बूढो अंगज पखै, रहै मन मांहि उदास ;
गृह जाणै सूनौ सहु, दिन दिन थाय निरास ; ३
इक अवनीपति सुत विना, वलि वेस्यां में वास;
नदी किराडै रूंखड़ा, जद तद होइ विणास ; ४
दैव मनायां नवि थयौ, खरची धननी कोड़ि ;
तो कोई कारण अछै, का तन मांहे खोड़ि ; ५

ढाल ४ हमीरा नी

किणही आस फली नहीं, तेह करमनी बात राजनजी
विण सरज्यां सुत किम हुवै, जो जमवारो जात रा० १ कि०
इम मन मांहे चींतवी, पोतानें परिवार रा०
जायै वन नें अतरै, मंत्रि प्रमुख लेइ लार रा० २ कि०
नील वरण हयवर ऊपरै, राज थयो असवार रा०
सहु गुण लक्षण पूरीयौ, ते हयवर श्रीकार रा० ३ कि०
पणि गति भंग करै घणुं, महीपति पूछै ताम रा०
मुंहता नवलि किशोर नी, केम अवस्था आम रा० ४ कि०

बीजो कोइ बौलै नहीं, घणी थई तिहां वार रा०
तेह सरूप अलक्ष छइं, पिण मंत्री करै विचार रा० ५ कि०
राजा अति आतुर थयौ, तेहनै कीधी रीस रा०
उत्तम तिहां किण आविनै, बोलै विसवा वीस रा० ६ कि०
हुँ परदेशी छु प्रभो, तो पणि सांभलि बात रा०
तुम आगलि किम राखियै, कूड़ कपट तिल मात रा० ७ कि०
हुं कहिस्युँ मति अनुमरै, अश्व तुमारो एह रा०
महिषी दूध पियौ घणौ, तिण मंदी गत छेह रा० ८ कि०
वाई पय प्रायै हुवै, चंचल गति तिण नांहि रा०
राय कहै वछ माहरै, तुं वसीयो मन मांहि रा० ६ कि०
तुं ज्ञानी तुझसुं कहुं, इण साचइ अहिनांण रा०
स्या कहीयै गुण ताहरा, तुं कोई चतुर सुजाण रा० १० कि०
दूषण किम तें जाणीयौ, कुमर कहै वलि एम रा०
जाणुं हयवर पारिखौ, तिण कारण कह्यो तेम रा० ११ कि०
मा मूई जब एहनी, तब ए लघुतर बाल रा०
पय पाई मोटो कियौ, एम कहै भूपाल रा० १२ कि०
इण परि चौथी ढाल में, रीझयौ चित राजान रा०
विनयचंद कहै कुमर नैं, थास्यै आदर मान रा० १३ कि०

॥ दूहा ॥

इतला दिन हुं घरि रह्यो, विण सुत अति निस्नेह ;
हिव तुं हिज सुत माहरै, दूधे बूठा मेह ; १

मारै भागे तूं मिल्यौ, सगली बात सकज्ज ;
पर उपगार शिरोमणी, सहु साधण पर कज्ज ; २
ए हय गय रथ ए सुभट, ए मंदिर ए सेज,
आदरि तुं संतोष धरि, माहरो तो परि हेज ; ३
चारित्र लेवा ऊमह्यो, ज्ञानी गुरु नइ पास ;
तुझ आगलि तिण कारणै, कहियै वचन विलास ; ४
आचारे लखीयै सही, तुं छै राजकुमार ;
मन गमतो मुझ राज्य ले, मत को करे विचार ; ५

ढाल (५)

रसीयानी

तब ते कुंवर कहै कर जोड़ि नै, तात सुणो मुझ बात, मया करि
हुं परदेशी रे कुतूहल जोइवा, नीसरियो सुविख्यात, म० १ त०
हिव आगे चालीस एकलो, देखीस सकल विनोद, दया पर
तुम चरणे राजन जी हुं आविसुं, मन धरि परम प्रमोद, द०२ त०
इम कहि लेइ सीख सनेहसुं, ततखिण चाल्यो रे ऊठि, सुगुण नर
एकलड़ो पिण स्यौ डर तेहनै, जगगुरु जेहनै रे पूठि, सु० ३ त०
लांघे ग्राम नगर वहिला घणु', तिमगिरि गह्वर नीर, चतुर नर
कितलाइक दिन मारग चालतो, पहुतो भरुच्छ तीर च० ४ त०
नगरी तणी छबि देखइ सोहामणी, प्रसन थयो मन माहि सोभागी
जोवा लायक सगली जाइगा, जिण मुंकी अवगाहि सो० ५ त०
तिहां जिनवर मुनिसुव्रत स्वामिनै, देवगृह निज आय, सहीसुं
बारो बार करै गुण वर्णना, मन सुद्ध प्रणमै रे पाय, स० ६ त०

जन्म सफल गिणि सरवर आवीयो, बैठो तरुवर छाय, रसिक नर
नीर भरै पणिहारी तिहां किणें, निरखै ते मन लाय, र० ७ त०
मांहो मांह बात करै त्रिया, सुणि बहिनी मुझ बात, सहेली
कुबेरदत्त नामा विवहारीयो, आज चलेस्यै रे जात, स० ८ त०
पिण प्रवहण पूरेस्यै पांचसै, द्वीप मुगध मां रे जाय, सुरंगी
ते तो अष्टादश योजन शत, मान इसुं कहिवाय, सु० ९ त०
मध्य भाग लवणोदधि नैं रह्या, जिहां लंका कहवाय, सलूणी
द्रव्य उपावण साथे मानवी, त्यां सुं पूरी रे प्रीत, स० १० त०
इम सुणि बात घणुं हरखित थयो, कुमार विचारइ रे एम, सनेही
सांयात्रिक संघातइं ते भणी, पूछि चढुं तिहां खेम, स० ११ त०
प्रवहण ऊपर बैठो पूछनैं, सहु सुं मिलीयो रे आप, विनय सुं
मीठा वचन कही रीझ्या सहु, सकल टल्यो रे संताप, वि०१२ त०
शुभ महुरत ले पूरीया, लांघ्यो कितरो रे माग, चलंतां
जल खूटो तिहां पोतक वणिक कहै,पूरो कोई रे अभाग, च०१३त०
इतलै वखत तणे वसि आवीयो, एक तिहां सूनो रे द्वीप, हरखसुं
सहु ऊतरि जल भरवा नें गया, वहिला कूप समीप, ह० १४ त०

यत :—पेखी नदी जल पूर, तिरस वसै जायै तृषित
जग में गरज गरूर, विनयचन्द्र इण परि वदै ?

जल संग्रह करंतां लोकां भणी,खिण इक लागी रे वार, करम वसि
भ्रमरकेतु राक्षस तिहां आवीयो,सरजित तणै रे प्रकार, क०१५त०
ढाल कही रूड़ी पाँचमी, विनयचन्द्र बहु जाण, भविकजन
भय करसी राक्षस पणि धरमथी,थास्यै कुशल कल्याण,भ०१६त०

॥ दूहा ॥

ते रात्रैचर अति विटल, विकल वदन विकराल ;
विषम वचन मुख बोलतो, रूठो जाणि कराल ; १
साठि सहस्र वलि जेहनै, राक्षस पूरइं पूठि ;
सौंक न राखै केहनी, दूरि किया जिण दूठ ; २
पिण भूखौ ते स्यूँ करै, आव्यौ अवसरि देखि ;
मांस भखेवा उलस्यौ, माणस नौ सुविशेष ; ३
वलि काढंतो जीभ ते, लोक डरावै सर्व्व ;
कर झाले करवाल इक, धरि मन माँहे गर्व्व ; ३
वचने करि सहु नै कहै, किहाँ जास्यौ रे आज ,
इम कहतो आव्यो कन्है, करतो अधिक अगाज ; ५

ढाल (६) तारि करतार ससार सागर थकी, एहनी

कोप करि लोक तिण पकड़ि कब्जै किया,
विगर घर बार हूवा बियोगी,
नासतां भूंइं भारी पड़ी त्यां नरां,
सबल पानै पड्या थया सोगी १ को०
केइ झाल्या जकड़ि पकड़ि नै काख में,
दाबीया केई करथी सदावै ;
तेम चांप्या पग हेठि पापी तणै,
एण अवसर कवण केड़ि आवै ; २ को०
अतुल बल फोरि करजोर हिव आपणौ,
कुमर तिण ठौर भरडाक आयौ ;

साहसी इम कहै दुष्ट पापिष्ट सुणि,
सीह सूतो किस्यानै जगायो ; ३ को०
नीच तुझ थी इसौ वयर कोई नहीं,
नास दाँते तृणो लेई निबला ;
राति दिन राँक नर मारिवा रड़ वड़ै,
साह न सकीसि मो जिसा सबला; ४को०
चित्त माँ इम सुणी प्रेतपति चमकीयौ,
बाल वय एम सुँ वचन बोलै ;
किसी वलि देह घट माँहि पोरस किसौ,
डिगमिगै वचन मन केम डोलै ; ५ को०
वचन काँकल प्रथम माँडि वड वेग सुं,
झडा झड़ि झूझ मांड्यौ झड़ाकै ;
सड़ा सड़ सोक तीराँ तणी सबल द्यै,
तड़ा तड़ वहै धजवड़ तड़ाकै ; ६ को०
झणण धरि बाण करि बणण रमझमक द्यै,
खसर कसमस हसै करि खंगारा ;
सणण चिहुँ दिशि नासि सेना चरा,
जाण छूटी छलद जलद धारा ; ७ को०
धड़ाधड़ि धरणि गड़डाट नभ धड़हड़ै,
राग्डिदिधरि रीस ते लीयैं रटका ;
खागिडदि खेलै खड़ाखड़ विहुंज सखरइं,
वडा वडा उडै समसेर वटका ; ८ को०

भाग्डिदि भुंइ लुटै खिण छुटै वलि अभ्भटै,
प्रगट भट ऊछलै जिम पतंगा
तिहां करै घाव देइ ओट वड वेग सुं,
मरद न मुडै ज्जुडै जिम मतंगा ; ६ को०
अंत तस बल घट्यौ कुमर तब ऊलट्यौ,
कट्यौ जंजाल सहु लोक छूटा ;
जुद्ध हुइं रह्यौ हथियार रो जिण घड़ी,
जोर धरि वले अंग जूटा ; १० को०
झपटि द्यै थापटे चापटे झापटे,
गहग गंभीर मुख करै गाजां
मूंठि अर मुठि पडि ऊठि भड दूठ मचि,
लडि लगावै रखे कोइ लाजां ११ को०
अधिक नहीं बात थइं लात करि घात अति
धग्डिदि धुकि झबकि झुकि दीयै धमका;
जाणि खेंकार करती जिसी अपछरा
ठमकि पद ठावति करै ठमका ; १२ को०
प्रबल भुज जुद्ध खिण मां उपसम थयौ
निठुर कायर भ्रमरकेतु नाठो
धन्न हो धन्य जोगणि कहै चित्त धरि
कीयौ राक्षस थकी हीयो काठौ १३को०
पोन्य पोते हुवै तेह जीपइं सदा
धरम न करै तिके धमधमीजै

पुण्य थी शत्रुदल तेह आई नडै
पुण्य थी शिवसुख तुरत लीजै; १४ को०
सुजस वाध्यो घणो कुमर उत्तम तणौ
कीयो उपगार तिण विण निहोरइं
ढाल छट्ठी विनयचन्द्र इण परि भणै
उत्तस्या वादला वाय जोरै; १५ को०

॥ दूहा ॥

आवे कुमर तिहां थकी, सायर तट मन रंग;
मनुष्य मात्र दीसै नहीं, तुरत कीयौ मन भंग; १
सहु नै राख्या जीवता, मैं कीधो उपगार;
तो पिण मुझनै अवसरै, मूंकि गया निरधार; २
लाज विहूणा लोकए, नीच निगुण निसनेह:
आप सवारथ साधिनै, निश्चय दीधो छेह; ३
वहिला खेड़ जिहाज नै, मुझ सुं खेली घात;
तो काइक दीसै अछै, वखत लिखतनी वात; ४
मै तो कीधी मो दिसा, जेह भलाई आज;
जो न गिणी तो तेहनै, पूछेसी महाराज; ५

ढाल ७ इण रित मोनै पासजी सांभरै, एहनी

वलि मन मांहे चींतवै सखी, ते तो लोक विनीत;
राक्षस आगलि स्युं करै सखी, मन मां सबली भीति रे;
किण परि राखै मुझ चीत रे, भय मरण तणो विपरीति रे;
तिहां दूरि रही ते प्रीति रे, पछै सहु को नी रीति रे; १

इम जाणी रिदै गुण संभरै,
एहिज वृक्ष सुहामणा सखी, घणा वली फल फूल
तो हिव इण हिज थानके सखी, वसियै करनै सूल रे ;
किहां तो न पड़ीजै भूल रे, जिन ध्यान मां रहीयै भूल रे ;
करिय गुण प्रास अमूल रे, जिम न हुवइ चित्त डमडूलरे;२इ०

इहां रहतां कुण जाणसी सखी, एहवो चित्त विमास ;
एकण तरुवर ऊपरै सखी, ध्वज बांधी सुविलास रे ;
तिहां समरै जिनवर पास रे, अवहड़ मन धरतो आस रे ;
कहतो मुखथी जसवास रे, अमृत सम वचन विलास रे ; ३इ०

तेहज द्वीप निवासनी सखी, देवी देखि कुमार ;
मन चिंतइ रंजी थकी सखी, माहरइ प्राण आधार रे :
मिलीयो दुखियां साधार रे, जो आय चढै घर बार रे ;
तउ सफल गिणुं अवतार रे, थायै मन मांहि करार रे ; ४ इ०

हिव आगलि आवी कहै सखी, सुणि मनमोहन बात रे ;
तुझ सुं लागी मोहनी सखी, भेदी साते धात रे,
मुझ दाझै खिण खिण गात रे, मुझ सेती न रह्यो जात रे;
तुं दिल मां परम सुहात रे, स्युं कहियै बहु अवदात रे ; ५ इ०

तुं तौ प्रीतम मानवी सखि, हुँ छुं अपछर नारि ;
तिहां सुख भोगवतां छतां सखी, करमां अन्य प्रकार रे ;
संतावै मदन अपार रे, तन वाध्यो मदन विकार रे !
मिलवो तोसुं इकवार रे, मैं कीधो एह विचार रे ; ६ इ०

जोरइ पिण हिव ताहरइ सखी, गलि मांहि घालिस बाह;
जे मिलवा नै उल्हसै सखी, किसी विमासण ताहि रे;
ए जोवण लहिरै जांहि रे, टाढी तरुवर नी छांहि रे;
कहियौ आणौ मन मांहि रे, अणबोल्या वणसी नांहि रे; ७ इ०
राजकुमर तब इम कहै सखी, स्यानै खोवै लाज;
ताहरइ मन में जे अछै सखी, मोसु न सरइ काज रे;
इवड़ी करइ केम आवाज रे, तु सहु देव्यां सिरताज रे;
माहरौ राखीजै माज रे, इतलो हिज दीजे राज रे; ८ इ०
परनारी बहिनी अछै सखी, वलीय विशेषै मात;
तिण तुझ नै साची कहुं सखी सो बाते इक बात रे;
इण वात नरक मां पात रे, नव लक्ष जीव नो घात रे;
दुख सहियै दिन ने राति रे, नवि लहियै खिण सुख सात रे; ६ इ०
वईयर बालै रूसणै सखि भाखै देवी वाणि;
सगपण भगनी मात नो सखी, दाखै केम अयाण रे;
माहरो करि वचन प्रमाण रे, जो चाहै घट मां प्राण रे;
तु भावै जाणि म जाणि रे, रहिस्यै नहिं काइ काण रे; १० इ०
देवी तब रूठी थकी सखी, काढि खड़ग कहै ताम;
विण जीवी तुं कांइ मरै सखी, करि मूरख ए काम रे;
तुझ नै नवि लागै दाम रे, ए सजल सरस छै ठाम रे;
तुं जे नवि घालै हाम रे, कहि नै किम चलसी आम रे; ११ इ०
सूर अवर दिश ऊगमैं सखी, मेरु डिगै वलि जेम;
सायर मरयादा तजै सखी, पिण नवि चूकुं तेम रे,

परस्त्री सुँ रमवा नेम रे, तब चिंतइ अपछर एम रे
एतौ नवि राखै मुझ प्रेम रे, निहुरो करीये कहो केम रे ।।१२ इ०।।
निश्चल मन कुमर कीयौ सखी, न पड्यो माया जाल ;
टेक ग्रही ते नवि तजी सखी, वचन तणो प्रतिपाल रे ;
कंठै ठवि शीलनी माल रे, सहु दूर मिट्यौ जंजाल रे ;
एतलै ए सातमी ढाल रे, कहै विनयचन्द्र चौसाल रे।।१३ इ०।।

।। दूहा ।।

देवी इण परि वीनवै, रीस करी जे काय ;
ओछो अधिको जे कह्यो, खमज्यो तुं महाराय : ।।१।।
एकण जीभइं ताहरा, गुण मोसुँ न कहाय ;
ताहरै नामै जनम ना, पातक दूर पुलाय ।।२।।
जे बोल्या दशवीस तैं, अमीय समाणा बोल ;
हितकारी सहुनै अछै, पिण हुँ निटुल निटोल ।।३।।
हाव भाव विभ्रम कीया, वलि तिमहीज विलाप ;
तो पिण तै तिलमात्र इक, नाण्यो मन संताप ।।४।।
सील लील राखण भणी, तजिवा माँडी देह ;
पिण परनारी जाणि नै, न कीयौ विषय सनेह ।।५।।

ढाल—८ मृगनयणी राधाजी रे कंत कहा रति माणि राजि ए देशी

न दीयौ छेह नेह धरि गाढौ, धरम नी बात बखाणी राज हां ध०
गति मति नै द्युति छानी रहै, नहीं वाणी अमीय समाणी राज १
अम्हे पणि जाणी राजि जाणी तु एतो मन जोवा नै माटै कुमरजी

मुझ थी बात कहाणी राज जिण धरमनी बात कुमरजी
विषय निजर तुमे नाणी अमे० २
इम कहि बारह कोड़ि रयणनी वरषा करि सुप्रमाणी राजि
जिण धरमनी देसण ठाणी मुगति तणी अहिनाणी ३ अ०
मन नी कासल छोड़ि गई हिव निज थानकि सुरराणी राज
कुमर तणा गुण खिण खिण समरै जास कुमति कमलाणी राज ४
प्रवहण देखि इसे इक नैडो नयण तिहां विकसाणी राज
सरलै साद कहै रे भाई ल्यो तुम्हे खबर अम्हाणी ; ६ अ०
सांभली वाणी पुरुष नी एहवी समुद्रदत्त मन भाणी राज
कोइक नो भागो छै वाहण ल्यौ तुमे खबर आफाणी ; ७ अ०
सगला नर तिण पासे आवै, देखि धजा लहकाणी राज
उत्तमकुमर तिहा निज वातां, भाखी चित्त सुहाणी राज ; ८ अ०
कुमर तणा गुण देखि सहूनी, अंतरगति उलसाणी राज
हिलमिल बैसि चल्या सायरमां, खूटि गयौ वलि पाणी ; ६ अ०
भर दरीया मांहे ते जल विण, सुं करै प्रीति पुराणी राज
तड़कै भड़कै भूत थई तसु, बींधइ उदर कृपाणी ; १० अ०
निर्यामक कहै शास्त्र निहाली, म करो खांचाताणी राज
हिवणा वेलि उतरसी जलनी, धीर धरो तुमे प्राणी ११ अ०
प्रगट हुस्यै गिर फिटक रयण माँ, कूपक तिहां सुखदाणी राज
जल निरमल ते मांहे अछै पिण एहवी बात सुहाणी १२ अ०
राक्षस धीठ रहै इण थानक लोक उकति कहवाणी राज
आठमी ढाल कहै मनरंगे, विनयचन्द्र गुण खाणी ; १३ अ०

॥ दूहा ॥

निर्यामक सुणि वातड़ी, लोक कहै गुण गेह ;
राक्षस ते केहवौ अछै, अंगत आकारेह ; १
तेह कहै दीठो किणै, पिण लोकां री बात ;
जे आवै इण थानकं, करै तेहनो घात ; २
महाक्रूर रुद्रातमा, मांसभखी विष नयण ;
भ्रमरकेतु नामैं इसौ, दुर्द्धर जेहना वयण ; ३
जलधि देव नै आगलै तिण ए कीधो नेम ;
वाहण मा जन नवि भखुं, बाहिर थी नहि नेम ; ४
वात करंतां तेहवै, ते परबत तिण ठाम ;
जगा ज्योति प्रगट थयौ, सहु को हरख्या ताम ; ५

ढाल—६ योगिना री

कूप तिहां ते निरखि नै रे, जल पूरत ससुवाद सजन जी
सहु निर्यामक नै कहै रे, विरुओ तेह पलाद ; १
सजनजी एक सुणौ अरदास स० तेहनौ एछै वास स०
करिस्यै सहुनो नास स० थइयै तेण निरास ; २
प्रवहण थी नवि ऊतरै, राक्षस भय असमान
केई नर आगे भख्या रे, कहतां नावै ग्यान ; ३
तिण कारण मरवौ भलौ रे, तिरषारत इण ठाम ;
पिण न हुवां तेहना वसूरे, लोक वदै सहु आम ; ४
वात सुणी इम लोकनी रे, देई अवचल वाच ;
कुमर विदां वर साहसी रे इण परि जंपै साच ; ५

मुझ सरिखौ माथै छतां रे, कांइ डरावै आम ;
सुरपति तिण मुझ सामुही रे, घाल सकै नहीं हाम ; ६ स०
तौ ए स्युं छै बापड़ौ रे, एहनी सी परवाह ;
स्याल तणौ स्यौ आसरौ रे, सीह तिहाँ गज गाह ; ७ स०
ऊतरि प्रवहण थी तदा रे, जल भरिवा नै काज ;
कूप समीपइं आविया रे, लोकां तणां समाज ; ८ स०
मन संकित पण तो हिवै रे, लेइ नै जल पात्र ;
राढू आगलि बाँधि नै रे, मूंक्यो सरलै गात्र ; ९ स०
पाणी तिहाँ नवि नीकलै रे, सोकातुर सहु जात ;
चिंतवणा एहवी करै रे, एतौ विरुइं वात ; १० स०
रीव करइं वलि तरफलै रे, जिम थोड़ै जल मीन ;
ऐ ऐ दुर्जय ए त्रिषा रे, जेण थया सत्वहीन ; ११ स०
मांहो मांहे ते कहै रे, दीसै जलि भृत कूप ;
तोही बिन्दु न नीकलै रे, कोइक दैव सरूप ; १२ स०
अरति अंदोह करै घणुं रे, मरणौ आयो माय ;
स्युं कीजै हिव बापजी रे, तिरष न खमणी जाय ; १३ स०
के संभारै गेहनै रे, के महिला सुख सेज ;
के बाई के बहिनड़ी रे, के भाई के भाणेज ; १४ स०
इम चिंतातुर लोक नै रे, देखी राजकुमार ;
कूप प्रवेशन आदरी रे, सहु मन कीध करार ; १५ स०
जेह विरुद मोटा वहै रे, तेह करै उपगार
नवमी ढाल कही भली रे, विनयचन्द्र हितकार ; १६ स०

॥ दूहा ॥

रज्जु विलंबी नै कुमर, पइसै कूप मझार ;
तिण माहे इक इण परै, निरखै देव प्रकार ; १
जाली कंचन मांहि सुभ, जल ऊपरि तिहां कीध;
मन मां अचरिज ऊपनौ, आडी किण ए दीध ; २
सुणो सुणो रे लोक सहु, विस्मय वाली वात ;
जाली सोवन नी अछै, दीठां उल्लसै गात ; ३
तिण नीचै जल देखि नै, वड़वखती वड़वीर ;
उरी परही करि जालिका, भाजै धर मन धीर ; ४
पाणी सुगम कीयौ कुमर, जेह हतो दुरलंभ ;
रलियाइत सहु को थया, पीछो परिघल अंभ ; ५

दूहो सोरठो

गुण समरी नर तेह, कुमर तणा तिण अवसरै .
तास चरण नी खेह, सहु को आपण नै गिणै ; ६

ढाल—१० राग—सामेरी

चतुर नर एह बड़ी अधिकाई,
बाल अवस्था मांहि अछै पणि, कुमर थयौ सुखदाई ; १ च०
हिव चालौ प्रवहण पूरी नै, करि जल तणी सफाई ;
चन्द्रद्वीप मांहे बैठां किम, आवै वडम वडाई ; २ च०
वात करंतां कूपक मांहे, अद्भुत भींत वणाई ;
देव दुवार सहित पाउडाए, निरखै कुमर सवाई ; ३ च०

लोकां ने कहै हुँ परदेशी, कीधो भाग्य सहाई,
तो देखीजै केलि कुतूहल, खोड़ि नहीं छै काई ; ४ च०
प्रथम तजि गृह ते चीत्रोड़े, जाई सगुणता पाई ;
राज तिहां महसेन दियो पणि, न लीयौ लोभ समाई ; ५ च०
छोडाव्या नर रात्रिचर स्युं, करि नै सबल लड़ाई ;
सांप्रत पाणी परगट कीधउ, सहु जाणैं सुघडाई ; ६ च०
हिव आगें स्युं थासी ते पिण, देखीजे मन लाई ;
धरि हुँति अभ्यास अछै मुझ, करवी सहु सुं भलाई ; ७ च०
चाल्यो तिणहीज द्वार थई नइ, मन मां आणि जिकाई;
पांचे रंग तणा पाहण नी, बांधि वाट बिछाई ; ८ च०
कंचन में सोपान सुपेखित, रोमराइ उलसाई ;
आगै एक भुवन अति सुंदर, वसुधा जाणि हसाई ; ६ च०
रतन जड़ित अंगण तसु दीसैं, अधिकी जास सफाई ;
भूमि प्रथम सोवन मां मंडित, विकसित रहै सदाई ; १० च०
जोतां कुमर इसी पर बीजी, भूमि चढ्यौ वलि जाई ;
ते पिण मणि माणक मां मंडित, तिहां रहै चित लोभाई; ११च०
तीजी मुक्ताफल दीपति, तिम चौथी मन भाई ;
वलि पांचमी छट्ठी मन मोहै, सातमी भूमि सुहाई ; १२ च०
दसमी ढाल थई ए पूरी, विनयचन्द्र चतुराई ;
सुणिज्यो आगलि कुमर कुतूहल, तजि मन विघन बुराई;१३च०

॥ दूहा ॥

तिहां कणि तीजी भूमि परि, बैठी एक ज नारि ;
अति बूढी वलि खीण तन, दीठी तेह कुमार ; १
मुख नहीं खिण दाँत विण, मुख माखी विणकार ;
केश पणि चक्षु मांजरी, कूबजा नै आकार ; २
देखी कुमर भणी निकट, इम जंपै सुविचार ;
कांइ मरै रे आयु विण, रे गुणहीन गमार ; ३
राक्षस तइं नवि सांभल्यौ, भ्रमरकेत इण नाम ;
निज घर तजि आयौ इहां, कोइ नहीं स्युं काम ; ४
कुमर कहै रे डोकरी, ते जोरावर दीठ ;
एक धकै मार्‍यो गुड़ै, पड़ै स ऊठै नीठ ; ५
पणि ए गृह छै केहनौ, केण करायौ कूप ;
वलि तुं वृद्धा कवण छै, ते सहु दाखि सरूप ; ६

ढाल (११)

जिनवर सुं मेरो मन लीनौ, एहनी

सुणि पंथी एक बात हमारी, वृद्धा कहै मन लाई रे ;
तैं पूछ्यो ते ऊत्तर देवा, मुझ मन हरषित थाई रे ; १ सु०
राक्षसद्वीप इहां थी नेड़ो, जिहां नगरी छै लंक रे ;
राज करै तेहनो राक्षसपति, भ्रमरकेतु निसंक रे ; २ सु०
अति वल्लभ तेहनें पुत्री इक, जास मदालसा नाम रे ;
रूपैं करि जीती जाणै रति, अपछर जिम अभिराम रे ; ३ सु०

नवली भली कुमुदिनी विकसै, रवि ऊगमतें जेम रे ;
भर यौवन रवि ऊगै दिन दिन, कुमरी विकसै एम रे ; ४ सु०
भ्रमरकेतु राक्षस एक दिवसै, भर दरबार मझार रे ;
नैमित्तिक नै पूछै चित धरि, प्रसन कहौ सुविचार रे ; ५ सु०
कवण हुस्यै मुझ पुत्री नै वर, ते भाखै मतिवंत रे
कहिस्युं तंत तुम्हारै आगलि, रीस म करज्यो अंत रे ; ६ सु०
ताहरी पुत्री नें वर थासी, राजकुमर सुप्रसिद्ध रे ;
तीने खण्ड तणो जे अधिपति, सगली बाते समृद्ध रे ; ७ सु०
एहवौ वचन सुणी विलखाणो, मन मां चिंतै घात रे ;
देवकुमर लायक मुझ पुत्री, भूचर किम परणात रे ; ८ सु०
इम जाणी मन मांहि न आणी, तास कहाणी जास रे ;
सायर में गिरिवर नै शृंगै, कूप कराओ खास रे ; ६ सु०
... .
पूर लूण कपूर धुरा धुर, कौणि मन विसवा बीस रे ; १० सु०
जाली कुपक मांहि लगाई, पड़िवा नें भय एह रे ;
बात कही तें पूछी ते सहु, वलि सांभलि ससनेह रे ; ११ सु०
ढाल एकादशमी सांभलतां, जाणीजै सदभाव रे ;
विनयचन्द्र कुमर तिहां ऊभो, देखै अपणौ दाव रे ; १२ सु०

॥ दूहा ॥

अवर निमित्ती नै वली, पूछइ मन धरि राय ;
मुझ पुत्री कुण परणस्यै, ते मुझ तुरत बताय ; १
ते जल्पै तेहनी परइं, नृप मन आवी रीस ;
कोड़ि उपाय कीयां इसुं, किम करिस्यै जगदीस ; २

दिल भरि दिल फेर कहि, स्युं तेहनो अहिनाण ;
सांयात्रिक जन मारिवा, तुँ गयौ करिनें प्राण ; ३
द्वीपमांहि तोसुँ लड्यो, जिण मांहे बहुमांण ;
तुझ नै जीतो जोर करि, ते तुँ निश्चय जाणि, ४
दल वादल बहु मेलिने, तेह चड्यौ तसु काज ;
एम प्रतिज्ञा करि गयौ, मारेवौ तसु आज ; ५

ढाल (१२)

बिंदली नी,

मास थयौ इक तेहनै, हिव पूछुं खबर हुं केहनै हो,
चटपट चित्त लागी ,
हुं संभारुं जेहनै, जिम मोर चींतारै मेहनै च० १
हीयड़ै कुमर विचारइं, माहरौ स्युं तेहनै सारै हो च०
ते फोकट आपौ हारै, एहवौ कुण मुझनै मारै हो च० २
सवलां नी उझड़वाट, आयौ तेहनै निराधाट हो च०
जोरो क्युं मुझ घाट, तो करिस घणा गहगाट हो च० ३
तेह जाणै हुं धीगो, तो मारग रोकी रीको हो च०
हुं पिण छुं रे दडीगो, ठीगां ऊपरलो ठीगो हो च० ४
वात विमासैं तेहवै, ते कुमरी आवी तेहवै हो च०
यौवन रूपै केहवै, कवियण भाखै सहु एहवै हो च० ५
भर यौवन मां माती, पिण जैन धरम री राती हो च०
न सकै देखि मिथ्याती, जिणै दूर कीया कुरापाती हो च०६

(यतः) नारी मिरगानयन, रंग रेखा रस राती,
वदे सुकोमल वयण, महा भर यौवन माती ;
सारद वचन सरूप, सकल सिणगारे सोहै,
अपछर जेम अनूप, मुलकि मानव मन मोहै ;
कल्लोक केलि बहु विध करै, भूरि गुणे पूरणभरी,
चंद्र कहै जिण धरम विण, कामिणि ते किण कामरी; १

रमझमकतें चालैं, हंसला रै हीयड़ैं सालै हो ; च०
रीसै नयण निहालै, पिण घात किसी परि घालै हो ; च० ७
चरण कमल नें ठमकै, निशिदिन काछबियो चमकै हो ; च०
नासि गयौ तिहां धमकै, जिम कायर ढोल नै ढमकै हो ; च० ८
जेहनी जांघ विराजै, कदली थंभा स्यै काजै हो ; च०
कटि देखी जसु लाजै, निज मां उपमान छाजै हो ; च० ६
हृदयकमल सुविकाशै, सोहै दोइ पयोहर पासै हो ; च०
एहवा ते प्रतिभासै, भली कनक कलश छबि नासै हो : च० १०
बांह बिहुं लटकाली, अति ओपै लुंब झुंबाली हो ; च०
रुड़ी नै रलियाली, हीणी करि चंपक डाली हो ; च० ११
करनों निरखि प्रकाश, आकाश थयो नीरास हो ; च०
कहज्यो मुख थी खास, ए भावांतर सुविलास हो ; च० १२
देखी मुख अरविन्द, दिवसै नवि ऊगे चन्द हो ; च०
माया सुरनर वृन्द, रीझया देखी किंनर नागिंद हो ; च० १३
रक्त अधर वलि जाणी, परवाली मन बिलखाणी हो ; च०
इण मोसुं अति ताणी, तिण वासो कीधो पाणी हो ; च० १४

दन्त पंकत सोभावै, दाडिम कलीयां लोभावै हो ; च०
नाक तणै जसु दावै, जिहां दीपशिखा पणि नावै हो ; च० १५
आंखड़ीयां अणीयाली, बिचि सोहै कीकी काली हो ; च०
हिरण घसैं खुरताली, मारी आंखि लीधी मटकाली हो च० १६
भुंअ सजोड़ै दीपै, वांकड़ी कबाण नै जीपै हो ; च०
मांहो मांहि न छीपै, ते भाल विसाल समीपैं हो ; च० १७
वेणि निरखि विशाल, शेषनाग गयौ पाताल हो ; च०
एहवौ रूप रसाल, नहीं छै सही इण कलिकाल हो ; च० १८
रमणी जेह कुरूप, स्युं कहीयै तास सरूप हो ; च०
विनयचन्द्र चित्त चूंप, कहै बारमी ढाल अनूप हो ; च० १९

॥ दूहा ॥

सभीया सोल सिगार जिण, स्युं कहीयै ते नाम ;
रूप तणै अनुमान सहु, जाणो निज निज ठाम ; १
देखै देह कुमार नै, नाखै सनमुख नयण ;
फिर पूठी चढ मालीयै, बोलै मीठा वयण ; २
हे वृद्धा तुं माहरं, पासै वहिली आवि ;
स्युं भुंडी आलस करै, खिण इक वार म लाइ ; ३
तिण पासै हिव ते गई, पूछै एहनी बात ,
कुण ऊभौ मुझ आंगणै, एह पुरुष शुभ गात ; ४

ढाल (१३)

नणदल नी

इण मन वेध्यो हे माहरो, सर विण केण प्रपंच हे सजनी
ते कहै माहरै आगलै, सबल करै मन खंच हे सजनी ; १इ०
तेज प्रबल एहनौ अछै, निरमल सूर समान हे स०
नयणे अमृत रस वसै, निरुपम योध जोवान हे स० २ इ०
सारद वदन सोहामणो, हृदय कमल सोभंत हे स०
रूपै मदन थकी रूयड़ौ, गौर वरण गुणवंत हे स० ३ इ०
पुरुष घणा दीठा हुस्यै, कोइ न आवै दाय हे स०
इण दीठां मन मांहिलौ, दौड़ी मिलवा जाय हे स० ४ इ०
कवण अछै पिण जातिनो, ते कल न पड़ै काय हे स०
पूछयां विण हिव तेहनै, मन किम ठाम रहाय हे स० ५ इ०
ऊतर आपै डोकरी, सुंदरि म करि विलाप हे स०
विरह गहेली तुं थई, जाग्यौ मदन नो ताप हे स० ६ इ०
एह मन मान्यौ ताहरै, तिणि कारण सर जाण हे स०
जौ चूकै ए निजर थो, तिण भय तुं तजै प्राण हे स० ७ इ०
मोह तणै वसि जे पड़या, थाइ सही सुं अंध हे स०
जिण सुं रस कस तिण विना, जाणै अवर ते धंध हे स० ८
स्युं तुझनै नवि सांभरै, इण मन्दिर नो हेत हे स०
एहनै मिलवा टलवलै, पिण पहिली हो चित चेत हे स०९इ०
तेह वचन अवहेल नै, तेड़ै कुमर सुजाण हे स०
ऐ ऐ मन नी मोहनी, स्युं न करै काम हे स० १० इ०

परदेशी तुं हो कवन छै, बोलै इम धरि नेह हे स०
कुमर कहै छुं मानवो, स्युं इवड़ौ संदेह हे स० १ इ०
वारू किम आया इहाँ, कुमर पयंपइ एम हे स०
केवल तुझ नैं निरखवा, आयो छुं धरि प्रेम स० १२ इ०
लाजन लोपै सुन्दरी, सुकुलीणी सिरदार हे स०
छोड़ि कपट हाजो कहै, ना न कहै सुविचार हे स० १३ इ०
ढाल वखाणी तेरमी, विनयचंद्र तजि रेह हे स०
ते तिम हिज करि जाणज्यो, मत आणौ संदेह हे स० १४इ०

॥ दूहा ॥

भले पधास्या कुमरजी, पावन कीधो गेह,
चक्रवाक रवि नी परैं, थांस्युं लागौ नेह ; १
नाम तुमारूं स्युं अछै, किम छोड्या मा बाप,
किण नगरो किण देशना, वासी छो महाराज ; २
कुमर कही सहु वातड़ी, करि कुमरी आधीन ;
बिहुंना मन लहस्यां लियैं, नीर विषैं जिम मीन ; ३
बात कही वृद्धा भणी, पाणिग्रहण संकेत ;
तिण दीधउ आदेश इम, जाणी बिहुंनो हेत ; ४
भावी न मिटै कुंयरी, तुम्हे थया छो एक ;
मन मान्यो सोढो मिल्यो, परणो आणि विवेक ; ५

ढाल (१४)

सीयाला है भलइं आवीयौ, एहनी

नवलो नेह लगाड़िवा, कुमरी नै हो ते कुमर सुजाण ;
सहेली हे नयणे मिलै, वलि वयणे हो ते चवै मीठी वाणि ;
स० चोल मजीठ तणी परै, रंग लागोहे मांहो मांहे प्रमाण १
स० जोड़ी सरखी जाणि नै, ते परणै हे यौवन नै लाह ;
स० विचि मांहे थई डोकरी, तिहां कीधो हे गंधर्व वीवाह; २
स० हाथ मुकावण द्यै तिहां, मणि माणिक हे भलीरतन नीकोड़ि;
स० द्यै आसीस सुहामणी, मत लागो हो इण जोड़ि नै खोड़ि ; ३
स० अंग विलेपन कीजिये, कस्तूरी हे नूतन घनसार ;
स० कुमर कुसुम सायक समौ, रंभा नै हे कुमरी अवतार ; ४
स० खावो विलसौ भोगवौ, जो जग मांहे किम जाणौ साच ;
स० स्वाद अछै इण वात मां, इम जपइ हो ते वृद्धा वाच ; ५
स० खिण खिण मां पहरइं तिके, जिहाँ भूषण हे नव नवला वेस ;
स० मन गमती मोजां करै, भय नाणै हे केहनो लवलेश ; ६
स० धरम तणी चरचा करै, मन रूड़ै हे वर वींदणी तेह ;
स० जिम जिम चतुरपणो भजै, तसु तिमतिम हे हुवै विकसित देह; ७
स० फूलै फलै रलीयामणा, देखाड़ै हे कुमरी आराम ;
स० जल ना कुंड सुहामणा, लेइ नै हे तिहां नाम सुठाम; ८
स० पालोकड़ निज हरणली, खेलायै हे मन धरि ऊछरंग ;
स० घड़ी घड़ी नै अन्तरै, बिहुं नो हे थयो चढतो रंग ; ९

स० प्रीतम नो चित रीझीयो, मधुर स्वर हे गाई गुणगीत ;
स० पति भगती ए कुंयरी, पदमण नी हे जाणै सहुरीति ; १०
स० कुमर सतेजो हिवथयो, कौमुदी करि जाणे जिमचंद;
स० लोक सहु पिण इम कहै, नारी विण हे जाणौ नर मन्द; ११
स० ढाल कही ए चौदमी, तिण मांहे हो पहिलौ अधिकार;
स० मनगमतां पूरौ थयौ, ते तौ थाज्यो हैं सुणतां सुखकार ; १२
स० निजमति विस्तरवा भणी, मैं कीधो हे ए प्रथम अभ्यास;
स० विनयचन्द्र कहै दाखिस्युं, आगै पणि हे द्वितोय प्रकाश; १३

इति श्री विनयचन्द्र विरचिते सरस ढाल खचिते सञ्चातुर्य्य शौर्य्य धैर्य्य गांभीर्य्यादि गुण गणा मत्रे श्री मन्महाराज उत्तम-कुमार चरित्रे पर जनपद संचरण अश्व परीक्षा करण चित्राकूटावनिध मिलन भृगुकच्छपुर गमन यान यात्रा रोहण पलाद निर्दलन भूमिगृह प्रवेशन मदालसा पाणि-पीड़नो नाम द्वितीयाग्रजो-ऽधिकारः ॥ १ ॥

द्वितीय प्रकाशः

॥ दूहा ॥

हिव समरू' श्री सिद्धपद, जेहनौ सबल प्रभाव ;
आतम तत्व विचार नै, ग्रहस्यु' गुण सद्भाव ; १
बीजै अधिकारै सहु, सांभलिजो वृत्तान्त ;
विकथा वैर विरोधथी, थाज्यो भविक प्रशान्त ; २
कुमर कहै कुमरी भणी, हिव तो हु' न रहेस ;
वैरी नो थानक तजी, जास्यु' देश विदेश ; ३
कूड़ कपट बहु केलवै, राक्षस नी अपजात ;
तिण कारण हुँ चालस्यु', सो बाते इक बात ; ४
तु' रहिजे इण थानकै, मुझ नै दे हिव सीख ;
तदनंतर कुमरी वदै, हुं छु' तुझ सरीख ; ५
स्यानै राखै छै इहां, स्यु' रहिवा नौ काम ;
हुं छाया जिम ताहरै, कहिवौ न घटै आम ; ६
कर खेती करजोड़ि नैं, जे नर दाखै छेह ;
तेहनैं भलो न को कहै, हेज विहूणा जेह ; ७

ढाल (१)

मेरी बहिनी कहि काई अचरिज बात, एहनी

जिण दिवस हुं तुझनै मिली, कीधो वीवाह विचार ;
तिण दिन थकी मांडी करी, कीधी मैं इकतार ; १

माहरा वालहा, ताहरी न तजुं लार, तुं हीयड़ा नुं हार;
तुं यौवन सिणगार, तुं भोगी भरतार; मा०
स्त्री तणै वसि जे पड्या, निश दिवस कथन करेह;
कुमरइं वचन मानी लियउ, अविहड़ नेह धरेह; २ मा०
हिव रतन पृथिवी आदि दे, जे च्यार प्रगट प्रधान;
पाचमो गगन तणी परै, सुन्दर नव नव वान: ३ मा०
ते पांच रतन मदालसा, लेई चलै प्रीउ साथि.
स्युं करै रहिनें डोकरी, चलितां पकड्यो हाथ. ४ मा०
जण त्रिण एक मतं थई, आव्या कूपक तीर,
तिहां समुद्रदत्त ना आदमी, ऊभा काढै नीर; ५ मा०
नीसख्या रज्जु तणै बलै, तीने जणा तिण काल;
मन दीयौ कुमरी मां सहु, निरखि निरखि सुकमाल; ६मा०
कुमर नें पूछै किहां जइ, परणी नवल ए बाल;
अपछर किंवा किन्नरी, अथवा रंभ रसाल; ७ मा०
चिंता करीने तुम तणी, अम्हे रह्या इण हिज ठाम;
नयणे निहाली तुम भणी, हरख्या आतम राम; ८ मा०
विरतंत सहु कुमरे कह्यौ जिम थयौ धुर थी मांडि;
सापुरुष भूठ कहै नहीं, नेह न नांखै छांडि; ९ मा०
प्रवहण तिहां थी पूरिया, करतां अत्यन्त विनोद;
लोकनो कुमरे मन हख्यो, उपजावी आमोद; १० मा०
पाणो वलि पूरौ थयौ, लाघतां कितलौ पंथ;
एहिवुं थानक को नहीं, काढै जोई ग्रन्थ; ११ मा०

पूठिली परि ते गलगलै, पिण नहीं कोई उपाय ;
सगलै जी कहै जल नैं बिना, जीव विछूटौ जाय; १२मा०
मन मां कुमर इम चिन्तवै, ए थई तीजी वार ;
पीड़ा करै छै पापीयौ, विरुयौ कोई वेकार ; १३ मा०
अधिकार बीजैं ए कही, अति भली पहिली ढाल ;
इम विनयचंद्र कुमार सुं, बात कही उजमाल , १४ मा०

॥ दूहा ॥

इण अवसर कुमरी कहै, सुणि सोभागी कंत ;
जिम सहुनो थास्यै भलौ, तिम करिस्यै भगवंत;१
एतौ गलिगलि लोक छै, थायै सबल अधीर ;
दे सहु नै आस्वासना, तनिक कांई सधीर ; २
कुमर कहै किम थाय ते, सूका सहुना होठ ;
कहिवौ तो दूरे रह्यौ, मरण तणी छै गोठ ; ३
हिव तुं जउ उपगार करि, मेटि सहुनी पीड़,
स्युं भाखै छै मो भणी, भांजि दुहेली भीड़ ; ४
सी राखइं छै चित्त मां, गुंगा केरी गाह ;
तिम करि माहरी सुन्दरी, जन जंपइ वाह वाह ; ५

ढाल (२)

कन्त तमाखू परिहरौ एहनी

डाबी नै वलि जीमणी, बात वणै नहीं काय मोरा लाल
नीर बिना दरियाव मां, लोक घणुं अकुलाय मो० १

मिठड़ा राजिंद किल रहौ, इक मानो मोरी वात मो०
महिर करो मो ऊपरै, जिम न हुवै उतपात मो० २ मि०
रत्न करंडक माहरो, तुम पासै छै जेह मो०
पाँच रतन ते मांहि छै, गुण सांभलि गुण गेह मो० ३ मि०
भूदेवाधिष्टित भलो, पहलो रत्न उदार मो०
तेहनो निरखे पारिखो, जिम न हुवै अकरार मो० ४ मि०
थाल कचोला वाटला, वासण चरवी चंग; मो०
मग गोधूमादि दियै, प्रथवी रतन सुरंग; ५ मि०
नीर रतन भजे धरै, जल वरसै ततकाल मो०
तेहनो हिवर्णा काम छै, कटिसी दुख नो जाल मो० ६ मि०
अगनि रतन थी सिद्धि हुवै, ते सुणि दीनदयालु मो०
नवली नवली रसवती, चावल नें वलि दाल मो० ७ मि०
मुरकी नें लाडू भला, पइंडा सखर सवाद मो०
खाजा ताजा देखतां, हरइं क्षुधित विखवाद मो० ८ मि०
वात समीरण चालवै, सुरभि सीतल नें मंद मो०
गगन वस्त्र जास कहीयै, तजै तिमिरनो फंद मो० ६ मि०
पाँच रतन ए लेइ नै, करि प्रीतम उपगार मो०
हुं करिस तो ताहरो, नवि रहसी व्यवहार मो० १० मि०
उपगारी सिर सेहरौ, तुं जग मांहि कहाय मो०
केम कठिन थायै इहां, कहियौ करि महाराय मो० ११ मि०
वचन सुणी नारी तणा, कुमर विचारै एम मो०
ए गुणवंती भामनी, वांछै सहु नै खेम मो० १२ मि०

बाप अधम छै एहनो, पण एहतो धरमीण मो०
आज लगै दीठी नहीं, एहवी नारि प्रवीण मो० १३ मि०
बीजै अधिकारै थई, बीजी ढाल विचित्र मो०
विनयचंद थास्यै सही, नीर प्रगट सुपवित्र मो० १४ मि०

॥ दूहा ॥

रत्न करंड उतारि नै, काढी नीर रतन्न ;
कूवा थंभै बाँधिनै, करि नै सबल यतन्न ; १
केसर नें कस्तूरिका, कुंकम अगर कपूर ;
चढतै मन पूजा करै, भाव सहित भरपूर ; २
झर कर नै वरसै, तिहां, जलद अखंडित धार;
जाण्यो उलस्यौ भाद्रवो, ध्वनि गंभीर अपार ; ३
सहु लोके भाजन भस्या, नीर तणौ करि पान ;
शीतल तन करि चालिया, धरि निज रक्षकै धांन;४
खूटि गयौ धन धान्य वलि, मारग मांहे नेट ;
पृथिवी रतन दियौ तिहां, ना सति नाखी मीट; ५
पांचे रतन तणै बले, जिहां तिहां पामै जैत ;
बीजा ते सहु बापड़ा, कुमर वडौ विरुदैत ; ६
रावल राणा राजवी, गुण आगलि सहु जेर ;
जाणौ माणस गुण विना, धूलि तणौ जे ढेर ; ७

ढाल (३)

हा चन्द्रवदनी हा मृगलोयण हा गोरी गजगेल च० एहनी

सेठ तणै मन मांहि उद्‌धि माँ कुमरी वसै निशदीश ;
विरह विलुधो रे विसवावीस ;
नलिनी देखि भमर जिम अटकै, तिम तसु मिलण जगीस; १ वि०
मुखड़ं जंपै रे हा जगदीस, सास खैंची नै रे धूणै सीस ;
हे गौरी तें ए स्युं कीधौ, मनड़ो लीधो खंच ; वि०
ताहरै सरिखी अंतेउर विच, मुझ न लागै अंच ; वि० २
इम विलपतो जाणै जोडुं, भावें जिम तिम प्रीत ; वि०
एहवी नारी नै जो मांणुं, तो न चढै काई चीति . वि० ३
इम मन धारी तेह विचारी, वचन कहै सुख कार ; वि०
कृपा करी इहाँ आवी बैसौ, उत्तम राजकुमार ; वि ४
बात कहौ काई सुख दुखनी, तेवड़ि मुझ नै मीत ; वि०
हुं पण कहिसुं माहरा मन नी, ए रूड़ी छै रीति ; वि० ५
ताहरा गुण देखी नै रीमयो, रीझयौ देखी रूप ; वि०
हिव निश्चय सेवक छुं ताहरो, तूं मुझ स्वामि अनूप ; वि० ६
मोहनगारो तुं मछरालौ, सगुणा सिर कोटीर ; वि०
तइं तो प्रेम लगायो एहवौ. चोल रंग नो चीर ; वि० ७
पंचाख्यान मांहे तुझ कह्या छै, मित्र पणैना तीन ; वि०
परम मित्र ते प्रथम वखाणौ, रहियै जसु आधीन ; वि० ८
द्वितीय भलाई राखै मुख सुं अवसर पूछै खेम ; वि०
तृतीय मिलै मारग चलतां, मित्र तणी विधि एम ; वि० ९

रजनी तुं जाजे निज थानक, दिवसे करिस्यां ख्याल; वि०
ताहरै मिलियै माहरा मन नो, टलीयौ सबलौ साल; वि०१०
माहरै तुं छै परम सनेही, प्राण तणौ आधार; वि०
इत्यादिक वचने संतोषै, करि चुंबन करि सार; वि० ११
कुमरी तेड़ि कहै निज पति नै, नीच थकी स्यौ नेह; वि०
प्रीतम ए तौ वड़ौ ज अधर्मा, निपट कपट नौ गेह; वि० १२
मोर मधुर स्वर करि नै बोलै, रंग सुरंगौ होइ, वि०
पुँछ सहित विषहर नै खायै, इण दृष्टान्ते जोइ; वि० १३
दाढ गलै सहुनी गुल दीठां, तेहवौ नारि शरीर; वि०
दृश्यमान उपमान नै नइण; जेहवौ वारिधि नीर; वि० १४
केवल मुझ हरिवा नै काजै, मांडै तुम सुं रंग; वि०
प्रीत तणा बीजा मुख दीसै, ए कायरो रे कुरंग; वि० १५
ए बीजै अधिकारें तीजी, ढाळ कही सुविलास; वि०
विनयचन्द्र जो मुझ नै चाहै, मानि मोरी अरदास; वि० १६

॥ दूहा ॥

माणस कालै सिर तणौ, मिसरी घोलै मुख;
हीयड़ा नौ कपटी हुवै, अवसर आपै दुख; १
तिण ऊपरि सांभलि कथा, वाल्हेसर सुविदीत;
राजकुमर इक वन विषै, गयो सहू ले मीत; २
बीजा पिण पाछलि कीया, तिज घोड़ो छोड़ाणि;
पहुतौ वन मांहे तुरत, अंग पराक्रम आणि; ३

कुमर परीक्षा जोइवा, आयो तिहां वन देव ;
रूप कीयो वानर तणो, तज पूरवली टेव ; ४

ढाल (४)

प्रोहितीया थारै गलै जनोई पाट की रे एहनी

बोलइ ते आगलि वानर कूदतो रे,
आवो मन ना मानीता मीत रे ;
आगति स्वागति करिस्युं थांहरी रे,
रजनी माहरै घरि करो व्यतीत रे; १बो०

आंबा रायण नालेरी तणो रे
सबल वल्यौ छै एहज कूँडरे ;
तेण थानक चालौ बैसियंरे,
पिण मुझ नै जावौ मत छंडिरे ; २ बो०

रूंख तणै थुडि घोड़ा बांधि नै रे,
कुमर चढ्यौ वानर नै साथ रे ;
साख ऊपरि बैठा जाइनै रे,
नेह धरी तिहां जोड़ै बाथ रे ; ३ बो०

जल निरमल ल्यावै नदीयां तणौ रे,
पांन तणा संपुट करी सार रे ;
सरस रसाफल आणि नै रे,
ते करै कुमर तणी मनुहार रे ; ४ बो०

राजकुमर पूछै वानर भणी रे,
काइक अणदीठी कहि बात रे ;

तुं तो हिव माहरौ प्रीतो थयो रे,
तुझ नै दीठां उलसै गात रे ; ५ बो०
तिहां वली सबलो सिंह विकुरवी रे,
ते कहै मै दीठो इक सीह रे ;
माणस नो लेतो वासना रे,
आवै छै इण वार अबीह रे ; ६ बो०
न करो नींद कुमरजी थे हिवै रे,
इण तरु ऊपरि रहो सचेत रे ;
इतलै सीह तड़की आवियौ रे,
फाटै मुख जलहलता नेत रे ; ७ बो०
कुमर कहै स्युं करिस्यां वानरा रे,
सीह तणौ भय मुझ न खमाय रे ;
तिम वलि नींद आवै छै पापिणी रे,
करि करि वहिलौ कोइ उपाय रे ; ८ बो०
राजि सूवो मुझ खोला मां तुमें रे,
दोइ प्रहरनी घुं छै सीम रे,
कुमर सयन करि वानर अंक में रे,
रयणि गमावें गलती हीम रे ; ६ बो०
वानर नै भाखै इम केसरी रे,
तुं वन नो वासी छै नेट रे ;
आस करै जो निज देही तणी रे,
तो करि कुमर तणी मुझ भेट रे ; १० बो०

इम कहतां हवै ते जागीयौ रे,
वानर सूतो तेहनै अंक रे;
मन लेवा नै कपट निद्रा करी रे,
खांचैं स्वासोश्वास निसंक रे; ११ बो०
तिमहीज मृगपति कुमर भणी कहै रे,
खाईस हयवर ताहरो आज रे;
नहिं तर पटकी दे वानरो रे,
तिल भरि मकरि सूनी लाज रे; १२ बो०
कहतां बे हाथे करि नांखीयो रे,
वानर ऊडि गयो आकाश रे,
सीह अरूपी लागो मारगे रे,
रहीयो मन मां कुमर विमास रे; १३ बो०
भाखी एहवी बात मदालसा रे,
उत्तम चतुर बात सुणी निरबंध रे;
इम अनुमान प्रमाणौ जाणियै रे,
इहां जुड़तो एहीज संबंध रे; १४ बो०
च्यार श्लोक तणै अनुयायिनी रे,
आगलि कहिज्यो बात सुरंग रे,
स्वाभाविक फल आश्रय आणिनें रे,
मै न कही श्रोता नै संगि रे; १५ बो०
बीजैं अधिकारइं पूरी कही रे,
चौथी ढाल सरल श्रीकार रे;

जग मां विनयचन्द्र यश ते लहै रे,
जे न करै परदोह लिगार रे ; १६ बो०

॥ दोहा ॥

फेरी नै कुमरी कहै, प्राणपीयारा नाह ;
पछतावै पड़स्यौ पछै, दिल ऊलससी दाह ; १
बात कुमर मानै नहीं, साचौ जाणै साह ;
सजन मन मांहे रमणि, कूड़ कपट हुवे काह ; २
सेठ अछै धर्मातमा, बहु राखै छै प्रेम ;
कहि नारी बरसि अगणि, चंद्र किरण थी केम ; ३
तेहवइं निजर चुकायवा, सेठ दिखलावै खेल ;
वर गिरवर जल कांतिमय, वल जल रतनी रेल ; ४
हुइं हीया नौ जालमी, करतो सबली हेल ;
पग सुंठेलि समुद्र मां, नांख्यो कुमर उथेल ; ५

ढाल (५)

चाल :—बिडलै भार घणौ छै राजि

कुमर पडंतो इण परि भाखै, मिश्र वचन शुभ भावै ;
गुण ऊपर अवगुण लेईनै, पापी खोड़ि लगावै ; १
पापी स्युं कीधो तैं एह, काज कुमाणस वालौ ;
पड़त समान मच्छ एक मोटो, मुख प्रसारि नै बैठौ ;
ततखिण तेह कुमर नै गिलीयौ, वलि जल ऊंडै पइंठौ; २ पा०

प्रवहमान उछलित वेलि बसि, पार जलधि नो पायो ;
पुण्यादिक अनुभाव कुमर नो, जलचर निमित्त कहायौ ; ३ पा०
तिहाँ मच्छ नै अभिलाष संचरै, धीवर सायर कूलै ;
तसु दृग बंधन थयौ माछलो, जल प्रायक विण शूलै ; ४ पा०
माया जाल सहु नै सरिखौ, ते सहु कोई जाणै ;
अंतःकरण तजै मीनादिक, द्रव्य जाल अहिनाणै ; ५ पा०
खिण इक मां ते पकड़ि विणास्यो, तीखण कठिन कुड़ाड़ै;
यादृस आचरणादिक तादृश, फल तेहनै न गमाड़ै ; ६ पा०
तेहना उदर थकी नीकलियौ, उत्तमकुमर सवाई ;
रंच मात्र पिण घाव न लागौ, ए जोवौ अधिकाई ; ७ पा०
सगला धीवर अचरज पाम्या, एस्युं थयौ तमासौ ;
कुमर कहै रे मूढ़ गमारां, इण बाते स्यौ हासौ ; ८ पा०
सदा आपदा पड़ै पुरुष मां, तम ने साचौ भाखुं ;
घण घाते हुँ नवि भेदाणो, तो डर केहनो राखुँ ; ६ पा०
धीरवंत कुमर नैं निरखी, धीवर पाइ लागा ;
स्वामी पणै थाप्यौ सहु मिलनैं, जस ना वाजत्र वागा; १० पा०
रहै कुमार तिहां सुख सेती, फल साधन ए राखै ;
जेह वृत्त जिन पक्षे बाधक, तेह कदापि नविभाखै ; ११ पा०
मिथ्यादृष्टि तणो उत्थापक, व्यक्त गुणे सुविलासी ;
वलि विरक्त मोहादिक भावै, एक युक्ति अभ्यासी ; १२ पा०
ढाल थई बीजै अधिकारै, तुरत पांचमी पूरी ;
विनयचन्द्र आगलि ते कुमरी, बिहुं ढालां में झूरी ; १३ पा०

॥ दूहा ॥

हिव विरतंत सुणौ सहु, आदरवंत अचूक ;
सेठ तिहाँ ठगनी परै, पडोयौ पाडै कूक ; १
हा ! बांधव हा ! वल्लहा, हा ! मुझ जीवन प्राण ;
पाणी में पड़तौ थकौ, इम स्युं थयो अजाण ;
तुझ सरिखा किहांथी मिले, गौरव गुण नै योग ;
मिटसी किम ताहरै बिना, माहरै मननो सोग ; ३

ढाल (६)

ओलु नी

कोलाहल लोके कियो जी, कुमरी सुणीयो रे ताम ;
सायर मांहे नांखीयौ जी, इण निरलज्ज नो काम; १
न करिस्यौ नीच पुरष सुं नेह ;
करसी तेह पछतावसी जी, निश्चै नै निस्संदेह ; २ न०
रोवै अबला एकली जी, खिण खिण मां मुंझाय ;
सहजै अगनि उछालतां जी, लागि उठी क्षण मांहि ; ३ न०
झूरइ पूरइ हेज स्युं जी, मांडइ मरण उपाय ;
भियु विरहागति झालस्युं जी, देही संतप थाय ; ४ न०
प्रियु नै द्यै ओलंभड़ा जी, कथन न कीधो मुझ ;
तुं मुझ नै मेल्ही गयौ जी, हिवस्युं कहियै तुझ ; ५ न०
हुँ तुझ नै कहती सदा जी, विगडन हारी बात ;
ते सांप्रति साची थई जी, दुरजण खेली घात ; ६ न०

तैं भद्रक परिणाम थी जी, सुविशेषै मन लाय ;
ऊपरलै आडंबरे जी, राचि रह्यो मुरझाय ; ७ न०
प्रीतम मारा भमरलां जी, कांइक कीजै संक ;
फुल्या दीसै फुटरां जी, आफु आडै अंक ; ८ न०
नास थयौ जीवतव्यनौ जी, पिण सी पूगी आस ;
तें कल्पद्रुम जाणि नै जी, सेव्यो निगुण पलास ; ९ न०
लाज न आवै एहनें जी, वलि न करे निज सूल ;
मुख कालो करि नै रह्यो जी, जिम केसूनो फूल ; १० न०
यतः—धन्ना होइ सुलखणा, कुसती होइ सलज्ज ;
खारा होइ सीयला, बहु फल फलै अकज्ज ; ११ न०
हा हा हिवहुं किम रहुं जी, ताहरइ विण खिण मात्र ;
विरह व्यथा नी माहरै, हीयडै बूही दात्र ; १२ न०
बीजै अधिकारइं करै जी, ढाल छट्ठी बहुलाज ;
विनयचन्द इम उपदिसै जी, रोयौ नावें राज ; १३ न०

॥ दूहा ॥

वारंवार मदालसा, कहै निसासौ नाँखि
किण आधारै जीवियै, छेदी माँहरी पाँख १
इवड़ा बखत किहां थकी, कायम रहै सोभाग
सिर कदि आवै माहरै, अंगूठानी आगि २
पंखिण पंखी वीछडै, जिम शोकातुर थाय ;
तिम कुमरी नै पिउ बिना, खिण इक खिण न सुहाय ३

ढाल (७)

कागलीयो करतार भणी सी परिलिखुं रे, एहनी

करम तणी गति को नवि लखै सकै रे, सहु जाणै छै एम ;
पिण सयणां रे विरहे हीयड़ो रे, फाटै हो रन सर जेम ; १ क०
कुमरी विचारै रहिनै जीवती रे, स्युं करिस्युं निश दीस ;
मरण नथी का देतो पापीया रे, फिट भुंडा जगदीस ; २ क०
सांभलि सजनी प्रिउ नै पाछलै रे, करिस्युं झंपापात ;
वारिधि पिण जाणैस्यै प्रीतड़ी रे, जगि रहसी अखियात ; ३ क०
इम सुणि ते आकुल थई रे, इण विध झंपै रोइ ;
काँइ न ऊगै वीरा चांदला रे, एह अधोमुख जोइ ; ४ क०
कमल विलासी क्युं विकस्यो नहीं रे, इण तो कर संकोचि ;
हीयड़ा आगलि दे प्रीयुड़ा तणो रे, मांड्यौ सबलो सोच ; ५ क०
वलि वनवासी पसुवा हिरणला रे, जोवो मन धरि नेह ;
विरह वियोगइं नयणां मीचियां रे, तिण कारण कहुं एह; ६ क०
इम कहती सहुनै रोवरावियारे, वलि भाखै उपदेश ;
होवणहार पदारथ नवि मिटै रे, मकरि मकरि अंदेश ; ७ क०
बालमरण मन मां नवि आणियै रे, इण साहस नहि सिद्धि ;
जैन तणै आगम जे वारियै रे, तिण सरसी अण किद्ध ; ८ क०
जीवंता मिलसी तुझ नाहलौ रे, पंखी नी परि जाण ;
जिम इक हंस सरोवर मां रहै रे, महिला सहित प्रमाण ; ९ क०
एक दिवस सर नै कूलै गयौ रे, जिहां बहुला सेवाल ;
अणजाणंतां मांहि अलूझियौ, कंठइ आयौ काल ; १० क०

नेह तणी बांधी तिहां हंसली रे, धसिवा लागी जाम ;
सयण कहै तेहनै पासै थकां रे, ए तुं मत करि काम ; ११ क०
तेह तणै वखते तिण रन्न मै रे, आयो पुरुष ज एक ;
तिण सेवाल सहु दूरे कियां रे, हंसण नी रही टेक ; १२ क०
एक घड़ी मां ते सब तौरे, वलि विहुं थया रे सचेत
तुं निश्चय जाणे तेहनी परैं रे, पिण एम धरि तुं हेत ; १३ क०
देखो इण पापी कीधी तिका रे, बीजो न करै कोइ ;
कुमरी कहै धिग माहरा रूप नै रे, एहा अनरथ होइ ; १४ क०
बीजे अधिकारइं ए सातमी रे, ढाल कियौ प्रतिभास ;
विनयचंद्र कहै दुखीयां माणसां रे, घटिका जाय छमास; १५क०

॥ दूहा ॥

इम विलपंती देखि नै, आवै सेठ निलज्ज ;
सुवचन कहै संतोष नै, एहवी करै अरज्ज ; १
मित्र हतो ते माहरं, उत्तमकुमर सुजाण ;
हिव तेहनै दीठां विना, छूटै छै मुझ प्राण ; २
ते सरिखा तो पामीयैं, पुण्य तणै संयोग ;
विरह सह्यो जाइ नहीं, जिम घट व्यापै रोग ; ३
ते चिन्तामणि सारिखो, आय चढ्यौ थो हाथ ;
पिण जाणौ छो किम रहै, दालिद्री घर आथ ; ४
मन में किण जाण्यो हतो, इण परि थासी अंत ;
छट्ठी रात तणा लिखत, ते दणि थायै तंत ; ५

ढाल (८)

चाल :—पाटोधर पाटीयइ पधारो, एहनी

सोहागिण रंग रंगीली, तुं प्रेम महारस भीली,
सांभलि मुझ बात रसीली ; १
हठीली तेहनें स्युं झूरै, ते नजर थकी थयौ दूरै,
हिव मुझ नै थापि हजूरै ; २ ह०
तसु जाति पांति नहीं कांई, नहीं कोई जेहनें भाई ;
वलि बाप न काई माई ; ३ ह०
हुं तुझ नैं आवी मिलीयौ, वीतग दुख सहु टलीयौ,
घर अंगण सुरतरु फलीयो; ४ ह०
माहरै हिव था धणीयाणी, तुं हिज मन मांहि सुहाणी,
जिम राजा नै पटराणी ; ५ ह०
माहरौ घर ताहरै सारे, वलि जो सिर मांहे मारै,
तो पिण बलिहारइं थारै; ६ ह०
मुझ थी सुख भोगवि नारी, कहियौ करि मोहनगारी,
थारी सूरति लागै प्यारी; ७ ह०
करतां जो प्रीत न कीजै, तो गाढो अपजस लीजै,
वचने कोई न पतीजै ; ८ ह०
जे प्रारथीयां निरवासी, जग मां एतलौ ही जरसी, ;
सगला नर इम हीज कहसी;६ह०
वलि जेह करे उपगार, न गणै ते सांझ सवार,
सहु बोल नो ए छै सार; १० ह०

ए यौवन ना दिन च्यार, छटको छै इण संसार,
कालांतर नि भलीवार; ११ ह०

मिलतां सुं नयण मिलावै, प्रस्तावै विरह बुझावै,
तेहनै कुण दावै आवै ; १२ ह०

बहु बात कहीजे केही, मुझ मति तुझ चित्त सुरेही,
तुं किम थाइं निसनेही; १३ ह०

दूहा :—कामातुर न कहै किसुं, न करै स्युं न अज्ञान;
कीजै इण बातइं किसौ, विनयचंद्र विज्ञान ; १

कामातुर नी सुणि वाणी, कुमरी मन मांहि लजाणी,
एहवी किम बात कहाणी ; १४

ढाल आठमी एम वणाई, बीजै अधिकार सुणाई,
पिण विनयचंद्र चित नाई ; १५

॥ दूहा ॥

कुमरी मन मां चिंतवै, किम रहसी मुझ लाज ;
ए पापी लागू थयौ, करिवो कोय इलाज ; १
सील रयण नें कारणै, अनवछेदक बात ;
जिम तिम करी उपचार ज्यं, ते विघटै व्याघात ; २
ठीक सील इक राखवौ, मन करि निज अनुकूल;
झूठ वचन पण भाखिनै, एह नें मुख द्यं धूल ; ३

ढाल (६)

चाल :वीर वखाणी राणी चेलणा जी, एहनी,

वीनती सेठ जी सांभलौ जो, सरस पीयूष समान ;
तुझ थकी चित लागो रह्यो जी, लोह चंबक उपमान ; १
ताहरै माहरै प्रीतड़ी जी, आज थी थई रे प्रमाण ;
पिण दस दिवस मुझ कंत नी जी, कांइक राखीयै काण ; २
निजर नौ नेह जिण सुं हुवै जी, वीछड्यां दुख न खमाय ;
तेह सांप्रति किम वीसरै जी, जेहनो जीवन प्राय ; ३
किण इक नगर में जाय नै जी, साख धर राखि नै राय ;
मनगमणी रमणी हुस्यूँ जी, सेवस्युं ताहरा पाय ; ४
जेह काचा हुवै मन तणा जी, बात मानै नहिं साच ;
पिण तुमे सगुण सापुरुष छौ जी, मानज्यो अवचल वाच ; ५
इम सुणी सेठ मनि हरखीयौ जी, परखीयौ स्त्री तणो भाव ;
भोडलो एम जाणै नहीं जी, इहां न कोलावन साव ; ६
हिवै रे मनोरथ-मालिका जी, पूरसी बालिका एह ;
सेठ गयौ निज थानकै जी, चित मां चीतवी तेह ; ७
तिण समै ते वृद्धा कहै जी, राखीयौ तें भलौ सील,
जेह थकी भय सहु त्रासवै जी, पामियै शिवपुर लील ; ८
वात अनुकूल लेई करी जी, प्रवहण दीयौ रे वलाइ ;
नव नवें पंथ ते संचरै जी, द्वीप सनमुख नवि जाय ; ९
पवन रतन नें पूजिनै जी, अधिक धरी सनमान ;
वेलकूलै सहु आविया जी, मोटपल्ली अभिधान ; १०

मेदनीपति तिहां जाणियै जी, व्यसनवारक नरवर्म ;
परम जिनधरम नै आदरै जी, अवर जानै सहु भर्म ; ११
सात खेत्रे वित्त वावरै जी, छावरै मोस नै मर्म ;
शीतल चन्द्रमा सारिखौ जी, निज प्रजा ऊपरि नर्म ; १२
ध्यान जिनवर तणौ मन धरै जी, साचवै जे षट कर्म ;
ईति उपद्रव दहवटै जी, जेम छाया घन घर्म ; १३
ढाल नवमी रमी हीयड़े जी, अवल बीजै अधिकार ;
न्याय राजा करसो भलो जी, विनयचन्द्र इकतार ; १४

॥ दूहा ॥

दरबारै आवै हिवं, सेठ स्त्री ले साथ ;
पेसकसी आगलि करी, प्रणम्यो अवनीनाथ ; १
माह महुत्त घणौ दियौ, राजायें तिणवार ;
सुख साता पूछी कहै, वयण एक सुविचार ; २
सांभलि सेठ प्रवृत्ति शुभ, कुण नारी छै एह ;
सर्वाभरण विभूषिता, सुभगाकार सुदेह ; ३
सेठ कहै ए मइं संग्रही, जिहां छइ चन्द्रद्वीप ;
पति सायर मां पडि मूओ, ए छै हजी अछोप ; ४
ए माहरी ग्रहणी हुस्यै, अनुमति द्यौ महाराज ;
कहीयैं न हुवै अन्यथा, राज समक्ष काज ; ५

ढाल (१०)

चाल :—मेरे नन्दना

तिण वेला कुमरी कहै रे हां, वयण विचारी बोलि, सीख किसी कहुं
झूठो स्युँ एहवो भखै रे हां, मूरख निठुर निटोल १ सी०
अगल डगल मुख भाखतो रे हां, किम न हुवै उपसांत ; सी०
न्याय करै जौ राजवी रे हां, तौ तोड़ै तुझ दांत ; २ सी०
सेठ कहै इम कां कहै रे हां, बीतग जाणि प्रबन्ध ; सी०
किहां मारग ना बोलड़ा रे हां, स्युँ तुझ बोले बंध ; ३ सी०
करि लज्जा वलती कहै रे हां, धर मन अधिक उमंग ; सी०
महाराज इण पापीयै रे हां, कीधउ मुझ घर भंग ; ४ सी०
पति जलधि मांहे नांखियौ रे हां, धरि मन अधिक उमंग ; सी०
सील रयण खंडण भणी रे हां, मांड्यो घणो रे तरंग ; ५ सी०
पिण हुं सीलवती सती रे हां, केम विटालुँ देह ; सी०
जिम तिम करी ए भोलवी रे हां, राख्यो शील अभंग ; ६ सी०
हिव तुझ सरिखा राजवी रे हां, न करै सूधो न्याय ; सी०
तो मन्दिरगिर डिगमिगै रे हां, धरणि पाताले जाय ; ७ सी०
पातक लागै दरसणै रे हां, ए पर स्त्री नो चोर ; सी०
जो सीखावण द्यौ नहीं रे हां, स्युँ करिस्यै जगि जोर ; ८ सी०
सत्य वचन राजा सुणी रे हां, धर्यो बली फिर द्वेष ; सी०
पोत स्थित धन संग्रह्यो रे हां, नवि राख्यो अवशेष ; ९ सी०
जे भावित भवतव्यता रे हां, न चलै तास उपाय ; सी०
जेहवो वावै रूंखड़ो रे हां, तेहवा होज फल थाय ; १० सी०

ते धन लेई सेठ नो रे हाँ, भूप भर्यो भंडार; सी०
तस्कर माँहि ले ठव्यो रे हाँ, जिहाँ छै कारागार; ११ सी०
कुमरी नइं हिव पुत्रिका रे हाँ, कहि बोलावै राय; सी०
रहि तुँ माहरा गेह माँ रे हाँ, चितनी चिंत गमाय; १२ सी०
माहरै पुत्री त्रिलोचना रे हां, जीवन प्राण छै तेह; सी०
तिण पासैं रहि नानड़ी रे हाँ, दिन दिन वधतइ नेह; १३ सी०
पुत्री बीजी माहरै रे हाँ, तुं हिज थई निरधार; सी०
मिष्ट अन्न पानादिके रे हां, करि कायानी सार; सी० १४
दीन दुखी नै दान दे रे हां, खबर करावीस तेह;
... ... सी० १५
सील प्रसादै पामियै रे हां, विनयचन्द्र नव निधि; सी०
ए बीजा अधिकारनी रे हां, दशमी ढाल प्रसिद्ध; सी० १६

॥ दूहा ॥

बहिनी थई त्रिलोचना, वदै परस्पर वान;
सिद्ध थयौ कारज सहु, कुमरी नौ तिण थान; १
सखियां सुं खेले रमै, करें गीत नै गान;
प्रवर पंच परमेष्टिनौ, धरै निरन्तर ध्यान; २
पंच रतन परभाव थी, द्यै दुखीयां नै दान;
सद्गुरु वाणी सांभलै, करै पवित्र निज कान; ३

ढाल (११)

वारू नै विराजै हंजा मारू लोवड़ी, एहनी

सीलवंती नै हो एहिज जोगता, धरम पणै दृढ थाय ;
वलि विशेषे हो जेह वियोगिणी, धरम करइं मन लाय ; १ सी०
अभिग्रह लीधा हो कुमरी मदालसा, प्रीतम न मिलइ जाम ;
सुइवौ हो धरती निरती चूँप सुं, जपती रहुँ प्रिय नाम ; २ सी०
अतिघणुं राता हो चीर न पहिरिवा, न करुं कइयै स्नान ;
वलि न बिछाउं हो फूलनी सेजड़ी, न लहुँ केह मांन ; ३ सी०
आँखडीयैं न आँजुँ काजल प्रियु बिना, नवि करवौ सिणगार ;
तिलक न धारूँ हो मस्तक ऊपरै, करि कंकण परिहार ; ४ सी०
विलेपन अंगै हो तजिवो सर्वथा, वलि तजिवा तंबोल ;
स्वादिम छोडूँ हो तिम हिज पणि वली, दूध दही ने घोल ; ५
साकर गुल ने हो खांडनी आखड़ी, सरब मिठाई तेम ;
हास्य वचन नो हो कारण नवि धरुं, चित्त रहै थिर जेम ; ६ सी
साक न खाऊं हो फूल फल नवि भखुँ, न जावुँ जीमण काज ;
सखीय संघाते हो हुँ हिव नवि रमुँ, राखुं माहरी लाज ; ७ सी०
गोखड़ै न बेसुँ हो केहनै जोइवा, चित्रित सुँ नहीं प्यार ;
बात न करिवि हो किण पुरुष सुँ, सरस कथा अपहार ; ८ सी०
जौ कथा करवी हो तो वइरागनी, इत्यादिक जे सुँस ;
कुमरीयइं लीधा हो ते सहु सांभली, मन मां धरिज्यो हुँस ; ९
कुमरी ग्रह्या छै हो पति नै ऊपरै, पिण तेहनै स्यावास ;
जे मन वाले हो विन कारण वशै, धन धन कहियै तास ; १०सी

ढाल प्ररूपी हो एह इग्यारमी, बीजै हिज अधिकार ;
सार्थकता नी हो जे उपमा वहै, विनयचन्द्र गुणधार ; ११ सी०

॥ दूहा ॥

सहु धीवर इण अवसरै, कुमरोत्तम ले संग ;
मोटपल्ली आव्या मिली, कृत्य हेतु उछरंग ; १
मंडावै राजा तिहां, नरवर्मा उल्लास ;
निज कुमरी नें कारणै, अनुपम एक आवास ; २
द्युति निवेसनी जोवतो, बीजो जाण कैलास ;
ते महल निजरै पड्यौ, आवै तेहनै पास ; ३
कारीगर कारिज करै, पणि गृह मांहे हाणि ;
खिण खिण मां चूकै तिके, अंध परंपर जाणि ; ४
वास्तुक शास्त्र तणै बलै, बोलै कुमर सुजाण ;
ए गृह नी चातुर्यता, कुण करसी परमाणि ; ५

ढाल—१२ कंकणानी

तें चित चोर्‌यो माहरो रसीया, तूं छै पुरुष उदार।
मोरो मन रीझ रह्यौ ;
हां रे तुझ देखी दीदार, मो० घर मां केही खोड़ छै रे,
एम कहै सूत्रधार ; मो० १
कुमर सीखावै सहु भणी रे, र० मन सुँ तजि अहंकार ; मो०
खोड़ हती जे गेह मंझार रे, र० न रही तेह लिगार ; मो० २
अचरिज सहु नै ऊपनो रे, र० वलि चींतइ सूतार ; मो०
विश्वकरणनि ओपमा रे, र० एहिज लहै रे कुमार ; मो० ३

भगति युगति करि अति घणुँ रे, र० कुमर भणी हरखेण ; मो०
दीठा विण विलखा थया रे, र० पूरव हेज वसेण ; मो० ४
.... ; मो०
... ... ; मो० ५

कोई अद्याहड़ो माहरो रे, र० रतन लह्यो छो जेह ; मो०
ते पिण राख सक्या नहीं रे, र० धिग जमवारो एह ; मो० ६

इत्यादिक वचने करी रे, र० निंदे कर्म स्वकीय ; मो०
ते पहुता निज थानकै रे, र० पिण नवि पायौ प्रीय ; मो० ७

तिण पासे रहता थकां रे, र० हुन्नर धरि निज हाथ ; मो०
कुमर करायौ राय नो रे, र० गृह कारीगर साथ ; मो० ८

संपूरण जईयै थयौ रे, र० कुमरी तणो रे निवास ; मो०
राजा निरखण आवियौरे, मन मां धरी विलास ; मो० ९

निरखी अति उच्छक थयो रे, र० हीयड़लो रहीयो हींस ; मो०
कारीगर नें रंग सुँ रे र० करइ सबल बगसीस ; मो० १०

तिण मांहिज कुमर निहालीया रे र० अभिनव जाण अनंग ; मो०
बैठो ऊँचे आसणै रे, र० ओपै रवि जिम अंग ; मो० ११

जिम बालक मृगराजनो रे र० बैसे गिरवर शृंग ; मो०
ए दृष्टान्ते जाणियै रे र० कुमर भणी चित चंग ; मो० १२

बीजै अधिकारै थई रे र० बारमी ढाल अनूप, मो०
विनयचन्द्र कहै एहवुं रे र० मन मां रंज्यो भूप ; मो० १३

॥ दूहा ॥

आदर मान देई कै, कुमर भणी ते राय;
इतला मांहे देखतां, तुं हिज आवै दाय; १
सत्य वचन मुझ आगलै, तूं कुण छै ते भाखि;
एक मनौ मुझ जाणि नै, अंतर मत को राख; २
हूं तो छुं परदेसीयौ, स्वामि वयण अवधार;
जाति न जाणुं रायजी, रहुं तुम नगर मझार; ३
पूरी सी जाणुं नहीं, नाम तणी मन सार;
पेट भराई हुं करुं, कारीगर ने लार; ४
निज मंदिर मां नृप गयौ, मन धरि एम विचार;
दीसै छै निश्चय सही, ए कोई राजकुमार; ५

ढाल (१३)

चाल :—दस तो दिहाड़ा मोनै छोड़ि रे जोरावर हाडा, एहनी

आव्यौ मास वसंत रे रसीयां रो राजा।

सुख थै साजा, तरु होइ ताजा

जेहनै तूठां रे मौज लहीजीयै रे।
अधिक पणै ओपंत रे र० मदन तणौ रे मित्र कहीजीयै रे; १
तास थयो प्रारम्भ रे र० थंभ जिसारे तरुवर पालवै रे
दुखियां ने दुरलंभ रे र० विरही लोकां रै हीयड़ै सालवै रे; २
वाजै सीतल वाय रे र० लहरी आवै रे सुरंभ तणी घणी रे;
कहतां न वणै काय रे र० सबली रे शोभा वन मांहे वणी रे; ३

मउर्या जिहां सहकार रे र० ऊपरि बैठी कुहकै कोयली रे ;
महिला मानी हार रे र० एहवी चतुराई मिलतां दोहिली रे ; ४
जिहां किण कमल अपार रे र० चांपो मरुवो रे दमणो मालती रे
विउलसिरी सुखकार रे र० जाई जूई रे दुखडां पालती रे ; ५
भमर करै गुंजार रे र० निशदिन राचै तेहनी वास थी रे ;
रस आस्वादै सार रे र० संग न छोड़ै कहीये पास थी रे ; ६
रूड़ी रीति कहिवाय रे र० रंग थकी परिपूरण छकी रे ;
सहु फली वनराय रे र० एक न फूली निगुणी केतकी रे ; ७
एहवौ जे मधु मास रे र० जाणी नैं राजा रमवा नीसर्यो रे ;
वनमां आवै उल्लास रे र० नयणे देखी रे जसु हीयड़ौ ठर्यो रे ; ८
सघन सुशीतल छायाय रे र० सरिता वहै रे वन पासै छती रे ;
तिहां खेलै ते राय रे र० राणी रमइं रंगइं राचती रे ; ९
ते वन अति श्रीकार रे र० तुरत मिटै रे मन नी सोचना रे ;
सखीयैं नें परिवार रे र० रावली रमै रे कुमरी त्रिलोचना रे ; १०
नगरी केरा लोक रे र० फाग गावै रे राग सुहामणै रे ;
मेली सगला थोक रे र० मन नी रे इच्छा पूरै हित घणै रे ; ११
वाजै चंग मृदंग रे र० वाजै रे वीणा झीणा तार नी रे ;
वाजै वली उपंग रे र० वार नह विणा हार नी रे ; १२
उडै गुलाल अबीर रे र० नीर छांटै रे मांहो मां सहु रे ;
भीजै नवला चीर रे र० प्रेम वणावै नरनारी बहु रे ; १३
तेरमी ढाल प्रधान रे र० एहवै रे बीजै अधिकार रै थई रे ;
विनयचन्द्र विद्वान रे र० एम कहै रे मन मां ऊमही रे ; १४

॥ दूहा ॥

तिहां क्रीड़ा करतां थकां, कुमरी नै तिण वार ;
डंक दीयौ नागै सबल, करइंज हाहाकार ;
तिण वन थी उपाड़ि नै, आणी निज आवास ;
नयण बिहुं धवला थया, व्यापौ विषनौ पास ; २
तेड्या सगला गारुड़ी, मंत्र तंत्र ना जाण ;
झाड़ौ द्यै पावै सलिल, पणि निकसै तसु प्राण ; ३
राजा फेरावै पड़ह, नगर मांहि इण रीति ;
मुझ कुमरी साजी करै, द्युं तेहनै सुख प्रीति ; ४
राज्य अरध मुझ कन्यका, तिण मांहे नहिं झूठ ;
इम सांभलि उत्तमकुमर, पटह छव्यौ पर पूठि ; ५

ढाल (१४)

आवउ गरबै रमीयै रूड़ा रांम सु रे, एहनो

कुमर आवै राय मारगै रे कांइ, साथै नर नारी थाट रे ;
चालौ नै रे जइयै कुमरी देखिवा रे ॥ आं० ॥
ए परदेशी जाण छै रे कांइ, जेहनो रूडो रूड़ो घाट रे ; १ चा०
सगले लोके कुमर नै रे कांइ, आण्यौ भूपति पास रे ;
कुमर कहै नृप आगलै रे कांइ, इण परि वचन विलास रे २ चा०
राज्य अरधउ रे ताहरी कन्यका रे कांइ, मुझ देज्यो महाराय रे ;
हुँ कुमरी जीवाड़िस्युं रे कांइ, करस्युं दाय उपाय रे ; ३ चा०

पाणी मंत्री नइ छांटियउ रे कांइ, कुमरी थईय समाधि रे ;
उठै रे आलस मोड़ि नै रे कांइ, दूर गई सहु व्याधि रे ; ३ चा०
कुमर प्रति नृप ओलख्यौ रे, कांइ ए तो तेहिज कुमार रे ;
जनम लगै पुत्री भणी रे, कीधो इण उपगार रे ; ४ चा०
बोल कह्यो ते पालिवारे, कांइ भूपति करै विचार रे ;
पुत्री माहरी त्रिलोचना रे, कांइ द्युं एहनै निरधार रे ; ६ चा०
राज्य प्रमुख सहु सूंपिनै रे, कांइ हिव रहीयै निश्चित रे ;
इम जाणी तेड़ावी नै रे, कांइ जोसीयड़ो गुणवंत रे ; ७ चा०
जोसी नै राजा कहै रे, कांइ परणै कुमरी मुझ रे ;
दिवस लगन कहि रूवड़ौ रे, कांइ हुं संतोषिस तुझ रे ; ८ चा०
जोवइं जोसी टीपणो रे, कांइ दिवस लगन करि ठीक रे;
जंपै राजा आगलै रे, कांइ अमुक दिवस सुप्रतीक रे ; ६ चा०
अति उच्छव राजा करै रे, कांइ मंगल हेतु तिवार रे ;
परणावै निज कन्यका रे, कांइ मन मां हरख अपार रे ; १०चा०
कर मुंकावण अवसरै रे, कांइ अरधो दीधो राज रे ;
वलि गृह निज पुत्री तणौ रे, कांइ दीधो सुइवा काज रे; ११चा०
तिण गृह मां सुख भोगवै रे, कांइ निशदिन स्त्री-भरतार रे ;
श्री परमेसर ध्यान थी रे, कांइ कुमर लह्यौ जयकार रे; १२ चा०
ढाल चवदमी ए कही रे, कांइ पूरण थयौ अधिकार रे ;
सतुगुरु नैं परभाव सुं रे, कांइ एह लह्यो पणि पार रे ; १३ चा०

अनुभव नै अधिकार थी रे, कांइ सत्ता ने अनुकूल रे ;
विनयचंद्र कहै मैं कीयो रे, कांइ एह संबंध समूल रे ; १४ चा०

इतिश्री विनयचंद्र विरचिते सरस ढाल खचिते सच्चातुर्य्य शौर्य्य गांभीर्य्यादि गुणगणामत्रं। श्री मन्महाराजकुमार उत्तम चरित्रे सुर-परीक्षित सत्व-प्रकटित प्रदत्त। रत्न प्रभाव प्रोद्भूत भूरिजल प्रकटन तत्पानतः सकल लोक तृप्ति वितरण। दुर्दैवात्समुद्रान्तर्बूडन मत्स्य समुद्रान्तः पतन तग्दिलण मोटपल्ली वेलाकूल प्रापण। धीवर ग्रहण मच्छ विदारणतस्ततो निस्सरण। तत्र स्व विद्या यशः ख्याति विस्तरण दुष्टाहिदष्ट कष्ट त्रसित राजपुत्री सज्जीकरणो जीवत धरणो रमणतयाङ्गीकरण तत्पाणिग्रहणादि विविध चरित्र सूत्रणो नाम तृतीया प्रजोऽधिकारः ॥ २ ॥

तृतीय अधिकार

॥ दूहा ॥

वर्तमान तीरथ धणी, महावीर भगवंत ;
नमस्कार तेहनै करूं, उच्छव धरे अनंत ; १
हिवइं तीजै अधिकार में, जेह थई छै बात ;
नरनारी मन लाय नै, सांभलिज्यो सुविख्यात;२
जंपै एम मदालसा, दासी नै ऊमाहि ;
प्रिउड़ो नाव्यौ तो सही, बूडौ सायर मांहि ; ३
दिन जास्यै हिव दोहिला, किम रहिसै मुझ प्राण;
संतावै मुझ नै सदा, घट मां पांचे बाण ; ४
दीपक विण मंदिर किसौ, यौवन विण सिणगार;
नेह विना सी प्रीति जिम, तिम कंता विण नार ; ५
नीरस आहारै किया, तप आंबिल मन लाय;
साहमी नें संतोषिया, पड़िलाभ्या मुनिराय ; ६
नवा कराव्या देहरा, श्री जिनवर ना चंग ;
प्रतिमा सोवन रत्न नी, सकल भरावी अंग ; ७
वलि त्रिकाल पूजा करी, भावन भावी शुद्ध ;
उन्नति कीधी अति घणी, धरम कीयौ अविरुद्ध;८
इणपरि करतां नवि मिल्यौ, जो माहरौ भरतार;
तौ पंच रत्न दे बहिन नै, लेस्युं संयम भार ; ९

ढाल (१)

दल बादल बूठा हो नदीयां नीर चल्या ; एहनी

इम वचनइं हो जंपइ कामनी,
माहरी ए वाणी हो सांभलि स्वामिनी ; १
परदेशी कोई हो वस्यो त्रिलोचना सुणा,
जेहना जस बोलइ हो, नर सहु इक मना; २
गुण मणिनो दरीयो हो भरियो हेजि सुं,
जिण हेले जीतो हो सूरिज तेज सुं ; ३
सही सेती ताहरउ हो प्रीतम हीज हुसी,
दिल साख द्यै मांहरो हो तुझ मन उल्हसी; ४
जो अनुमति आपइं हो तो तेहनी खबर करूं,
मुख मटको देखी हो हीयड़ै हरख धरूँ ; ५
तब कुमरी भाखै हो था ऊतावली,
आलस छोड़ी नै हो जा मन नी रली ; ६
तेहनै घरि आइ हो दासी नेह सुँ,
पणि तसु नवि देखै हो मिलवो जेह सुं ; ७
कहै कुमरी नै हो ताहरौ भाग्य फल्यो,
मन नो मानीतो हो वालम आयो मिल्यो ; ८
मुझ नें देखाड़ो हो प्रीतमनुं तुम तणो,
देखण मन मांहरै हो अलजउ अति घणो; ६
ते कुमरि पयंपइं हो सांभलि सहल में,
मुझ प्राण पियारो हो सूतो महल में ; १०

ते जोवा चाली हो ऊमही जिसै,
पल्लंक परि सूतो हो कुमर दीठो तिसै ; ११
देखी नै तन नउ हो कीधो पारिखो,
रूपइं पणि दिसै हो उत्तम सारिखौ ; १२
फिर पाछी आवी हो कुमरी नै कहै,
तुझ पति नै सारिखो ते तो गहगहै ; १३
इम सुणि नै कुमरी हो गाढौ हरख धर्यो,
खिण एक तसु रंगइं हो मिलिवा मन कर्यो; १४
वलि चित्त मां विचारै हो ए मैं स्युं कियो,
पर पुरुष न जाण्यो हो तेमां मन दीयो; १५
माहरो मन पापी हो कहुँ अवगुण किसा,
मन पाछो वाल्यो हो एम कहै मदालसा; १६
चतुराई तेहनी हो जे वहिलो भेद लहै,
इम पहिलै ढालइं हो विनयचंद्र कवि कहै;१७

॥ दूहा ॥

कुमर कहै निज रमणि नै, कवन हती ते नारि ;
आवी नै पाछी वली, ए स्युँ थयो प्रकार ; १
मुझ नै खबर पड़ी नहीं, नहिं तो एणी बार ;
सगली बातां पूछि नै, सही करत निरधार ; २
अवसर चूकां माणसां, अति पछतावौ होइ ;
अवसर चूकै सूंदरि, जगमां जलधर जोइ ; ३

ढाल (२)

नागा किसनपुरी एहनी

प्राणसनेही सुणि मोरी बात, कौतुककारी छै अवदात ;
मीठी बात खरी, इण परि भाखै नृप कुँयरी ;
हे सुंदरि मुझ नैं संभलाइ, सुणतां हीयड़ौ उलसित थाय १ मी०
मुझ थी अधिकी रूप विवेक, परदेसण आई छइ एक;
बइ'न करी मानी मैं तास, निश दिन जीव रहै तिण पास; २ मी०
नाह वियोगै दुखणी तेह, भूरि कृस कीधो छै देह ;
रहै एकान्ते लेइ आवास, धरम ध्यान मन मांहे जास ; ३ मी०
दीन हीननइं आपै दांन, द्रव्य घणौ देई सनमान ; मी०
करुणा आणी करै उपगार, एहवी काइ नहीं संसार ; मी० ४
एतलौ धन नौ दीसै नहीं, क्याई थी काढइं छै सही; मी०
तेहनै पासे छै कांइ सिद्धि, खरचतां खूटै नइं रिद्धि ; मी० ५
एह अपूरव छै विरतंत, मुझ भगनी सो सांभलि कंत; मी०
तास सखी ए वृद्धा नारि, तुझ देखी गई एह विचारि ; मी० ६
सांभलि एहवा वचन कुमार, रागातुर हूवौ तिणवार; मी०
एहवी छै गुणवंती जेह, मदालसा हुसइं नहीं तेह ; मी० ७
अथवा नारी सुँदराकार, एहवी घणी छै घर घर बार;मी०
परस्त्री ऊपरि धरीयौ पाप, धिग मुझ नै निंदइ इम आप ; मी०८
किहां थी आय मिलै मुझ नारि, समुद्रदत्त ले गयो निरधार;मी०
खोटो मोह करै स्युं थाय, तन मन थी सगलो सुख जाय; मी०९

तिण अवसरि मन धरि उछरंग, श्री उत्तमाभिध सगुणनरिंद,मी०
मध्यानै जिन पूजा हेत, कुसुमचंदन लेइ सुगति संकेत ; मी० १०
निज मंदिर पासै प्रासाद, आयौ मन धरतौ आल्हाद ; मी०
जातो किण ही न दीठो तेह, फिर पाछौ नायौ वलि गेह; मी०११
त्रिलोचना कुमरी तिणवार, दुख संपूरित हृदय मझार; मी०
दुखणी दुख भरि करै विलाप, प्रीय विरहागनि तनसंताप;१२मी०
निज पति तणी करेवा सार, दासी नै मेली तिण वार; मी०
पिण नवि पायो परम दयाल, नयणे नीर झरै तिण वार; मी०१३
लज्जा छोडी वारंवार, ऊंचइ स्वर ते करइ पुकार ; मी०
मन में धारै अधिको सोग, हींयड़ो फाटइ नाह वियोग ; मी०१४
हिव तिणहीज पुरमांह प्रधान, सकल सुजस गुण तणौ निधान मी०
महेसदत्त नामै धनवंत, सहु वणिक मांहे सौभंत ; मी० १५
छप्पन कोड़ि निधान मझार, छप्पन कोड़ि कलांतर धार ; मी०
छपन कोड़ि नौ करै व्यापार, इतली सोवन कोड़ि विचार ; मी०१६
एहवी जेहना घरमां रिद्धि, पुण्य-संयोगे दिन दिन वृद्धि ; मी०
सूरिजनी परि झाकझमाल, विनयचंद्र कहै बीजी ढाल ; मी०१७

॥ दूहा ॥

वाहण जेहनै पांचसै, वलीय पांच सइं हाट ;
घर गोकुल पिण पांच सै, तितला सकट सुघाट ; १
गज तुरंग नर पालखी, पांच सयां प्रत्येक ;
कोठा जेहनै पांच सै, वली वणिज सुविवेक ; २

वाणोत्तर वाजित्र पणि, सुभट थाट सश्रीक ;
पंच पंचसय जाणियै ए सगला तहकीक ; ३
पांच लाख सेवक तुरी, एहवी लखमी जास ;
यौवन वय बोली सहु, पिण संतति नहिं तास ; ४

ढाल (२)

केत लख लागा राजाजी रै मालियै जी

इणपरि चिंता करतां तेहनै दिन केतलाइक बीता ताम हो ,
मांहरी सुणिज्यो चित देइ चंगी वातड़ी जी,
वातड़ीमां चोज अधिक इण ठाम हो;मां०
वाटड़ी जोवंता थई कन्यका जी,
लावण्यगुण रूप तणौजाणै धाम हो;मां०१
सहस्रकला तसु नाम सुहामणो जी,
चौसट्ठि कलानी ते छै जाण हो ; मां०
अनुक्रमि भर यौवन थई सुन्दरी जी,
युवती नो जे छंडावै माण हो ; मां० २
चिंतातुर थयौ तात निहालि नै जी,
केहनै ए दीजै कन्या सार हो ; मां०
ए सरिखौ रूपै गुण विद्या आगलौ जी,
पुण्यै लहीये एहवो वर सार हो ; मां० ३
घर घर मां वर जोवै सेठ सुता भणी जो,
फिर फिर नें पुर पुर जोवै सुविशेष हो मां०
पणि कन्या सरिखो वर न मिल्यौ जोवतां जी,
आरति मन मांहे थई अलेख हो मां० ४

को एक निमित्त नै पूछ्यौ तेड़िनै जी,
विनय करी देइ बहुमान हो; मां०
माहरी पुत्री नें कुण वर परणस्यै जी,
तेह कहै सांभलि वचन प्रधान हो; मां० ५
राजा नइं दरबार मांहे जे बइसि नै जी,
त्रिलोचना भर्त्ता री कहिस्यै सुद्धि हो;मां०
कहस्यै वृतान्त मदालसा कुमरी नौ जी,
मूल थी मांडी नै निर्मल बुद्धि हो ; मां० ६
ताहरी पुत्री नो ते वर जाणजै जी,
महीना नै अंतरि मिलस्यै तेह हो ; मां०
समस्त राजा नो थास्यै राजवी जी,
तेहनौ प्रताप अखंड अछेह हो ; मो० ७
सगली सामग्री हिव वीवाहनी जी,
हलुवै हलुवै करै सेठ सुजाण हो ; मां०
इहां मन संदेह न आणिजे जी
साची मानै मांहरी तुं वाणि हो ; मां० ८
लगन दीधो निरदोष निहालिनै जी,
वचन अंगीकरि महेशदत्त हो ; मां०
हरषित मन में थई अति घणु जी,
पुत्री नै परणायवा उछक चित्त हो; मां० ६
मंडप कराया मोटा सोहता जी,
सज्जन तेड़ावै कागल मेल्हि हो ; मां०

तोरण बंधाव्या मंदिर बारणै जी,
चित्रत कीधो घर मोहणवेलि हो; मां०१०
धवळ गीत गावै नारि सुहामणा जी,
श्रवणे सांभलतां सहु ने सुहाय हो; मां०
कळश वंस मेल्ही काजै वेदिका जी,
मेलि मेल्ह्या सकल उपाय हो ; मां० ११
वर मणी ताजा वला मेला नवा जी,
अम्बर उज्जवल सुन्दर पटकूल हो ; मां०
सोवन आभरण करावै नव नवा जी,
रतन जड़ित भारी मूल हो ; मां० १२
जातीला गजराज तुरी जिण संग्रह्या जी,
यानादिक हाथ मेलावे देय हो ; मां०
सरल मति धारी तोजी ढाल मां जी,
इण परि विनयचंद्र कहेय हो ; मां १३

॥ दूहा ॥

वार्त्ता कौतुक कारणो, पुरमां थई तिण वार ;
वर विण सेठ वीवाह नो, रच्यो सबल विस्तार ; १
एह वचन राजा सुणी, चिंतै इम निज चित्त ;
धन माहेशदत्त गृहपति, जेहनी अविरल मत्ति ; २
देस्यै धन जामात नै, कन्या परणावेह ;
व्रत लेस्यै वयरागियौ, मन धरि परम सनेह ; ३

सुद्ध जमाई नो लहुं, तो तेहनै देई राज ;
हुं पिण संजम आदरुं, सारूं उत्तम काज ; ४
महेशदत्त सुं राजवी, एहवौ करीय विचार ;
पड़ह नगर मां फेरव्यो, उद्घोषणा अपार ; ५

ढाल (४)

मुगफली सी वांरी आंगुली, एहनी

राजा पुत्री त्रिलोचना, विरहाकुल थई नाह वियोग ;
एहवौ राय वचन कहावै छै सही,
तेहनो पति क्यांही गयौ तिण कुमरी राखै बहु सोग ; १
मदालसा परदेसणी, मैं पुत्री करि मानी तेह । ए०
सहु सम्बन्ध तेहनो कहै, मांडी नै धुर थी नर जेह ।२ । ए०
राज्य समापुं ते भणी, वलि आपइं महेशदत्त सेठ । ए०
सहस्रकला निज दीकरी, सुरकन्या पिण जेहनै हेठ । ३ ए०
एक मास नै अंतरै, सुक पडहो छबीयौ तिणवार । ए०
लोक सहु सुणज्यो तुमे, मुझ वाणी प्राणी हितकार । ४ ए०
मुझ ने ले जावो हिवै, महाराज केरी सभा मझार । ए०
क्षितिपति ना जामात नी, हुं कहिस्युं सगलो ही विरतंत । ५ए०
मदालसा नो पणि तिहां, संभलावीस नृप नें विरतन्त । ए०
राज्य लहीस राजा तणौ, कन्या परणेसुं गुणवन्त । ६ ए०
कौतुक धरि ते आदमी, लेइ आव्या नृप परषद मांहि । ए०
राय बोलाव्यौ सूअटौ, नर भाषा बोल्यो ते साहि । ७ ए०

परीयछ बंधावौ इहां, त्रिलोचना तुझ पुत्री जेह । ए०
मदालसा पणि तेड़ीयै, जिम भाखुं आख्यानक एह । ८ ए०
राय वचन तेहनौ सुणी, हरषित थई कीधो तिम हीज ए०
ज्ञान विना तिरजंच तुं, किम जाणसि वीतक नो बीज । ६ ए०
तीन काल नी वारता, जो थांरै मन अचरिज होइ ; ए०
सावधान थई सांभलो, विच वातां म करज्यो कोइ । ए० १०
रामति जोवा सहु मिल्या, पुर वासी जन मन धरि प्रेम ।ए०
मदालसा नी वातड़ी, कहै सुवटो जिम कही छै तेम । ए० ११
वाराणसी नगरी भली, राजा तिहां मकरध्वज नाम । ए०
तेहनो पुत्र पराक्रमी, उत्तमाभिध जाणै रूपै काम । ए० १३
अचरिज नाना देश ना, जोएवा नीकलिया तेह । ए०
भाग्य परीक्षा कारणै, साहस धरि निज देह अछेह । ए० १४
कितले के दिवसे गयौ, भरुअछपुर नृप सुत कुशलेण । ए०
चौथी ढाल सुहामणी, इम भाखी कवि विनयचन्द्रेण । ए० १५

॥ दूहा ॥

मुग्धद्वीप देखण भणी, पोतै चढ्यो कुमार ;
आव्यो कितलेके दिने, भर दरीयाव मझार ; १
जलकान्तिक पर्वत तिहां, ऊंचो घणौ महान;
तिण मांहे कूपक अछै, पाणी सुद्धा समान ; २
भ्रमरकेत राक्षसपति, तिणै करायो तेह ;
जल अरथै साहसधरी, गयौ तिहां गुण गेह ; ३

ढाल (५)

धण रा मारूजी रे लो, एहनी

पर उपगारी कोइ न दीठो एहवो मीठो,
गुणधारो सुविचारी रे लो ; म्हारा राजेसरजी रेलो
बारी मां जळ हेते पहुतो मन गह गहतो,
दीठी तिहां किण नारी रे लो ; १
मदालसा नामै सुकमाली रूप रसाली,
तिहां परणी ते बाली रे लो ; मां
जाली मां थई बाहरि आया नारि सुहाया,
बे गुण मणि नी आली रे लो ; २ मां
समुद्रदत्त नै वाहण चढीया त्यां थी खडीयां,
पंच रतन परभावै रे लो ; मां०
जल इंधण अन्नादिक जोई लोक सकोई,
मन मां शाता पावै रे लो ; ३ मां०
अवसर देखी पापी सेठै भुंडो ब्रेठै,
रामा धन नो रसीयो रे लो ; मां०
दरीया मांहे नांखी दीधो माठो कीधो,
पड़तो मच्छे ग्रसीयो रे लो ; मां० ४
मगर गळंतो कांठै आयौ धीवर पायौ,
काढ्यौ पेट विदारी रे लौं ; मां०
तुम पुत्रि घर देखि नीपजतो आयो चलतो,
परणायो तिणवारी रे लो ; मां ५

सुख भोगवतां देव तणी परि किणीक अवसर,
श्री जिनपूजा करिवा रे लो ; मां०
श्री जिनवर नै मंदिर आवै भावन भावै,
भवसायर लहु तरवा रे लो ; मां० ६
फूल भरी चंगेरी नीकी वंस नली की,
मदनैं मुद्रित देखी रे लो ; मां०
उघाड़ी ते हाथे साही लघु अहि मांहि,
कर करड्यौ सुविशेषी रे लो ; मां० ७
तन थी नष्ट सकल बल पडीयौ भुइं तलि अडीयौ
इतली मैं कही वातां रे लो ; मां०
सत्य प्रत्यज्ञा जो छै ताहरी आस्या माहरी,
पूरो तुझ गातां रे लो, मां० ८
पोतानो निरवाहै कहियौ तिण जस लहीयौ,
उत्तम ते जग मांहे रे लो ; मां०
विवहारी तुझ पुत्री ल्यावौ मुझ परणावौ,
उच्छव सुं कर साहै रे लो ; मां० ६
ऊतावलि करि मुझ नै दीजै ढील न कीजै,
जग जस भारी लीजइं रे लो ; मां०
तिरजंच जो हुं थाहुं राजा करूं दिवाजा,
रमणी साथि रमीजै रे लो ; मां० १०
एहवौ कहि मुखि मौन सरागै बैठो आगै,
इतलै राय पयंपै रे लो ; मां०

पोपट अंतर हीय म राखो आगै भाखौ,
थास्यइं मन कंपइं रे लो ; मां० ११
पंडित ते निज बोल्यो पालै कुल उजवालै,
तुझ सरिखा गुणवंता रे लो ; मां०
जो नवि आपै तो हुं जास्युं फेर न आस्युं,
मांनु पहुँची कंता रे लो ; मां० १२
स्वादवंत फलनो आहारी रहुँ वनचारी,
इण परि काल गमासुं रे लो ; मां०
ढाल पांचमी ए थई पूरी बात अधूरी,
विनयचन्द्र इम भास्युं रे लो; मां० १३

॥ दूहा ॥

मैं जाण्यो नर हुवै अधम, माया कपट निधान ;
स्वार्थ करी जायै नटी, तुम सरिखा राजान ; १
ऊडेवा नै सज्ज थयौ, नृप झाल्यौ ततकाल ;
देईसि राज सु धीर धरि, वर पंडित वाचाल ; २
उत्तमकुमर किहां अछै, आगलि कहि वृतांत ;
जीवै छै किंवा मूऔ, भांजि भांजि मन भ्रांत ; ३
वली वचन कहै सूवटो, जो तिल मां तेल न होय ;
तो वेलू में किहां थकी, राय विचारी जोय ; ४
एतली बात कह्यां थकां, जौ तुं नापै राज ;
आगलि कह्यां हुवै किसुं, कंठ शोष स्यौ काज ; ५

राज देईसि जो मुझ भणी, तो आगै कहिस्युं बात;
कहि कहि देइस तुझ भणी, कन्या राज संघात ; ६

ढाल (६)

हस्ती तो चढिज्यो हाडा राव कुमकुमां माहरा वालमा, ए देशी

तो वारू राजा रे अहि इसीयां पछी मांहरा साहिबा,
अनंगसेना इण नाम रे ; वेश्या विगताली।
चंचल चरिताली, योवन मतवाली, गयवर गति गाली
तिण वार निहाली, मांहरो कहियो मानो,
कहीयो मानो रे राज तुमने हुं कहिसुं वंछित फल लहिसुं,
धुरा राज्य नी वहिस्युँ
निज आपद दहिस्युं सुख सेती रहिस्युं गुण अवगुण सहिसुं। मां।
किण एक कारण रे दैव संयोग थी। मां।
ते आवी तिण ठांइ रे मणि नीर झकोली,
तसु काया खोली ॥ १ ॥ मां० ॥
ते तिण ऊपरि रे रीझयो अति घणो। मां।
वदनकमल निरखंत रे।
थयो परम सरागी, मिलिवा मति जागी। मां०।
ऊठाड़ी नै आपणै मन्दिर लीयो। मां०।
चउथी भूमि ठवन्त रे, सुख मांहि सदाई,
रहै कुमर सवाई ॥ २ ॥ मां० ॥

हुंतो थयौ मूरख रे दाक्षिणवंत थी । मां० ।
बात कही सहु तुझरे । राज चाहुं पाछै ।
खोटी मति आछै । मां० ।
थाप्यो तो तुझनै रे स्वस्ति महीपति । मां० ।
अपजस आपो मुझ रे जे मंगलपाठी,
मुझ रसना घाठी । मां० ॥ ३ ॥
राजा भाषै रे अद्ध वैद्यक कियै । मां० । जावा न लहै वैद्य रे ।
वाचाल तजी नै, मन सुथिर भजी नै । मां० ।
अनंगसेना नो घर जोऊं जेतलै । मां० ।
तूं मत काढे कैद रे, कन्या राज आपुं,
तुझ नै थिर थापुं ॥ ४ ॥ मा० ।।
क्षण इक इहां रे हुं बइठो अछुं । मां० । जोवो वेश्या गेह रे ।
नृप आणा लहता, सेवक तिहां पुहता । मां० ।
सहु गृह जोयो रे नवि पामियौ । मां० ।
पूछै सगला तेह रे, किहां राय जमाई, द्यो साच बताई ॥ ५ ॥
अधोदृष्टि जोई रही पण्यांगना । मां० । ऊतर नापै लिगार रे ।
विलखित मुख छाया, संकोचित काया । मां० ।
आवी सहु भाखी रे बात वेश्या तणी । मां० ।
जे छइं गहन विचार रे शुकनै पूछीजै, निश्चय ए कीजै॥६॥मां०॥
सूं विप्रतारै अम्हनै सूवटा । मां० ।
जेहवो छै तेहवो दाखि रे ।

कहि ज्ञान विचारी, तूं छै उपगारी । मां० ।
सुणि महाराज रे पोपट वीनवै । मां० ।
वेश्या धर्यो अभिलाष रे ए वर मुझ थास्यै,
भोग अर्थइं आसै ।। मां० ।। ७ ।।
इहां बीजो जासी रे किमही न आवसी । मां० ।
एहवो चित्त विचार रे ।
ते मुझ सुक कीधो निद्रावसि वीधो । मां० ।
सोवन केरै पिंजर मां ठव्यो । मां० ।
रंज्युं गुण गीत गाय रे श्लोक कथा कहीनैं,
अवसाण लहीनैं ।। ८ ।। मां० ।।
चरणां थी छोडी रे डोरो नर करी । मां० ।
बांध्यो मोहनइ चाल रे ।
तिण सुं सुख माणुं, उदयास्त न जाणुं । मां०
दवरक बांधी रे वलि मुझ शुक करै । मां० ।
इम गयो कितलो काल रे,
मन मांहि विचारुं, तिरजंच भव धारुं ।। ६ ।। मां० ।।
परउपगारी रे सहुनो हुं हतो । मां० । निष्टाचार न चोर रे ।
केहनै दुख नवि दीधो कांई विरुद्ध न कीधो । मां० ।
हां हां जाण्यो रे मैं इणहीज भवै । मां० ।
कीधो पातक घोर रे,
न रह्यो हुं सीधो मै सुजस न लीधो ।। १० ।। मां ।
राक्षसकन्या रे कुमरी मदालसा । मां० । परणावी न तसु बाप रे ।

परणी मैं छानै लज्जा करि कानै । मां० ।
राक्षस केरी पुत्री रे मइं हरी ।
सायरमां तिण पाप रे, सागरदत्त नांख्यौ,
निजकृत कर्म चाख्यौ ॥ ११ ॥ मां० ॥
धिग धिग मुझनै रे पांच प्रह्मा मणी । मां० ।
राक्षसना अणदीधा रे ।
पापी मुझ सरिखो, नहीं कोई रे परखो । मां० ।
एतो छट्ठी रे ढाल सुहामणी । मां० ।
विनयचंद्रनी कीधरे, श्रवण सांभलजो,
पातक थी टलज्यो ॥ १२ ॥ मां० ॥

॥ दूहा ॥

तिम त्रिलोचना नै घरे, आवी वृद्धा नारि ;
मैं पूछ्यौ ए कुण अछै, मुझ प्रिया तिण वार ; १
सखी बतावी तेहनै, मुझ नारी मैं जाणि,
राग बुद्धि क्षण इक करी, हुं थयो मूढ अजाण, ; २
मोटो पातक मन तणो, मुझनै लागो तेह ;
सर्प्प डस्यो तिण वार थी, श्री जिनवर नै गेह ; ३

ढाल (७)

सासू काठा गेहूं पीसाय आपण जास्युं प्रेम सुं सोनारि भणै,
नर फीटी हो थयौ तिरयंच पातकि
वृक्ष कुसुम सही ; सुक एम भणै

वली कह्यूं छै हो आगम मांहि
नरक वेदन फल संग्रही; सु० १
महा बलधारी हो रावण जेह,
विश्व जिणै निज वसि कीयौ; सु०
परस्त्रीनी हो वांछा कीध,
कुलखय नारक पामीयौ; सु० २
जोई द्रुपद सुतानो हो रूप,
कीचक मन लाई रह्यौ; सु०
भीम चांप्यौ हो कुंभी हेठि,
अपजस दुर्गति दुख लह्यौ; सु० ३
इम समरै हो निज कृत पाप,
आतम निंदइ आपणौ; सु०
हुवइं थोड़ो हो पिण अपराध,
उत्तम मानै करि घणौ; सु० ४
हिवइं अनंगसेना हो राग,
मास रह्यौ घरि तेहनै; सु०
आज गई नइं हो किण इक काज,
भावी न सूझै केहनै; सु० ५
पुण्ययोगै हो मुझ महाराय,
मुँक्यौ उघाड़ौ पींजरौ; सु०
नीसरीयौ हो अवसर जाणि,
धीरज धरि मन आकरौ; सु० ६

त्रिकनै हो चोक चचर सव्वंत्र,
सांभलि पटहनी घोषणा ; सु०
मई प्रगट निवार्‍यो हो तेह,
वचन सुणी रलियामणा ; सु० ७
हुं आव्यौ हो ताहरै पास,
बात कही मैं माहरी ; सु०
हिव दीजै हो मुझ सुखवास,
उलट मन मांहे धरी ; सु० ८
हुं तो ते छुं उत्तमकुमार,
पगथी छोड़ो दोरड़ो ; सु०
दिव्य रूपी थयो ततकाल,
जाणै कंदर्प्प आगै खड़ौ ; सु० ६
हर्षित हुवा हो सगला लोक,
सहस्रकला कन्या वरी ; सु०
तिहां मिलीयौ मदालसा नारि,
वृद्धा युक्त हरख धरी ; सु० १०
महोच्छव पुर मां हो करि नै भूरि,
त्रिलोचना कुमरी मिली ; सु०
नारी हो तीन तणौ संयोग,
थयौ मन नी आसा फली ; सु० ११
पुनवान हो पुरुष जे होइ,
तुरत मिटै तसु आपदा ; सु०
थई एतलै हो सातमी ढाल,
विनयचन्द्र लही संपदा ; सु० १२

॥ दूहा ॥

प्रीति परस्पर जाणि नै, वेश्या थापी नारि ;
तिण पणि कीधी आखड़ी, इण भवि ए भरतार ; १
हिव तेड़ी वनमालिका, करि नै बहुविध बंध ;
नलिका मांहे व्याल नो, पूछयौ सहु संबंध ; २
बोलै मालणि बीहती, दोष न को मुझ स्वामि ;
समुद्रदत्त मुझनै दीया, परिष पांचसै दाम ; ३
बोल कीयो जिण एहवौ, भूप जमाई मारि ;
तिण लोभे ए मैं धस्यो, नलिका सर्प्प विचार ; ४
राजा बिहुं नै मारिवा, हुकम कीयो करि क्रोध ;
कुमरै राख्या जीवता, देई अति प्रतिबोध ; ५
बिहु नो धन लूटी लियौ, देश निकालौ दीध ;
उत्तम कुमर भणी, सइंहथ राजा कीध ; ६

ढाल (८)

लटको थारो रे लोहणी रे, एहनी

नृप हुवो वैरागीयो रे, जीता विषय कषाय ;
खटकौ जेहना रे मनथी टल्यौ रे। आं०
सेठ सहित संयम लीयौ रे, सद्गुरु पासै जाय ; ख० १
लोभ रहित जे मुनिवरा रे, निर्मल निरहंकार ; ख०
बाल वृद्ध गीतार्थ नो रे, वेयावच करै सार ; ख० २

थोड़ै काल भण्या घणुँ रे, धरम ध्यान रस लीन ; ख०
केवलज्ञान लही करी रे, पोहता मुगति अदीन ; ख० ३
तिण अवसर राक्षसपतो रे, अमरकेतु गुण ठाम ; ख०
नैमित्तिक पूछ्यौ वली रे, मुझ वैरी किण ठाम ; ख० ४
ते कहै ताहरी पुत्रिका रे, परणी गयौ जेह ; ख०
पंच रतन ताहरा लीया रे, मोटपल्ली छै तेह ; ख० ५
वक्रकूप पाताल मां रे, ते पैठो हसी केम ; ख०
पुत्री किम परणी हस्यै रे, नहिं संभीवीयै एम ; ख० ६
ज्ञान न थाय अन्यथा रे, नैमित्तक कह्यौ सुद्ध ; ख०
तेहनै जीती नवि सकौ रे, जो था तुं अति क्रुद्ध ; ख० ७
पहिली शून्यद्वीप मां रे, एकाकी हतो जाम ; ख०
तां पण गंजी नवि सक्यौ रे, हिव युद्ध नौ स्यँ काम ; ख० ८
पंच रतन सुपसाउलै रे, तेह थयौ भूपाल ; ख०
मिलीयै पासे जाय नै रे, सी करीयइ तसु आलि ; ख० ६
वलि सगपण मोटो थयो रे, ते माहरौ जामात ; ख०
इम चिंतवि आयौ तिहां रे, मुँकि सकल उतपात ; ख० १०
उत्तम नृप सेती मिल्यौ रे, दुविधा टाली दूर , ख०
पुत्री भीड़ी हीयड़ै रे, निरमल बाध्यौ नूर ; ख० ११
मस्तक धारी आगन्या रे, उत्तम नृप नी जेण ; ख०
चाल्यो निज नगरी भणी रे, राक्षसपति हरखेण ; ख० १२
ढाल भणी ए आठमी रे, सांभलतां सुख थाय ; ख०
विनयचन्द्र महाराय नौ रे, जस जग मांहि सुहाय ; ख० १३

॥ दूहा ॥

तिहां किण सकल सभा मिली, नृप बैठो मन रंग ;
छत्र विराजै मस्तके, चामर ढले सुचंग ; १
दूत तिहां एक आवीयौ, जास वचन सुपवित्र ;
कर जोड़ी नृप आगलै, मेल्हौ लेख विचित्र ; २
राजा खोली वांचियौ, मन धरि हरख अपार ;
तेमां स्युँ लिखीयौ अछै, ते सुणज्यो अधिकार ; ३

ढाल (६)

चाल—राजा जो मिलै, एहनी,

स्वस्ति थी जिनदेव प्रधान, नमीय वणारसी थी बहुमान ;
राजा वीनवै, प्रेमातुर इम संभलवै
श्री मकरध्वज नृप गुणगेह, सपरिवार सुँ धरीय सनेह ; १
मोटपल्ली नामे बेलाकूल, सकल श्रियानौ जे छै मूल ; रा०
उत्तमकुमर कुमार आरोग्य,
निज अंगज स्नेहपूर्वक योग्य ; २ रा०
आलिंगी निज हृदयसरोज,
घणु घणु प्रेमै रोज ; रा०
समादिसति भूपति कल्याण,
कुशल अत्र वर्त्तइ सुबिहाण ; ३ रा०
साता सुख तणा समाचार,
पुत्र तुमे देज्यो निरधार ; रा०

कारज कहीयै एह विशेष,
हीयड़ै धरीज्यो वाची लेख ; ४ रा०
तूँ अम राज्य तणौ आधार,
करिजे माता पितानी सार ; रा०
तुझ नै दुहवियौ कहि केण,
पहुतो तूँ परदेशे जेण ; ५ रा०
जिण दिन थी नीसरियौ पूत,
खबर करावी तुझ बहूत ; रा०
पिण नवि लाधी ताहरी बात,
दुख पाम्या जाणे वज्रघात ; रा० ६
तैं तो अमने कीया निरास,
नांखंतां दिन जाय नीसास ; रा०
सास तणीपरि आवै चीति,
साल तणीपरि सालै प्रीति ; रा० ७
प्रायै छोरू न लहै सार,
मावीत्रां नी किण ही वार ; रा०
पिण मावीत्र तपै दिन-राति,
पांणी वल विरहो न खमात ; रा० ८
दिवस दुहेला कष्टे जाय,
रयणी तो किमही न विहाय ; रा०
जिम जलधरनै समरै मोर,
तिम तुझनै समरूं छूं जोर ; रा० ६

प्राणसनेही चतुर सुजाण,
तुझ विण जास्यै जाणै प्राण ; रा०
ढील न करिजे गुण-मणि-खाण,
वहिलो आवै मूकी माण ; रा० १०
उपजावै सुख लही सुख विभूति,
मावीत्रांनै तेह सपूत ; रा०
सायर नै जिम चन्द्र-प्रकाश,
हरख वधारै परम उल्लास ; रा० ११
सुहणा ही मां ताहरो ध्यान,
वाल्हो लागै जेम निधान ; रा०
जिण दिन देखिसि ताहरो मुख,
तिण दिन थासी अगणित सुख ; रा० १२
वहिवा राज्य धुरानो भार,
वृद्ध थया असमर्थ विचार ; रा०
इहां आवीयौ पोतानो राज,
पालौ संभालौ गृह काज ; रा० १३
घणॅ किसुँ कहीयइ वार वार,
तुंछै चतुर सकल बुद्धि धार ; रा०
जो तुं अमारो भक्त कहाय,
तौ पाणी पीजे इहां आय ; रा० १४
लेख तणो एहवो समाचार,
वांचै वारंवार कुमार ; रा०

एहवा हितवछल मावीत,
हुँ दुखदायक थयौ अविनीत ; रा० १५
शीघ्र चलुँ नीसाण वजाय,
सुख द्युं मात पिता नै जाय ; रा०
इम उच्छक थयौ मिलण कुमार,
मात-पिता नै तेणी वार ; रा० १६
सचिव भणी निज राज्य भलाव,
चाल्यो चतुरंग सेन मिलाय ; रा०
वाणारसी नगरी भणी नाम,
चार प्रिया संयुक्त प्रकाम ; रा० १७
चलतां चलतां अखंड प्रयाण,
आया चित्रोड़ समीपे जाण ; रा०
ए पूरी थई नवमी ढाल,
विनयचन्द्र कहै परम रसाल ; रा० १८

॥ दूहा ॥

महासेन आवी मिल्यो, निज परिवार समाज ;
राज देई निज नृप भणी, आप थयौ मुनिराज ; १
मेदपाट नै लाट वलि, भोट अनै कर्णाट ;
पोते वसि करि चालीयौ, ले निज सेना थाट ; २
गोपाचल गिरि आवीयौ, उत्तम नृप जिण वार ;
वीरसेन राजा भणी, खबर पड़ी तिण वार ; ३

लेई च्यार अक्षौहिणी, सेना तणौ समूह ;
उत्तम नृप सामौ चल्यो, धरा धड़कै धूंह ; ४
उलकापात हुवो वली, थरकै अहिपति ताम ;
मेरु डिगै सायर चलै, कच्छप थयो विराम ; ५
इत्यादिक अपशुकन तजी, गयौ सनमुख तास ;
सीमा सेढै ऊतस्यो, वीरसेन उल्लास ; ६
उत्तम पृथ्वीपति भणी, साम्हो मेली दूत ;
जौ राणी जायौ हुवै, तौ थाजै रजपूत ; ७
इम सुणी कोपातुर थयौ, उत्तम नाम नरिंद ;
वीरसेन ऊपरि अधिक, रूठो जिम असुरिंद ; ८
झंडा दीसै दल तणा, घणा घुरइ नीसाण ;
सूरा पूरा सहु थकी, हूवा आगेवाण ; ६

ढाल—(१०) हो संग्राम राम नै रावण मंडाणौ एहनी

मांहो मांहि ते लसकर बे मिलिया, सनद्ध बद्ध संकलीया ;
टंकारव लागै नवि टलीया, भड़ सहु कोई भिलीया रे ; १ मा०
वाजा रण मांहे तिहां वाजै, गरजारव करि गाजै ;
लूवरि पिण आवण री लाजै, दल रै सघन दिवाजै हो ; २ मा०
हाथी सहु पहिरी हलकारै, हलकंता नवि हारै ;
सुँडा दंड सबल विसतारै, मद उनमत्ता मारै हो ; ३ मा०
जुगति लड़ण री घोड़ा जाणै, दल में ते दोडाणै ;
बापूकार्या बल बहु, टामक वज्जण टाणै हो ; ४ मा०

रिण मांड्यो सूरे रस राते, घट भांगै घण घाते ;
मन थी महिर तजे मद माते, विचि विचि आवै वाते हो ; ५
गड़ गड़ नाल विशाल गड़ूकै, धरणी तुरत धड़ूकै ;
चन्द्र बाण नाखंतां न चूकै, कल कल स्वर करि कूकै हो ; ६ मा०
डिगै न पायक भरतां डाके, छल खेले छिलती छाके ;
... ...ढाहि चढावै ढाकै हो ; ७ मा०
रुंख तणी परि पग आरोपै, लड़ता रिण नवि लोपै ;
चक्षु तणै फुरकारै चोपै, कहर करतां न कोपै हो ; ८ मा०
चमकि लगावै वदन चपेटा, लातां तणा लपेटा ;
घरहर नै जिम मंडै घेटा, तिम भरी रीस ल्यै भेटा हो ; ९ मा०
कुहक बाण छूटण रै कडकै, अरीयां साम्हा अडकै ;
भड़ कायर भाजै तिहां भड़कै, त्रेह त्रसै जिम तड़कै हो ; १० मा०
वलि विच मां बंदूक विछूटै, खिण आरावा खूटै ;
तरवारां त्राछंतां तूटै, सुभटां रो सिर फूटै हो ; ११ मा०
अरक छिपायो रज ऊडंती, अंबर जिम ओपंती ;
रुहिर खाल तिहां मांहि रहंती, बालारुण वहसंती हो ; १२ मा०
असवारै असवार अटक्कै, लल बल लुंबि लटक्कै ;
संभावै समसेर सटक्कें, तोडै, तुँड तटक्कै हो ; १४ मा०
अंग तणै पोरस्स उमाहे, अरियण नै अवगाहै ;
ढालां री ओटा दे ढाहै, सबल सड़ासड़ साहै ; १५ मा०
रथ सेती जूटा रथवाला, मुडै नहीं मछराला ;
मूँछे बल घालै मतवाला, टलि न करै को टाला ; १६ मा०

पासै सर आवंता पालै, भलकंते निज भालै;
नयणे निपट निजीक निहालै, धाव झड़ाझड़ घालै; १७ मा०

इतरै वेढ हुई उपशमती, कलिरो भाव कहंती;
दुइ दल रा तिहां दीसै दंती, बादल घटा वहंती हो; १८ मा०

प्रलय काल रिण मेघ प्रगट्टें, इत तल थल उदवट्टें;
झलहल विज्जल खड्ग झपट्टें, छट्टा वाण आछट्टइं हो; १६ मा०

उदक वहै रुधिरालउ लोला, गडा रूप ते गोला;
इन्द्र धनुष भण्डा धज ओला, हयवर पवन हिलोला हो; २० मा०

इणपरि युद्ध तणी विधि जाणै, जे सगवट नें जाणै;
परतखि दशमी ढाल प्रमाणै, विनयचन्द्र सुवखाणै हो; २१ मा०

॥ दूहा ॥

संग्रामांगण नै विषै, जीतो उत्तम राय;
वीरसेन नै जीवतौ, बांधि लियौ तिणठाय; १

फेरावी निज आगन्या, उत्तम राजा वेगि;
गाल्यो गह बैरी तणो, भला जगाई तेग; २

वीरसेन मनमां चींतवै, माहरी न रही माम;
हुँ पिण जोरावर हतो, एह थयौ किम आम; ३

निज अपराध खमाइ नै, पाए लागौ जाम;
राजा छोड़ि दीयो तुरत, फिर बगस्यौ निज ठाम; ४

ढाल (११)

ओलगड़ी

चित्त मां (२) विचारै राजा एहवो रे,
हो अपजस भाखै लोक;
तो हिवै (२) आपुँ उत्तम राय नै रे,
राज्य प्रमुख सहु थोक; १ चि०
केहनो (२) गुमान रहै नहीं सावतो रे,
गंजी नइं कुण जाय;
परभवि (२) परमेसर पूज्यां विना रे,
जेत कहो किम थाय; २ चि०
राजनै (२) गजादिक सूँपीया रे,
उत्तम नृप नै ताम;
निज मन (२) चाल्यो गृह बंधन थकी रे,
वीरसेन हित काम; ३ चि०
इण समै (२) सुविहित मुनि चूड़ामणी रे,
हो आव्या युगन्धर सूरि;
नगर नै (२) समीपै वन में समोसर्या रे,
हो साधु सहित भरपूर; ४ चि०
आवी नै (२) वन पालक दीध वधामणी रे,
गुरु आगमन प्रघोष;
वांदिवा (२) चाल्यो निज परवार सुँ रे,
हो नृप तेहनै संतोष; ५ चि०

बांदि नै (२) बैठो सुणिवा देसना रे,
सदगुरु द्यै उपदेश ;
धरम (२) करो रे भवियण भावसुं रे,
जेम कटै कर्म कलेश ; ६ चि०
नर भव (२) लहिस्यो फिर दोहिलो रे,
करि भव भ्रमण अनेक ;
भवजल (२) निधि तरिवानै कारणै रे,
जैन धरम छै एक ; ७ चि०
तेहनो (२) सरणौ हो भवियण आदरो रे,
संयम तप धरि सार ;
इक भव (२) अथवा दोइ भव अंतरै रे,
वरिस्यौ शिवगति नार ; ८ चि०
धर्मकथा (२) सुणि संयम ग्रह्यो रे,
भण्यो शास्त्र सिद्धांत सुजाण ;
पालीने (२) चारित्र निरतिचार सुं रे,
नृप पहुतो निरवाण ; ६ चि०
उत्तम (२) कुमर देश वशी करि,
आवै निजपुर मांहि ;
आवतां (२) अनमी राय नमाविया रे,
थयौ आणंद उच्छाह ; १० चि०
भूपति (२) सह्यौ सामेलो प्रेम सुँ रे,
सिणगार्या गजराज ;
घरि (२) तोरण बांध्या अति भला रे,
धुरे नगारा गाज ; ११ चि०

कोतिल (२) घोड़ा आगलि कर्या रे,
सधव धर्या सिर कुंभ;
इण परि (२) राय मिल्यो निज सुत भणी रे,
चित थी टलीयौ दंभ; १२ चि०
एहवै (२) ढाल कही इग्यारमी रे,
लहीयौ भूपति मान;
उत्तम (२) कीरति थंभ चढावीयौ रे,
विनयचन्द्र वरदान; १३ चि०

॥ दूहा ॥

उत्तम नृप मिलीयौ जई, बाप भणी धरि नेह;
मन विकस्यौ तन उल्लस्यो, रमांचित थयौ देह; १
मकरध्वज भूपाल पणि, सुत ऊपरि करि मोह;
अंगइ आलिंगन दीयौ, सखरी वधारी सोह; २
सासू नै पाए पड़ी, च्यार बहु मद छोड़ि;
दीधी तीण आसीस इम, अविचल वरतो जोड़ि; ३
प्रभुता देखी पुत्र नी, राजा हुवै खुश्याल;
पुण्य बिना किम पामीयै, एल मुलक ए माल; ४
निज सुत समरथ जाणि नै, पोते थाप्यो पाट;
पंथ लियौ मुनिवर तणौ, जग मांहे जस खाट; ५

ढाल (१२)

तंबोलणि नी

च्यार राज्य अधिपति हुवो रे, उत्तम नृप गुण गेह;
जेहनै सुन्दर कामिनी रे, जसु कंचन वरणी देह; १

च्यारे त्रिया चित्त हरइ रे, अधिको अधिको नेह,
दिवस प्रति जे धरइ रें ;
चित चोखो चिहुं नारि नो रे, गुणवंती कहवाय ;
प्रिउ ऊपरि अति रागणी, ते कथन न लोपै काय ; २
सेमै रंभा सारिखी रे दासी गृह नै काम ;
माता नी परै नेहलो, पालै टालै दुख ठाम ; ३
सुख आपै निज पति भणी रे, सुकलीणी सिरताज ;
धरम ध्यान पिणसाचवै, अवसर देखि तजि लाज ; ४ च्यारे०
जेहनै लखमी अति घणी रे, कहतां नावै पार ;
जाणि धनद निज आविनै, भरीयो पूरण भंडार ; ५ च्या०
चालीस लक्ष हयवर भला रे, गज पणि लक्ष चालीस ;
स्यंदन पणि जेहनै छै तितला हीज विसवा वीस ; ६ च्या०
च्यार कोड़ि पायक कह्या रे, ग्रामा गर पणि जास ;
चालीस कोड़ि वखाणियै, दिन दिनमां अधिक प्रकाश ; ७ च्या०
धरम करै उच्छव धरै रे, पूजे जिनवर देव ;
धूजै पातिक थी घणुं, इण रीति राखै टेव ; ८ च्या०
भला कराव्या देहरा रे, जिनवर तणा अलेख ;
यात्र करी जिण जुगति सुं, सहु तीरथ नी सुविशेष ; ९ च्या०
पोष्या पात्र सुपात्र ना रे, छोड्यो सगलो दंड ;
साधर्मिकवच्छल कर्या, चावौ थयो च्यारे खंड ; १० च्या०
पुस्तक जेण लिखाविया रे, जिन आगम सुविचार ;
दानशाला मंडाविनै, दान देई करै उपगार ; ११ च्या०
संसारी सुख भोगवे रे, च्यार स्त्रियां नै साथि ;
जातां दिन जाणौ नहीं रे, एतो वाणारसी नौ नाथ ; १२ च्या०

राज प्रजा सुख चैन मां रे, प्रवर्त्ते दिन राति ;
इम द्वादशमी ढाल मां, कहै विनयचन्द्र अवदात ; १३ च्या०

॥ दूहा ॥

इण प्रस्तावै समोसख्या, केवलधार मुणिंद ;
चित मां अति उच्छक थई, वांदण चाल्यो नरिंद ; १
मुनिवर पासै आविनै, वांदे बे कर जोड़ ;
धर्म देशना मुनि दियै, मोह तणा दल मोड़ि ; २
जगवासी जन सांभलौ, ए संसार असार ;
तिहां तन धन यौवन निफल, जातां न लहै वार ; ३
पाम्यौ जनम मनुष्य नौ, आरिज कुल सुनिहाल ;
रयण राशि कवड़ी सटैं, कोई गमावौ आलि ; ४
श्रुत सुणतां अति दोहिलो, राखै तिण मां चित्त ;
सद्दहणा वलि साचवौ, संयम धरि सुपवित्त ; ५
धरम च्यार प्रकार नौ, दान शील तप भाव ;
ते दुर्म्मति छोडीजो, द्यौ कृतान्त सिर घाव ; ६
जनम मरण दुख छोडि नै, जेम लहो शिवराज ;
सांभलि एहवी देशना, हरख्या लोक समाज ; ७
हिव राजा पूछै इसुं, स्वामी कहो विचार ;
मैं लछमी पामी घणी, राज्य लह्या वली च्यार ; ८
हुं वारिधि मांहे पड्यो, मीनोदर रह्यो केम ;
गणिका घरि शुक किम थयो, भाखौ जिम छै तेम ; ९

ढाल (१३)

होलाई बांभणी, एहनी

सुणि नृप गुण रसीया पूरब अर्जित संबन्ध जो,
जे तै पाम्यौ रे फल इण हीज भवै रे लो। सु०
नवि छूटै निज कृत कर्म बंध जो,
केवलधारी मुनि इण परि चवै रे लो। १ सु०
भूमि हिमालै पासि नजीक जो,
सुदत्त तिहां रे गांम सुहामणो रे लो। सु०
तिण मां रहै कौटंबिक गुण गेह जो,
धनदत्त नाम अति रलीयामणो रे लो। २ सु०
तेहनै रमणी चार सरूप जो,
लखमी तो लाखे गाने गेह मां रे लो। सु०
कितलै दिवसे थयो विरूप जो,
कवड़ी नौ वित्त मिलै नहीं जेहमां रे लो। ३ सु०
भूख मरंतां कृश थयो अंग जो,
वली जरायें ते थयौ जाजरो रे लो०। सु०
तसु घर आव्या मुनि मन रंग जो,
कौटंबी जाण्यो धन दिन आज नो रे लो। ४ सु०
ते तो च्यारे साधु सुजाण जो,
चोरे लूट्या रे मारग चालतां रे लो। सु०
टाढइं धूजइं तेहना प्राण जो,
महिर आवी रे तास निहालतां रे लो। ५ सु०
वहिराव्या तिण वस्त्र प्रधान जो,
अनुकंपा कीधी रे च्यारे अंगना रे लो। सु०

धन धन तुं प्रिय गुणनिधान जो,
मुनि पड़िलाभ्या वस्त्र सुचंगना रे लो। ६ सु०
तिण प्रभावै धनदत्त राय जो,
तूंतौ थयो रे सहु नो अधिपति रे लो। सु०
ताहरै स्त्री पुण्य पसाय जो,
ते ही च्यारे रे अभिनव सरसती रे लो। ७ सु०
देखी किण एक भवि मुनि आंन जो,
निंदा कीधी रे तेहनी घणुं घणी रे लो। सु०
एतो मीनक नी परि म्लान जो,
मछ जिम वासै गंध देही तणी रे लो। ८
तसु कर्मे काल निवास जो,
तूं तो वसीयो रे मछ ना पेट मां रे लो। सु०
रहीयौ वलि मेनिक आवास जो,
आन पड्यौ रे दुखनी फेट मां रे लो। ९ सु०
इण भवि थी सूवड़ो कोइ जो,
राख्यो रे तैं तो सहस्रतमै भवै रे लो। सु०
घाल्यो पंजर मां गुण जोइ जो,
हूवो रे पोपट तूं पिण तिण ढबै रे लो। १० सु०
वलि अनंगसेना नै पास जो,
पइंलंतर आवी सहीयर सखि भली रे लो। सु०
तिण इण परि कीधो हास जो,
आवौ रे बाई वेश्या लाडिली रे लो। ११ सु०
तिण कर्म तणै वशि एह जो,
अनंगसेना रे गणिका ऊपनी रे लो। सु०
इम सुणि राजादिक तेह जो,
सकल विटंबन जाणी कर्मनी रे लो। १२ सु०

थई पूरी तेरमी ढाल जो,
भाख्यो रे पूरब भव जिण शुभमती रे लो । सु०
एतौ विनयचन्द्र दयाल जो,
नृप परसंसा जेहनी कुल छती रे लो । १३ सु०

॥ दूहा ॥

राज देई निज सुत भणी, उत्तम नृप जिन भक्त ;
गुरु पासै संजम लीयौ, च्यारे स्त्री संयुक्त ; १
चारित पालै निरमलो, तप करि सोषे काय ;
पूरब पाप पखालतां, कर्म्म निर्जरा थाय ; २
प्राते अणसण आदरी, पहुता वर सुर लोक ;
च्यार पल्योपम आउखो, जिहाँ छै बहु विह्लोक ; ३
तिहां थी चवि नै सीझसी, महाविदेह मझार ;
अविचल शिव सुख पामसी, नहीं जिहां दुख लिगार ; ४

ढाल (१४)

गूजरी रागे

वस्त्र दान नै ऊपरै रे, उत्तम चरित्र कुमार ;
सुख संपत लही, हां रे सुख पाम्या श्रीकार ; सु०
इम जाणी नै दान द्यो रे, मन धरि हरख अपार ; १ सु०
गुण गाया मुनिराय ना रे, धन्य दिवस मुझ आज ;
रास कीयौ मन रंग सुं रे, सीधा वंछित काज ; २ सु०
चारुचंद्र मुनिवर कीयौ रे, उत्तमकुमर चरित्र ; सु०
ते संबंध निहालनै रे, जोड्यौ रास विचित्र ; ३ सु०
ओछौ अधिको जे कह्यो रे, कवि चतुराई होइ ; सु०
मिथ्यादुष्कृत वलि कहुं रे, ते सुणज्यो सहु कोइ ; ४ सु०

वचन प्रमाणै जाणि नै रे, मन थी टाली रेख ; सु०
ढाल भली देशी भली रे, कहिज्यो चतुर विशेष ; ५ सु०
श्री खरतर गच्छ जगतमां रे, प्रतपै जाणि दिणंद ; सु०
सहु गच्छ मांहे सिर तिलौ रे, ग्रह गण मां जिम चंद ; ६ सु०
गुण गिरुवौ तिहां गच्छपति रे, श्रीजिणचंद सुरिंद ; सु०
महिमा मोटी जेहनी रे, मानै बड़ा नरिंद ; ७ सु०
ज्ञान पयोधि प्रतिबोधिवा रे, अभिनव ससिहर प्राय ; सु०
कुमुद चन्द्र उपमावहै रे, समयसुन्दर कविराय ; ८ सु०
तत्पर शास्त्र समर्थिवा रे, सार अनेक विचार ; सु०
वली कलिंदिका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार ; ९ सु०
विद्या निधि वाचक भला रे, मेघविजय तसु सीस ; सु०
तस सतीर्थ्य वाचकवरू रे, हर्षकुशल सुजगीश ; १० सु०
तासु शिष्य अति शोभता रे, पाठक हर्षनिधान ; सु०
परम अध्यातम धारवा रे, जे योगेन्द्र समान ; ११ सु०
तीन शिष्य तसु जाणियै रे, पंडित चतुर सुजाण ; सु०
साहित्यादिक ग्रंथ ना रे, निर्वाहक गुण जाण ; १२ सु०
प्रथम हर्षसागर सुधी रे, ज्ञानतिलक गुणवंत ; सु०
पुण्यतिलक सुवखाणतां रे, हियड़ो हेज हरखंत ; १३ सु०
तास चरण सेवक सदा रे, मधुकर पंकज जेम ; सु०
प्रमुदित चित नी चूंपसुं, रे, रास रच्यौ मैं एम ; १४ सु०
संवत सतरै बावनै रे, श्री पाटण पुर मांहिं ; सु०
फागुण सुदि पांचम दिनै रे, गुरुवारे उच्छाहि ; १५ सु०

ढाल बयालीस अति भली रे, नव नव राग प्रधान ; सु०
अठतालीस नै आठसै रे, गाथा नौ छै मान ; १६ सु०
एह चरित सुणतां सदा रे, वाधै महियल माम ; सु०
सुख संपति बहु पामियै रे, अनुक्रमि मन विश्राम ; १७ सु०
ढाल चवदमी मन गमी रे, सहु रीझ्या ठाम ठाम ; सु०
ज्ञानतिलक गुरु सानिधै रे, विनयचंद कहै आम ; १८ सु०

इति श्रीविनयचन्द्र कवि विरचिते सरस ढाल खचिते सच्चातुर्य्य शौर्य्य धैर्य्य गांभीर्य्यादि गुण गणामत्रे। श्री मन्महाराज उत्तमकुमार चरित्रे जिन पूजा रचन। श्रेष्टि दापित मालाकारणी पुष्प नलिकास्थ लघु सर्प्प दशन गणिका निर्मित विषापहरण। क्रीडा शुक करण। पटहोद्घोषण स्पर्शन सहस्र-लोचना परिणयन नरवर्म्म दत्त राज्य प्रापण। भ्रमरकेतु मिलन। महासेन दत्त राज्यांगीकरण। हठात् वीरसेन राज्य ग्रहण पिता दत्त राज्यादि राज्य चतुष्टय निर्वाहण समयामृतसूरि समागमन। पूर्व भव श्रवणात् अवाप्त चारित्र सूत्रण। निर्वाण-पद प्राप्ति समर्थनो नाम चातुर्य्य वर्य्य तुर्य्योग्रजोधिकारः॥ ३॥

संवत् १८१० वर्षे मिती चैत सुदि ११ शुक्रे। महोपाध्याय श्री ५ पुण्यचन्द्रजी गणि तत्शिष्य पुण्यविलासजी गणि। तदंते-वासी वाचक पुण्यशील गणिः लिखिता चतुष्पदिका। बाकरोद ग्राम मध्ये॥ श्रीः॥

[श्री हीराचन्दसूरिजी के बनारस, ज्ञानभंडार की प्रति पत्र २१ पंक्ति प्रतिपत्र १७, अक्षर प्रति पंक्तिमें ५६, आदि व अन्त का १-१ पृष्ठ रिक्त]

श्री नेमिनाथ सोहला

राग—खंभाइती सोहलौ

नेमिकुंवर वर वींद विराजै, यादव यानी केसरीया।
असीय सहस सेजवाला साथे, मंगल मुख गावै गोरीयां ॥ १ ॥
यदुनाथ चढे गज रथ तुरीयां। आंकणी।

ऐरापति सम अंग सुचंगा, सोवन मैं साकति जरीयां।
अंग प्रचंड महाबल मैंगल, गात बड़ा सोहै गिरीयां ॥ २ ॥यदु०॥

गत तरंग चपल गति चंचल, खेत खरा करता खुरीयां।
अश्व अनोपम ऊँचा सोहै, हींस करै हयवर हरीयां ॥३॥यदु०॥

पवन वेग चालंता साथे, धवला धोरी जोतरीयां।
असीय हजार सुखासन आगै, जरकस में चालै जरीयां॥४॥यदु०॥

छप्पन कोड़ कुंवर मद माता, सारंग हाथ लेई सरीयां।
बजा सहज अड़तालीस बाजै, फरहरता नेजा धरीयां।
पायक कोड़ि पंचाणू आगै, नोबति बाजै घूघरीयां ॥५॥ ॥यदु०॥

अपछर सरिखी राजुल रंभा, गोखि चढ़ी जोवै गोरीयां।
अभिनव इंद्र विराजे प्रभुजी, सरिखी जोड़ी भल मिलीयां॥६॥यदु०॥

राजिमती तन देव विभूषण, खलकै कंकण कर चूरीयां।
तोरण तें प्रभु फेरि सिधारे, विनयचंद्र मुगते मिलियां ॥७॥ यदु०॥

ढालों में प्रयुक्त देसी सूची

कठिन शब्दकोष

अ

अकराग=अशक्ति
अकज्ज=निकम्मा, अकार्य
अकीकी=लालरंग का पत्थर
अक्खरा=अक्षर
अखियात=अक्षय, आख्यात, आख्यान, कहावत
अगल-डगल=अंटसट
अछइ, अछउ=है, हो
अछीप=अस्पृष्ट
अजेस=आज भी
अटिल=अटल
अड़कै=भिड़ते है
अड़=आठ
अढारह=अठारह
अणख=ईर्ष्या, नही सुहाना
अणदीठी=बिना देखी
अणियाला=तीखा
अथाग=अथाह
अदत्तादान=चोरी
अनड़=स्वाभिमानी, अनम्र
अनुयोग=जोड़ना
अनेरी=दूसरी
अपछर=अप्सरा
अपजात=हीन जाति
अबीह=भयरहित
अब्भटे=आभिडे
अभिग्रह=नियम
अम=हम
अमी=अमृत
अमरष=अमर्ष, खेद, प्रचण्ड
अमीना=हमें
अमोलख=अमूल्य
अम्हाणी=हमारी
अयाण=अज्ञान
अरइ=आरामें (कालचक्र=६ आरे)
अरियण=अरिजन, शत्रु
अलजउ=हूंम
अलवेसर=प्रभु, प्रियतम
अलजो=उत्कट अभिलाषा
अलूंझयो=उलझ गया
अलवि=सहज
अवगाह=व्याप्त, डुबकी लगाना, लीन होना
अवदात=शुभ, सुन्दर यश
अवचल=अविचल, निश्चल
अवधारो=स्वीकार करो
अवर=अपर, और, दूसरे ।

अविहड़=अविघट, निश्चय
अवहटै=दूर करता है
असाता=असमाधि, अशान्ति
अहिनाण=अभिज्ञान, चिह्न, पहिचान

आ

आउल=बांवल, कांटेदार वृक्ष
आखड़ी=नियम
आगेवाण=आगीवान, प्रधान
आगलै=आगे
आगल=अर्गला
आगन्या=आज्ञा
आचर्या=आचरण किया
आछटइं=छूटते हैं
आँजुं=अंजन डालता हूँ
आडी=प्रहेली, काम में आना, रुकावट डालना
आड़ौ=जिद्द, हठ
आणी=लाकर
आदर्या=स्वीकार किया
आधाकर्मिक=अधोकर्मिक, जो साधु के निमित्त बना हो।
आंन=अन्य
आपइ=स्वयं, देता है
आपउ=दो
आफाणी=अपने आप
आंबिलतप=रूखा व अलोना एक धान्य दिन में एक ही बार खाना
आम=ऐसा
आराहुं=आराधन करता हूँ
आराबा=एक प्रकार का शस्त्र
आलंबिया=अवलम्बित
आली=सखी
आलइं=व्यर्थ
आलि=छेड़छाड़
आलोचि=विचार कर
आसरौ=आश्रय

इ

इकताई=एकत्व
इवड़ी=ऐसी

उ

उघाड़ी=खोली
उछाहि=उत्साह से
उच्छवक=उत्सुक
उच्छक=उत्सुक
उजमाल=उज्वल, तेजस्वी
उझड़वाट=उजड़ मार्ग
उंठ=साढे तीन
उदाल=नष्ट करना
उदग्र=जोरदार
उदवट्टै=उलटना
उद्देशा=अध्याय
उपस्यउ=उपशांत हुआ
उपधान=श्रुताराधनार्थ किया जाने वाला तप

उपाड़िनै=उठाकर
ऊपजस्यै=उत्पन्न होगा
उंबरा=उमराव
उमाही=उमंग, उल्लसित
उयर=उदर, गर्भ
उलटइ=उल्लसित होना
उवंग=उपांग
उवावण=उपार्जन
उवेख्यउ=उपेक्षित
उसन्नउ=शिथिलाचरी
ऊठाड़ी=उठाकर
ऊडेवा=उडने के लिए
ऊतावलि=शीघ्रता
ऊधरउ=उद्धार करो
ऊभी=खड़ी हुई

ए

एकरस्यउ=एक बार
एकलड़ा=अकेले
एहवउ=ऐसा

ओ

ओछउ=न्यून
ओलग=सेवा
ओलइ=ओट, मिस
ओसर्यो=हटना
औखाणौ=कहावत

अं

अंभ=पानी
अंतेउर=अन्तःपुर
अंतगड़=अन्तःकृत, अंतिम समय में कार्य सिद्ध कर मोक्ष जानेवाले
अदेसउ=आशंका
अदोह=अंदोलन, कंपन

क

कचोला=प्याला
कड़कै=शब्द करना, कड़कड़ाहट
कन्है=पास, निकट
कड़व=कटुक
कड़ा=कुता
कण=धान्य, अंश
कबाण=कमान
कमणा=कमी, न्यूनता
करड़्यो=काटखाया
करण=क्रिया
करसणी=कृषक, किसान
कल=अटकल, उपाय
कवड़ी=कौड़ी
कवियण=कविजन
कहर=आफत
कन्ता=कान्त, पति
कांकर=ककड़
काँकल=ललकार
कागल=पत्र
काठौ=दृढ़
काढंतौ=निकालते हुए

काढूँ=निकालूं
काण=लिहाज, कायदा, इज्जत
कारिमउ=व्यर्थ
कारिज=कार्य
कासल=कश्मल, पाप
किपाक=एक विष परिणामी मधुर फल
किम=कैसे
किराड़ै=किनारे
किसी=कौन सी
कीकी=ऑख की पुतली
कुढना=भीतर ही भीतर जलना
कुण=कौन
कूकइ=चिल्लाते, पुकारते है
कूड़=झूठ, मिथ्या
कूरम=अक्रूर
केड़इ=पीछे
केरी=की
केलवि=प्रयत्न करके, खोज करके
केहना=किसके
केही=कैसी
कोड=उत्कण्ठा
कोतिल=सजावटी (घोडे)
कोर=कोने मे

ख

खमणा=क्षपणक, दिगम्बर
खमात=सहन होना
खमिजे=क्षमा करना
खरउ=सत्य
खाटइ=भोगता है
खाणी=खान
खातर=खाता बही
खांतइ=क्षांतिपूर्वक
खामी=त्रुटि
खिजमति=सेवा
खिण=क्षण
खिमइ=हटता है
खीणउ=क्षीण
खुंद=अपराध
खूटि (गयो)=समाप्त (हो गया)
खेड़=हाक कर, चला कर
खेह=धूलि
खोड़=त्रुटि
खोली=प्रक्षालित कर

ग

गइन=गगन
गड़ां=ओले
गणपिटक=द्वादशांगी
गभारे=गर्भगृह
गमइ=सुहाना
गमा=भेद
गरूआ=बड़े
गलगलि=गद्‌गद्
गवाणी=गायी गई

गहकइ=प्रफुल्लित होता है
गहगाटइ=उत्साह से, समारोह से
गहेली=पागल, ग्रथिल
गाने=प्रमाण में
गाह=गाथा
गीतारथ=गीतार्थ, बहुश्रुत विद्वान
गुड़ै=लुढकता है
गुणीयण=गुणी जन
गुल=गुड़
गूँगा=मूक, अबोल
गोचरी=मधुकरी, भिक्षार्थ भ्रमण
गोठ=गोष्ठी

घ

घटइ=चाहिए
घाठी=घृष्ट, घसी
घाणी=कोल्हू
घालता=प्रविष्ट करते, लगाते
घाल्यो=डाला
घालिस=डालूंगी
घुरइ=बजते हैं
घेटा=मीढा

च

चइन=चैन, आनन्द
चउमाल=चमालीस
चटकउ=उत्साह
चवि=च्यवकर
चरण=चारित्त, चर्या
चरवी=चरी, बटलोइ
चंदूआ=चंदरवो
चंग=अच्छा
चहुटी=चिपकी, लगी
चांपइ=दबाना
चारित=संयम, दीक्षा
चावो=प्रिय, चाहवाला
चीत=चित, चिन्ता, याद
चीर=वस्त्र, ओढणा
चुलसी=चौरासी
चूंप=इच्छा, चेष्टा, युक्ति
चूरउ=चूर्ण करो
चीगटइ=चिकने, स्निग्ध
चोला=मजीठ, लाल
चौरी=विवाह मण्डप
चौमाल=होसियार, चतुर

छ

छती=रहीहुइ
छव्यौ=स्पर्श किया
छाजइ=सुशोभित
छांडस्युं=छोडूंगा
छाने=गुप्त
छावरै=छोड़े
छाहडी=छाया
छीपे=स्पर्श करे
छेहड़इ=अन्त में
छोकरवाद=लड़कपन

छोरी=लड़की
छोरू=लड़का

ज

जइये=जब
जड़ी=मिली
जमवारो=भव, जन्म
जमवारइ=जन्म भर
जलहर=जलधर, मेघ
जसथभ=कीर्ति स्तम्भ
जाइगा=जगह
जागरिका=जागरण
जाजरो=जर्जर
जाणपन=ज्ञान
जातिं=जन्म से
जाम=जहांतक
जाया=जन्मे
जंपै=बोले
जात=यात्रा
जास्यौ=जाओगे
जीत्या=जीते
जीमणो=दाहिनी
जीवाडिस्युं=जिला दूगा
जूअउ=जुदा
जेत=जीत, विजय
जेम=जैसे
जेहवी=जैसी
जैत=जय-जीत
जेर=परास्त, निर्जित
जोगता=योग्य, योग्यता
जोड़इ=समकक्ष
जोतरीयां=जोड़े गए
जोसीयडो=ज्योतिषी
जोय=देखना
जोवइ=देखता है

झ

झकझोल=झकझोरना, झीलना
झखै=बकता है
झखि झखि=घिस घिसकर
झबूकै=चमकै
झाकझमाल=तेज, जगमगाहट
झाडो=मंत्र फूक
झाली=पकड़ कर
झाले=पकड़े
झीलया=स्नान किया
झूलइ=झूलते हैं
झूली=डोलना, मंडराना
झूझ=युद्ध

ट

टलवलै=उत्सुक, व्याकुल
टाढइं=शीत से
टाढी=शीतल
टामक=ढोल
टालउ=दूर करना, टालना
टाणै=अवसर पर

ठ

ठाणा=स्थान
ठवना=रखना, स्थापित करना
ठीगो=जबरदस्त
ठाढी=ठंढी, शीतल
ठारूं=शीतल करूँ
ठावा=निश्चित स्थान
ढूकइ=जंचता है

ड

डसीया (अहि)=सर्पदंश
डावी=बाँयी
डोकरी=बुढ़िया
डोहला=दोहद
डोलु=डोलना
डाहला=डालियाँ

त

तक=अवसर
तणी=की
तड़कै–धूप में
तंत=तत्त्व
तड़्की=गर्ज कर
तरफलै=तडफडै, व्याकुल
तलावडी=तलाइ, छोटा सरोवर
तल्पिका=शय्या
तागत=बल
ताग=यज्ञोपवीत
ताणीनइ=तानकर, खींचकर
तिरस=प्यासा, तृषा
तीखी=तीक्ष्ण
तुमचउ=तुम्हारा
तूटै=टूट पडै (आक्रमण)
तूठा=तुष्ट हुए
तेडनइ=बुलाकर
ते तउ=वह तो
तेडावी=बुलाकर
तेवडउ=मानो, निश्चय करो
तेहवउ=वैसा
त्रस=चलते फिरते जीव
त्रसै=फट जाती है
त्राछन्ता=तड़ाछ से
त्रेह=तह, अन्तर में प्रविष्ट होना (पृथ्वी में पानी का)

थ

थकी=से
थया=हुआ
थाटइं=ठाठ से
थानकइं=स्थान में
थापइ=स्थापित करे
थापी=स्थापित की
थाय–होता है
थावर=स्थिर जीव
थांरउ=आपका
थासी=होगा
थिर=स्थिर

थुड़=वृक्ष का तना; धड़
थुणिया=स्तुति की
थुणुं=स्तुति करता हूँ
थेट=ठेठ
थोभ=स्तम्भ

द

दड़ीगो=जबरदस्त
दमिया=दमन किया
दवरक=डोरी
दशऊठण=दसोठन, पुत्र जन्म के १० वें दिन का उत्सव
दहिस्युं=नष्ट करूंगा, जलाऊँगा
दाखवी=दिखाकर
दाखविस्यौ=दिखाओगे
दाभै=दग्ध हो रहा है
दादगलै=मुंह मे पानी आवै
दाव=अवसर
दिवाजइ=प्रकाशित
दिदृक्षायं=देखने की इच्छा से
दिहाड़ला=दिवस
दिसा=दिशि, तरफ
दीकरी=पुत्री
दीठ=देखा, दृष्टि
दीसइ=दिखाई देता है
दीसउ=दीखते हो
दुक्कर=दुष्कर
दुत्तर=दुस्तर
दुहेला=दुखदाई
दूठ=दुष्ट
दूऔ=हटने का आदेश, निकालना, ललकारना
दुहवियौ=दुखित किया
देवा=देने के लिए
देसण=देशना, उपदेश
देशना=उपदेश
देहड़ी=शरीर
देहरा=देवगृह, मन्दिर
दोगंधक=इन्द्र के गुरु स्थानीय देव
दोर=डोरी, रस्सी
दोरड़ो=डोरी
दोहिला=दुर्लभ

ध

धणीयाणी=स्वामिनी, स्त्री
धमियउ=तप्त
धरमीण=धर्मात्मा
धवलड़ौ=सफेद
धसिवा लागी=प्रविष्ट होने लगी
धीणौ=धेनु आदि दुधारु पशु
धीरप=धैर्य
धींगौ=जबरदस्त
धुखइ=सुलगता है
धुरीण=धुरन्धर. प्रधान
धोरी=प्रधान, संचालक, अगुआ
धंध=जंजाल

न

नटी (जावै)=इनकार करें
नडै=नमै
नथी=नहीं
नमिया=नमन किया
नय=जानने का प्रकार, तत्व जानने का साधन
नवि=नहीं
नानड़ी=छोटी
नांखइ=गिराता है
नांखतां=डालते हुए
नाठउ=नष्ट हुआ
नाठौ=भग गया
नाणइ=नही लाता है
नाणुं=द्रव्य
नालइ=नही देता है
नासंतां=भगते हुए
निकाचित=वे कर्म जो भोगे बिना न छूटे
निचंत=निश्‍चित
निचोल=निचोड़
निजुत्ति=निर्युक्ति
निटुल=निष्ठुर
निटोल=निश्‍चित, व्यर्थ
निबद्ध=दृढ़ बंध (कर्म) जो भोगे बिना न छूटे
निरख=दृष्टि
निरूवणा=निरूपण
निरान्ति=निश्‍चिन्त
निलवट=ललाट
निलौ=निलय, घर
निहाली=निहारकर, देखकर
निहेजा=निस्नेही
निक्षेप=वस्तु सिद्ध करने के प्रकार
नीगमियइ=निर्गमन करना
नीठ=कठिनता से
नीम=नियम
नीसरइ=निकले
नीसरणी=सीढ़ी, निसैनी
नीसाण=उंठ पर बजनेवाली नोबत, नगाड़े
नेट=अन्तमें
नेम=नियम, त्याग
नेहलउ=स्नेह, प्रेम
नेड़ौ=निकट

प

पखालतां=प्रक्षालित करते
पखी=पक्ष, तरफ की
पगला=चरण पादुका
पचखाण=प्रत्याख्यान, त्याग
पजर=पिंजड़ा
पटली=तख्ती
पटोलैं=पटकूल
पड़वज=प्रतिबंध

पड़हो=पटह
पड़िवत्ति=प्रतिपत्ति
पड़िलाभ्या=प्रतिलाभ्या, साधुओं को दान दिया
पडूर=प्रचुर
पणयालीस=पैंतालीस
पणि, पिण=भी
पतगत्यौ=प्रतीति प्राप्त
पतियावै=विश्वास दिलावै
पतीजै=विश्वास करै
पंथीडा=पथिक
पन्नता=प्ररूपित, कथित
पयपइ=कहता है
पर्यवा=पर्याय
परइ=जैसी, तरह, भांति
परखियइ=परीक्षा करे
परचावें=बहलाता है
परणी=विवाहिता
परगडउ=प्रगट
परिघल=प्रचुर, बहुत
परिख=लो, परखो
परीयछ=पड़दा
परित्त=असख्य
परूवणा=प्ररूपणा
पलाद=मांसभोजी, राक्षस
पहुतो=पहुँचा
पाउड़ीए=सीढ़िएँ, पगथिए
पाउधारउ=पधारो
पाउले=चरणों में
पाखइ=बिना
पाखती=ओर, निकट
पाच=हीरा, रत्न
पाज=पद्या, सेतु
पाड=एहसान
पांतरै=अन्तर
पांति=पंक्ति, जातपांत
पादपोपगमन=एक विशेष प्रकार का अनशन
पाधरो=सीधा
पानै पड्या=पाले पड़े, धक्के चढ़े
पामीयइ=प्राप्त करें
पामी करी=पाकर
पारेवौ=कबूतर
पारिखो=परीक्षा
पालोकड़=पालतू
पासत्था=शिथिल आचारी
पाहण=पाषाण, पत्थर
पिचरकी=पिचकारी
पीठ=पैठ
पीधी=पान की
पीलण=पीलना
पूठा=पीछा
पूठली=पिछली
पूरउ=पूर्ण

पूरवइ=पूर्व दिशा में, पूर्ति करना
पूरस्यइ=पूर्ण करेगा
पूरेस्यै=पूर्ण करेगा, भरेगा
पेसी=प्रवेश कर
पैसतां=प्रवेश करते
पोइण=पद्मिनी, कमलिनी
पोतानी=अपनी
पोतानउ=अपना
पोपट=शुक
पोरस, पोरस्स=पोरुष, बल, पुरुषार्थ
प्रभावना=ख्याति
प्रयुंजइ=प्रयुक्त करते हैं
प्रहरण=हथियार
प्राहुणा=मेहमान, पाहुने

फ

फरस्या=स्पर्श किया
फलस्यइ=फलेगी
फाटै (मुंह)=खुले मुंह
फाटै (हृदय)=(हृदय) फटता है
फिटक रयण=स्फटिक रत्न
फीटै=नष्ट होते हैं
फूटरा=सुन्दर
फूंमौ=फैल (रूई का)
फेट=फंदा
फेटि=सम्बन्ध
फेड्या=दूर किया
फेरवी=घुमाकर, घुमाई

ब

बकोर=शोर, हल्ला
बटका=टुकड़ा
बणस्यै=बनेगी
बधत=वृद्धि
बहिराव्या=दान दिया, अर्पित किया
बारस=द्वादसी
बांकडी=टेढ़ी
बारणे=द्वार पर
बांची=पढ़कर
बाडी=वाटिका
बाधइ=बढ़ता है
बाधइ=बाधा देना
बाजै=लगना
बाबइयै=पपीहा
बार=द्वार
बांभण=ब्राह्मण
बापडा=विचारे
बिंब=प्रतिमा
बिभाड=विभाजक
बिवणी=दुगुनी
बिहूणा=रहित
बीटाणउ=वेष्टित
बीजा=दूसरा
बीझाय=व्यंजित होना
बीहती=डरती हुई
बूठा=वृष्टि हुई

बूडो=डूब गया
बेउ=दो
बेसो=बैठो
बोलाइ=डूबना
बोहइ=बोध देते हैं
व्रजस्यइ=चलेगा, जायगा, वर्जित होगा

भ

भंजउ=भांगो, भांगते हो, दूर करते हो
भड=भट, योद्धा
भणी=को
भज्यउ=भजन किया
भरड़ाक=तुरन्त
भलाव=संभालना
भलेरी=अच्छी
भवियां=भव्य जीवों का
भमता=भ्रमण करते
भरेज्यो=भरना
भांगा=भेद
भाउ=भाव
भणवा=पढ़ने के लिए
भाणी=सुहाइ
भाणी=पसन्द आइ
भामणि=भामिनी, स्त्री
भारणि=भारी
भामणा=वारणा लेना
भावठ=सकट
भावइ=चाहे, भले ही
भासइ=कहता है
भीडीयउ=दुखित
भुंइ=पृथ्वी
भुंडी=बुरी
भेटा=भिडना, मिलाप
भेव्या=मिला
भोडलो=बुद्धू, भोला
भोलइ=भूलकर
भोलवी=भूलाकर

म

मउज=सुख
मग=मूंग
मच्छर=मात्सर्य
मछराली=जोरावर
मछराला=गुमानी
मटकार=नैत्रों का सौम्य कटाक्ष
मटकउ=बणाव
मण्ड्यउ=छिड़ गया
मंडावै=(मकान) बनवाता है
मल्हार=प्रिय
मलपइ=मस्त, आनन्द करता
महियल=महीतल, पृथ्वी में
माज=इज्जत
माठी=बुरी, निकृष्ट
माठो=बुरा
मांडिस्युं=करूँगा

मांडी=विगतवार
माणुं=भोगूं
माणे=भोगे
माण=मान
माणसां=मनुष्यों को
माण=मान
मातो=मत्त
मानीता=मान्य
माम=अहंकार
माम=सम्मान
मारकी=हिंसक
माल्हुं=मौज करूं
मावै=समावै, अटै
मावीत्र=माता-पिता
मावीत=माता-पिता
माहोमाहि=परस्पर
माहरा=मेरे
मिसि=बहाने
मिश=बहाना
मींचिया=मुंद लिये, बन्द कर लिये
मींट=दृष्टी
मीता=मित्र
मीनति=बीनती, प्रार्थना
मुद्गशैलिक=मगसिलिया पाषाण
(हरे रङ्ग का एक रूखा पत्थर)
मूध=मुग्ध, मूढ़
मुलकै=मुस्कराहट
मुंहड़इ=मुख से
मूओ=मर गया
मूकाय=छोडा जाना
मूकइ=छोड़ता है
मूझाणी=उलझन
मूझि=मुग्ध होकर
मूलिका=उखाड़ने वाली
मेटि=मिटाओ
मेनिक=मछुवा
मेलिस्यइ=लगावेगा
मेलूं=छोडूं
मेल्हि=छोडो
मेहडा=मेघ
मोटिम=महत्ता
मौड=मुकुट
मोनइ=मुझे
मोरा=मेरा
मोरियउ=मुकुलित हुआ
मोसा=ताना
मोहणी=मोहिनी
मोहनगारउ=मोहित करनेवाला

य

यानी (जानी)=ज्ञानी
युगतइ=युक्ति पूर्वक

र

रगरेल=हर्ष
रङ्गाणी=रङ्गी हुई

रज्जु=रस्सी
रन्न=अरण्य
रमिया=रमण किया
रयण=रत्न
रयणा=रचना
रलियामणा=सुन्दर
रलियालउ=सुन्दर
राखउ=रक्षा करो
राखेवा=रखने के लिए
राची=रंजित होकर
राढू=मोटीडोर, रंढू
रातौ=रक्त, रचा हुवा
रामति=खेल
रास=राशि, समूह
रीझवइ=रिझाते हैं, रंजन करते हैं
रीव=चिल्लाहट
रीस=रोष
रू=रूई
रूंखड़ा=वृक्ष
रूठा=रुष्ट हुए
रूडा=अच्छा
रूवडी=अच्छी
रूहिर=रुधिर, रक्त
रेलि=प्रवाह
रेह=रेखा
रोवराविया=रुला दिया

ल

लगइ=पर्यन्त
लटकउ=चाल
लंछन=चिह्न
ललना=लाल, लालन
लच्छि=लक्ष्मी
लबधि=लब्धि, २८ प्रकार तपस्या से प्राप्त आत्म-शक्ति
लपटाणा=लुब्ध
लखाय=लक्षित होना
लसाय=लिप्त
लवन=छेदन, काटना
लगार=लेश
ललि-ललि=नमन कर
लाग=अवसर
लांघे=उल्लंघन करे
लाछि=लक्ष्मी
लाड=प्यार
लाडिली=प्रिय, प्यारी
लाधी=मिली
लांबौ=दीर्घ
लार=साथ, पीछे
ल्यावइ=लाता है
लाव=लेना
लाहइ=लाभ
लाहउ=लाभ
लीणो=लीन हुई

लीधउ=लियां
लूखो=रूखा
लूवरि=लू
लेखवइ=गिनती
लेखइ=हिसाब से
लेवा=लेने के लिए
लोयण=लोचन, नेत्र

व

वइ=अवस्था, वय
वईयर=स्त्री
वउलावतां=भेजते, लौटते
वखाण=व्याख्यान
वछ=वत्स
वज्जण=बजने के
वडम=महती
वन=वर्ण
वमिया=वमन किया
वयण=वचन
वरसाला=बरसने वाला
वलू=बलवान
वलि=फिर
वल्या=लौटा
व्यवहारी=व्यापारी
वसीला=निवासी
वहियइ=वहन किया
वहिला=शीघ्र
वाइ=वायु करना
वाच=वचन
वाचना=वाक्य, परम्परा, वांचन
वाची=पढ़ कर
वाधइ=बढ़ता है
वाटला=कटोरा, वाटका
वाणोत्तर=वाणिज्य करने वाला, गुमास्ता
वातडी=वार्ता
वारू=सुन्दर
वारेवौ=वारण करना
वालंभ=वल्लभ
वाल्हा=वल्लभ
वालेसर=वल्लभ, प्रियतम
वावत=बजाते हैं
वावरै=व्यय करता है
वासना=गंध
वांस=पीछे
वाहला=जल प्रवाह
विगताली=पिछली
विगोवइ=नष्ट करता है
विचरइ=विचरण करता है
विछूटो=वियोग (जीव विछूटो मरना)
विज्जल=बिजली
वींद=वर
वींदणी=वधू
विमासण=विमर्श

विषहर=विषधर, सांप
विहरमान=विचरते हुए
विचरता=विचरते हुवे
विकुरवी=वैक्रिय लब्धि से उत्पन्न कर के
विरूओ=विरूप, विद्रूप
विरचइ=विरक्त होना
विरहण=विरहिनी
विलुधो=विलुब्ध
विहडै=विघटित होना
विह=प्रकार
वेभुं=छिद्र
वेगलऊ=दूर
वेढ=युद्ध
वेलू=बालूका
वेधाले=वेधक
वेगला=दूर
वोली=बीती

स

सइमुख=सम्मुख
सइण=सज्जन
सइन=स्वयं, साथ, सज्जन
सइहथ=अपने हाथ से
सकज=काम का
संगहणी=संक्षिप्तसार
सगला=सभी
संकलि=जंजीर
संकलिया=संकलित हुए
सगवट=रूपक
संघातइ=साथ में
संघाते=साथ मे
सर्दहै=श्रद्धा करता है
संपै=संपजै, सम्प्राप्त हो
सभावइ=स्वभाव से
समवड=समान, समकक्ष
समुद्देशा=अध्याय का एक भाग
समवाय=समूह
समय=सिद्धान्त
समास=प्रकरण
समकित=सम्यक्त्व
समाणी=समान, समाविष्ट होना
समियउ=शान्त हुआ
समूर्छिम=स्वतः उत्पन्न जन्तु
स्युं=क्या
सरजित=कर्म, भाग्य
सरिस्यइ=सरेगा, सिद्ध होगा
सरिखा=समान
सलहै=सराहना
सलेहण=संलेखना
सलहेस=सराहना
सलूणा=सलोने, सुन्दर
सवार=सवेरा
संसत्तउ=शिथिलाचारी
संसरण=संसार, सांसारिक

सशिहर=चन्द्र
ससनूर=विशेष सुन्दर
सहगुरू=सद्गुरु
सहीयर=सखि
सहिनाणी=चिन्ह, लक्षण
सहेजा=प्रीतिवाले
साकर=मिश्री
साँक=शंका
सागी=सगा
साचवै=रक्षा करता है
साधइ=सिद्ध करता है
सांभलो=ध्यानपूर्वक सुनो
सांभरिया=स्मरण किया
सामेलो=स्वागत
साहमी=स्वधर्मी
साम्हो=सामने
सामुही=समक्ष
सायक=बाण
सायर=सागर
साल=सल्य
सारेवौ=सुधारना
सारै=भरोसे
सालै=खटकै
साव=सर्व, बिलकुल
सासय=शास्वत
शासता=शास्वत
साह=साधन करना
साही=पकड़कर
सिलोक=श्लोक
सिझाय=स्वाध्याय
सिझातर=शय्यातर (साधु जिसके घर ठहरे हो वह व्यक्ति
सीझइ=सिद्ध हो
सीझसी=सिद्ध होगा
सुइवो=शयन करना
सुकलीणो=कुलीन
सुकियारथउ=सुकृतार्थ
सुजगीस=अच्छी
सुजान=सुज्ञानी
सूतार=सूत्रधार, मिस्त्री
सूँघा=सुगन्धित
सुयक्खंध=श्रुतस्कंध
सूंस=त्याग
सुहडां=सुभटों में
सुहणा=सपना
सूअटो=शुक
सूकइ=सूखता है
सूंपीया=सौंपें
सुविहित=सुव्यवस्थित
सुहंकर=शुभंकर
सुहामणी=सुहावनी
सूल=अच्छी तरह
सेषइकाल=चातुर्मास के अतिरिक्त का समय

सेजडी=शय्या
सेजवाला=वाहन विशेष
सेभै=शय्या में
सेलडी=ईख
सेहरो=शेखर, मुकुट
सोगी=शोकीले, दुःखी
सोढो=वर, साथी, नायक
(राजपूतों की एक जाति)
सोरंभ=सौरभ, सुगन्ध
सोवन=स्वर्ण
सोस=सोच
सोहग=सौभाग्य
सोहन=शोभन
सोह=शोभा

ह

हलवेहलुवे=धीरे-धीरे
हंसलउ=हंस
हाथ मुकावण=हथलेवा छुड़ाना
हाथ मेलावे=हस्त मेलापक
हाम=स्वीकृति, हैंकारा
हिलोल्यउ=आन्दोलित
हिंडोलणा=हिडोला, झूला
हितूयउ=हितैषी
हिव=अब
हिवणा=अब
हीणउ=हीन
हीणों=रहीत
हींचिता=झूलते हुए
हीर=हीरा
हीयडा=हृदय
हीसंत=हर्षित होता है
हूंस=उमंग
हुतउ, हतउ=था
हेज=प्रेम, स्नेह
हेजालू=प्रेमी
हेठ=नीची
हेलइ=सहज